वैश्विक संवाद

11.3

अनेक भाषाओं में एक वर्ष में 3 अंक

समाजशास्त्र पर बातचीत नेन्सी फ्रेजर के साथ — आर्मिन थर्नहर

सैद्धांतिक दृष्टिकोण — माइकल फाइन, जी. गुंटर वॉस

काम और श्रम — राफिया काजिम, क्रिस टिल्ली, ब्रिगिट औलेनबैकर, अरंका वैनेसा बेनज़ा, हेल्मा लुत्ज, वेरोनिका प्रीलर, कैरिन श्विटर, जेनिफर स्टेनर, रूथ कास्टेल–ब्रैंको, साराह कुक, हन्ना डावसन, एडवर्ड वेबस्टर, सैंडिसवा मापुकाटा, शफी वेराचिया, केले हॉवसन, पैट्रिक फ्यूरस्टीन, फंडा उस्टेक–स्पिल्डा, एलेसियो बर्टोलिनी, हेंना जोह्नस्टन और मार्क ग्रैहम

एन्थ्रोपोसीन: महत्वपूर्ण मुठभेड़ें — एरियल सल्लेह, शोको योनेयामा, गैया गिउलिआनी, उलरिच ब्रांड, मार्कस विसेन, जेसन डब्ल्यू मूर

माघरेब से समाजशास्त्र — मुनीर सैदानी, मोहम्मद एल्टोबुली, हसन रेमाउन

खुला अनुभाग

> कोविड प्रत्युत्तर में असमानताओं को संबोधित करना
> कुह्न के दर्शन के भीतर इब्न खलदुन का प्रतिमान
> ब्राजील में सामाजिक कल्पना और विधि का समाजशास्त्र

GD अंक 11 / क्रमांक 3 / दिसम्बर 2021
https://globaldialogue.isa-sociology.org/

पत्रिका

International Sociological Association

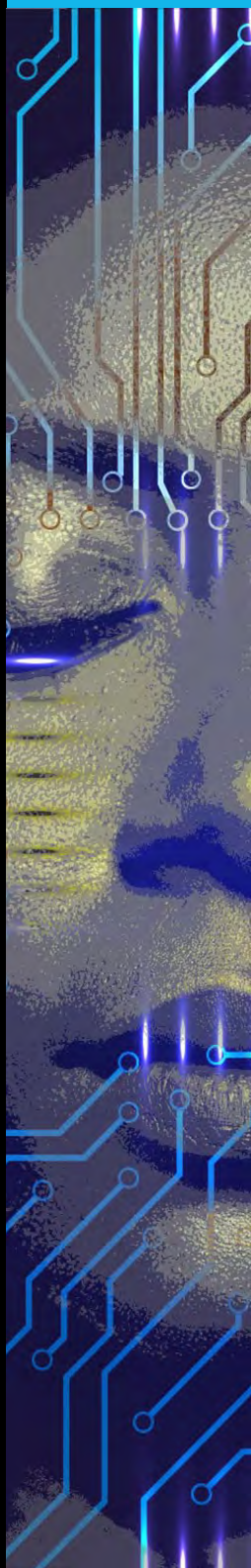

> सम्पादकीय

जलवायु परिवर्तन एवं पारिस्थितिकीय तबाही, अनिश्चित कार्य, खराब कार्य परिस्थितियाँ और निर्धनता, दुनिया भर में आर्थिक एवं सामाजिक असमानताएं – ये हमारे समय के कुछ महत्वपूर्ण मुद्दें हैं। समाजशास्त्रीय विमर्शों में हमें, आधुनिकता एवं पूंजीवाद और प्रगति एवं वृद्धि के विचार और आर्थिक व्यवस्था पारिस्थितकीय एवं सामाजिक पुनरुत्पादन को कैसे जोखिम में डाल सकते हैं, पर दूरगामी चिंतन मिलते हैं। वैश्विक संवाद का यह अंक कार्य और श्रम के साथ साथ दुनिया के विभिन्न कोनों में रहने के तरीकों के सम्बन्ध में मानव–प्रकृति संबंधों और आर्थिक सिद्धांतों की प्रमुख अवधारणाओं के कारण उत्पन्न समस्याओं के विश्लेषण पर ध्यान केंद्रित करता है। कुछ आलेख क्लासिक्स तक जाते हैं, अन्य नए आयामों की भावी प्रासंगिकता का विश्लेषण करना चाहते हैं और अन्य समकालीन घटनाक्रमों के महत्वपूर्ण निदान पर चिंतन करते हैं।

यह अंक प्रमुख ऑस्टियाई पत्रकार अर्मिन थर्नहर द्वारा सुविख्यात यू एस – अमेरिकी दार्शनिक एवं विवेचानत्मक सिद्धांतकार नैन्सी फरेजर के साक्षात्कार से प्रारम्भ होता है। वे अपने वामपंथी जीवन अनुभवों पर चिंतन करती हैं, समकालीन पूंजीवाद पर अपने विश्लेषण को प्रस्तुत करती हैं और दिखाती है कि महामारी को एक ऐसी अर्थव्यवस्था के प्रभाव के रूप में देखना चाहिए जो जीवन की सामाजिक और पारिस्थितिक नींव का क्षरण और नाश करती है।

सैद्धांतिक खंड में, माइकल फाइन देखभाल और देखभाल कार्य के चल रहे बाजारीकरण और शासन के सम्बंधित रूपों का अपर्याप्त देखभाल प्रावधानों और कार्य की खराब परिस्थितियों के सन्दर्भ में प्रभावों का विश्लेषण करते हैं। महामारी और विशेष रूप से देखभाल गृहों में सम्बंधित मौतें ऐसे बाजार समाज की विनाशकारी प्रवृतियों को दर्शाती हैं। जी गुन्थर वॉस दर्शनशास्त्र, राजनीति विज्ञान एवं समाज विज्ञानों के क्लासिक्स और आधुनिक क्लासिक्स से संज्ञान लेते हुए कार्य और श्रम पर एक परिचर्चा को प्रस्तुत करते हैं। इसके आलावा उनका आलेख भुगतान एवं अवैतनिक कार्य एवं श्रम की जटिल परस्पर क्रिया और सामाजिक जीवन के लिए उनके महत्व पर रोशनी डालता है।

प्रथम संगोष्ठी सैद्धांतिक विचारों एवं आनुभविक निष्कर्षों को जोड़ कर कार्य एवं श्रम पर इस चिंतन को जारी रखती है। यह हमें दुनिया भर में यात्रा करने के लिए आमंत्रित करती है, कार्य के विभिन्न रूपों की जाँच करती है और सम्बंधित कार्यशील परिस्थितियों का विश्लेषण करती हैं। राफिआ काजिम दर्शाती हैं कि महामारी भारत में प्रवासी श्रमिकों को कैसे प्रभावित करती है जबकि क्रिस टिल्ली अनिश्चित एवं अनौपचारिक कार्य की वैश्विक प्रघटना पर चिंतन करते हैं। ऑस्ट्रिया, जर्मनी एवं स्विट्जरलैंड से एक तुलनात्मक अध्ययन (लिव–इन) रहवासी देखभाल प्रावधानों के विभिन्न स्वरूपों का वर्णन प्रस्तुत करता है। दक्षिण अफ्रीका और यू के से विद्वान डिजिटल कार्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वे अल्गोरिथम के प्रकार्य और प्रभाव की, वैश्विक दक्षिण में प्लेटफार्म कार्य की सार्थकता और भावी परिपेक्ष्य के साथ साथ ऑनलाइन गिग अर्थव्यवस्था और तथाकथित "क्लाउड श्रमिक" की सुरक्षा पर चर्चा करते हैं।

द्वितीय संगोष्ठी अन्थ्रोपोसीन संबोध के इर्द गिर्द एवं विवेचानत्मक बहस में संलग्न होती है। जहाँ योगदानकर्ताओं में से कुछ इस पर अपने दृष्टिकोण को अद्यतन करते हैं, अन्य इस शब्द के अधिक आलोचनात्मक परीक्षण का प्रस्ताव देते हैं। सभी आलेख मानवों और (गैर–मानवों) प्रकृति के मध्य पदानुक्रमित संबंधों पर विवेचनात्मक चिंतन को पेश करते हैं और वर्तमान समाजशास्त्री बहस में विषयों की एक व्यापक श्रंखला पर चर्चा करते हैं। एरियल सालेह प्रकृति की आधुनिक अवधारणा और प्रभुत्व के पूंजीवादी और पितृसत्तात्मक रूपों की आलोचना करती है और उनका सामना सामाजिक आंदोलनों के पारिस्थितिक–समाजवादी, पारिस्थितिक–नारीवादी विचारों से कराती है। शोध के विभिन्न धाराओं से आने वाले शोको योनेयामा और गईया गियुलानी अन्थ्रोपोसीन के समकालीन निदान पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वे उसकी सीमायें दिखते हैं और मानव–प्रकृति संबंधों को पुनर्परिभाषित करने वाले विभिन्न उपागमों की क्षमता पर चर्चा करते हैं। उलरिच ब्रांड एवं मार्कस विसेन इस बात की जांच करते हैं कि "शाही जीवन शैली" और श्रम एवं प्रकृति के शोषण के समकक्ष तरीके कैसे सर्वोच्च बन सकते हैं। इसी तरह के दृष्टिकोण से आते हुए, जैसन डब्ल्यू मूर का योगदान अन्थ्रोपोसीन अवधारणा को वैचारिक रूप से खारिज करता है और इसके बजाय कैपिटलोसीन के एक ऐतिहासिक विश्लेषण का प्रस्ताव रखता है।

समाजशास्त्र के विकास के बारे में अंतर्दृष्टि भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। मौनीर सैदानी ने मघरेब में समाजशास्त्रियों से आलेख आमंत्रित किये। अल्जीरिया, तुनिशिया और लीबिया से दृष्टिकोणों को एक साथ लाते हुए, वे इस क्षेत्र के वैज्ञानिक समुदाय, शोध और शिक्षण के क्षेत्र में पेशेवर और (गैर) जन समाजशास्त्र पर चर्चा करते हैं।

अंतिम लेकिन कमतर नहीं, 'खुला अनुभाग' जाम्बिया में महामारी के समक्ष जमीनी स्तर की गतिविधियों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें इब्न खल्दून के नए विज्ञान के प्रतिमान पर चर्चा और ब्राजीलियाई कानून के समाजशास्त्र के सन्दर्भ की कल्पनाशीलता की अवधारणा पर चिंता करते हैं। ■

ब्रिजित ऑलनबैकर और **क्लॉस डोरे**
वैश्विक संवाद के संपादक

> वैश्विक संवाद जी.डी. वेबसाइट पर अनेक भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियाँ <globaldialogue.isa@gmail.com> पर भेजी जा सकती हैं।

International Sociological Association

GLOBAL DIALOGUE

> संपादक मण्डल

संपादक : ब्रिजिट ऑलनबॉकर, क्लॉस डोरे

सह–सम्पादक : जोहाना ग्रबनर, वालिद इब्राहिम

सहयोगी सम्पादक : अर्पणा सुन्दर

प्रबंधन संपादक : लोला बुसुतिल, अगस्त बागा

सलाहकार : माइकल बुरावे

मीडिया सलाहकार : जुआन लेजाररगा

परामर्श संपादक :
साडी हनाफी, ज्योफी प्लीयर्स, फिलोमिन गुतिरेज, एलोइजा मार्टिन, सावाको शिराहेस, इजाबेला बरलिंस्का, तोबा बेन्सकी, चिह–जुए जेचेन, जेन फ्रित्ज, कोइची हासेगावा, हिरोशी इशिदा, ग्रेस खुनो, एलिसन लोकोन्तो, सुसन मेकडेनियल, एलिना ओइनास, लोरा ओसो कैसास, बंडाना पुर्कायस्था, रोह्डा रेडॉक, मौनीर सैदानी, आयसे सकतांबर, सेली स्कालोन, नाजानीन शाहरोकनी।

क्षेत्रीय संपादक

अरब दुनिया : *(ट्यूनिशिया)* मौनीर सैदानी, फातिमा रधौनी, हबीब हज सलेम; *(अल्जीरिया)* सोराया मौलोदजी गराउदजी; *(मोरक्को)* अब्देलहादी एल हालहोली; *(लेबनान)* साड़ी हनाफी।

अर्जेन्टीना : मैगडालेना लेमस, जुआन परसिआ, मार्टिन उर्टुसन।

बांग्लादेश: हबीबुल खोंड़कर, खैरुल चौधरी, मोहम्मद जसीम उद्दीन, बिजॉय कृष्णा बनिक, सेबक कुमार साहा, सबीना शर्मीन, अब्दुर रशीद, एम. ओमर फारुक, मोहम्मद जहीरुल इस्लाम, सरकर सोहेल राणा, शाहिदुल इस्लाम, ए.बी. एम. नजमुस साकिब, ईशरत जहान ऑयमून, हेलल उद्दीन, मसुदुर रहमान, सैका परवीन, यास्मीन सुल्ताना, रुमा परवीन, एकरामुल कबीर राणा, शर्मिन अख्तर शप्ला, मोहम्मद शाहीन अख्तर।

ब्राजील : गुस्तावो तानिगुती, एंजेलो मार्टिन्स जूनियर, एंड्रेजा गली, दिमित्रि सर्बोन्सीनी फर्नांडीस, गुस्तावो दिअस, जोसे गुइराडो नेटो, जेसिका मज़िजनी मेंडिस।

फ्राँस/स्पेन : लोला बुसुतिल

भारत : रश्मि जैन, मनीश यादव, राकेश राणा, संदीप मील।

इंडोनेशिया : कमांतो सुनार्तो, हरि नुग्रोहो, लूसिया रतीह कुसुमादेवी, फिना इट्रियती, इंदेरा रत्ना इरावती पट्टिनसारानी, बेनेडिक्टस हरि जूलियावान, मोहम्मद शोहीबुद्दीन, डोमिंगगस एलसीड ली, एंटोनियस एरियो सेतो हार्डजाना, डायना तेरेसा पाकासी, नुरूल ऐनी, गेगेर रियांतो, आदित्य प्रदान सेतियादी।

ईरान : रेयहाने जावदी, नियाश डॉलाती, अब्बास शाहरबी, सैयद मोहम्मद मुतालेबी।

कजाकस्तान : अइगुल जाबिरोवा, बायन स्मागमबेट, आदिल रोदियोनोव, अल्माश त्लेसपयेवा, कुआनिश टेल, अलमागुल मुस्सीना, अकनूर ईमानकुल, मदियार एल्दियारोव।

रोमानिया : रलुका पॉपेस्कू, राइसा–गेब्रियला जमीफिरेस्कू, युलिआन गेबर, मोनिका जोर्जेस्क्यू, इयाना इयानुस, बियांका मिहायला।

रूस : ऐलेना ज्द्रावोम्यस्लोवा, अनास्तासिया दौर, डारिया खोलोडोवा।

ताईवान : वान–जू ली, ताओ–युंग लु, त्सुंग–जेन हंग, यू–चिआ चेन, यू–वेन लिओ, पो–शुंग होन्ग, केर्क जी हाओ, यि–शाओ होंग, चुंग–वेही–होंग।

तुर्की : गुल कोरबासियोग्लू, इरमक एवरेन।

*आर्मिन थर्नहर द्वारा साक्षात्कार में, **नैन्सी फ्रेजर** वामपंथ के अपने अनुभव को दर्शाती है वे समकालीन पूंजीवाद के अपने विश्लेषण को साझा करती है और बताती है कि महामारी एक अर्थव्यवस्था का प्रभाव क्यों है जो जीवन की सामाजिक और पारिस्थितिक नींव को नष्ट और उसका क्षरण करती है।*

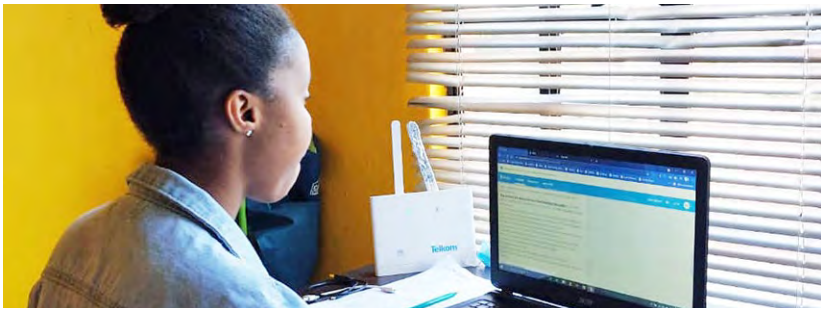

*सैद्धांतिक विचारों और आनुभविक निष्कर्षों को मिलते हुए, यह संगोष्ठी विश्व में **कार्य एवं श्रम** के भिन्न स्वरूपों का विश्लेषण करती हैं।*

*सैद्धांतिक अग्रदूतों के साथ जुड़कर और इसे बहुत अलग दृष्टिकोणों से एक महत्वपूर्ण परीक्षण कर **एंथ्रोपोसीन** की बहुत चर्चित अवधारणा पर बहस की गई है।*

GD

सेज प्रकाशन की उदार ग्रांट से
वैश्विक संवाद का प्रकाशन संभव है।

> इस अंक में

सम्पादकीय 2

> समाजशास्त्र पर बातचीत

पूंजीवादी अतार्किकता के तूफान के रूप में महामारी : नेन्सी फ्रेजर के साथ साक्षात्कार
आर्मिन थर्नहर आस्ट्रिया द्वारा 5

> सैद्धांतिक दृष्टिकोण

महामारी के बीच देखभाल गृह मौतें
माइकल फाइन, ऑस्ट्रेलिया द्वारा 9

कार्य के एक समकालीन सैद्धांतिकरण की ओर
जी. गुंटर वॉस, जर्मनी द्वारा 12

> काम और श्रम

कोविड–19 और भारत के प्रवासी श्रमिक
राफिया काजिम, भारत द्वारा 16

वैश्विक सन्दर्भ में अनौपचारिक एवं अनिश्चित काम
क्रिस टिल्ली, यूएसए द्वारा 18

ऑस्ट्रिया, जर्मनी और स्विट्जरलैंड में विवादास्पद देखभाल
ब्रिगिट औलेनबेकर और वेरोनिका प्रीलर, ऑस्ट्रिया; अरंका वैनेसा बेनज़ा और हेल्मा लुत्ज, जर्मनी; कैरिन श्विटर और जेनिफर स्टेनर, स्विट्जरलैंड द्वारा 20

डिजिटल युग में काम का भविष्य
रूथ कास्टेल–ब्रैंको, साराह कुक, हन्ना डावसन और एडवर्ड वेबस्टर, दक्षिण अफ्रीका द्वारा 22

डिकोडिंग एल्गोरिथम नियंत्रण
सैंडिसवा मापुकाटा; शफी वेराचिया और एडवर्ड वेबस्टर, दक्षिण अफ्रीका द्वारा 24

ऑनलाइन श्रम प्लेटफॉर्म्स : बिना जवाबदेही के शक्ति
केले हॉवसन, फंडा उस्टेक–स्पिल्डा, एलेसियो बर्टोलिनी, मार्क ग्रैहम, यूके; पैट्रिक फ्यूरस्टीन; जर्मनी, हेंना जोह्नस्टन, यूएसए द्वारा 26

> एन्थ्रोपोसीन: महत्वपूर्ण मुठभेड़ें

श्रम और ज्ञानमीमांसा के रूप में स्वामित्व
एरियल सल्लेह, दक्षिण अफ्रीका द्वारा 28

मियाजाकी एनीमे : एंथ्रोपोसिन के लिए जीवात्मवाद
शोको योनेयामा, ऑस्ट्रेलिया द्वारा 30

एंथ्रोपोसीन और उसके असंतोष
गैया गिउलिआनी, पुर्तगाल द्वारा 32

जीवन का साम्राज्यवादी तरीका और पूंजीवादी आधिपत्य
उलरिच ब्रांड और मार्कस विसेन, जर्मनी द्वारा 34

एंथ्रोपोसिन का अविचार : कैपिटलोसिन युग में मानव और प्रकृति
जेसन डब्ल्यू मूर, यूएसए द्वारा 36

> माघरेब से समाजशास्त्र

माघरेब में समाजशास्त्र : इतिहास और परिप्रेक्ष्य
मुनीर सैदानी, ट्यूनीशिया द्वारा 38

लीबिया में समाजशास्त्र
मोहम्मद एल्टोबुली, लीबिया द्वारा 39

अल्जीरिया में समाजशास्त्र : शिक्षण, उपयोग और स्थिति
हसन रेमाउन, अल्जीरिया द्वारा 41

ट्यूनीशियाई समाजशास्त्र : एक तिगुने संकट का सामना करते हुए
मुनीर सैदानी, ट्यूनीशिया द्वारा 43

> खुला अनुभाग

कोविड प्रत्युत्तर में असमानताओं को संबोधित करना
विल्मा एस. नचिटो, जाम्बिया द्वारा 45

कुह्ल के दर्शन के भीतर इब्न खलदुन का प्रतिमान
महमूद धौदी, ट्यूनीशिया द्वारा 47

ब्राजील में सामाजिक कल्पना और विधि का समाजशास्त्र
फ्रांसिस्को बीड, ब्राजील द्वारा 49

"देखभाल, स्व-देखभाल और पृथ्वी की देखभाल के त्रय से ही मानव एवं गैर-मानव जीवन के प्रति मानवीय जिम्मेदारी एक राजनैतिक मूल्य बन जाती है।"

गैया गिउलिआनी

> पूंजीवादी अतार्किकता के तूफान के रूप में महामारी

नेन्सी फ्रेजर के साथ साक्षात्कार

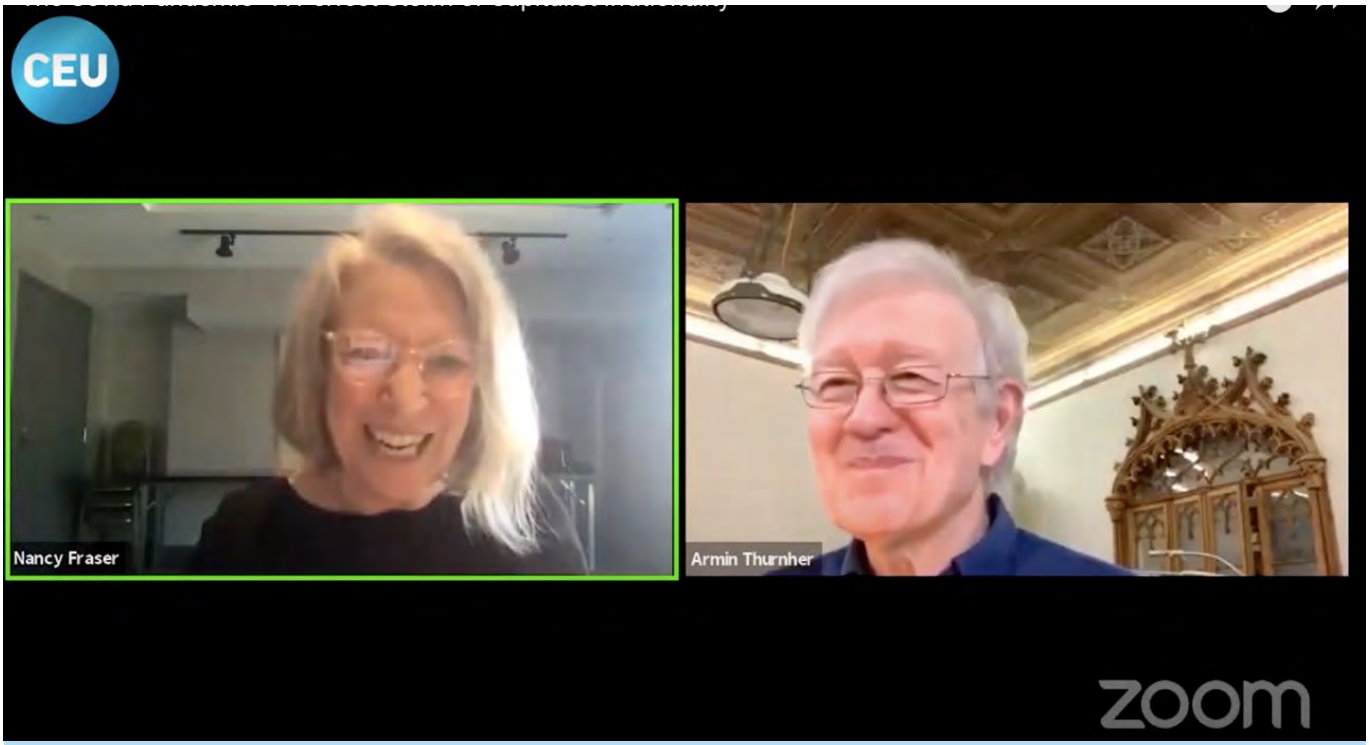

2021 में उनकी कार्ल पोलानयी विजिटिंग प्रोफेसरशिप के सन्दर्भ में जूम पर नैंसी फ्रेजर का अर्मिन थर्नहेर द्वारा साक्षात्कार

मई 2021 में, विख्यात दार्शनिक, आलोचनात्मक सिद्धांतकार **नेन्सी फ्रेजर** और न्यू स्कूल फॉर सोशल रिसर्च में राजनीति और समाज विज्ञान के प्रोफसर हेनरी ए और लुइस लोएब महत्वपूर्ण आस्ट्रिाई साप्ताहिकी फाल्तेर के संस्थापक और प्रकाशक **आर्मिन थर्नहर** से एक सार्वजनिक साक्षात्कार के लिए मिले। वियना शहर द्वारा प्रथम कार्ल पोलानयी विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में आमंत्रित, द सेन्ट्र यूरोपियन यूनिवर्सिटी, द यूनिवर्सिटी ऑफ वियना, द वियेना यूनिवर्सिटी ऑफ इकोनॉमिक्स के रूप में नेन्सी फ्रेजर और एक राजनैतिक पत्रकार के रूप में आर्मिन थर्नहर ने हमारे समय के महत्वपूर्ण मुद्दों पर बात की। वैश्विक संवाद को दिया गया यह साक्षात्कार नेन्सी फ्रेजर के वाम पंथ पर जैविक अनुभव और पूंजीवाद एवं महामारी के उनके विश्लेषण को प्रस्तुत करता है।

एटी: नेन्सी फ्रेजर, एक अमरीकी राजनैतिक दार्शनिक कैसे एक समाजवादी बन जाता है ? जाहिर है, आप ''68–जनरेशन'' की सदस्य हैं लेकिन उस पीढी के कम लोग समाजवादी बने। यह कैसे हुआ ?

एनएफ: मैं बाल्टीमोर, मेरीलैंड में उस समय में बड़ी हुई जब वह कानून द्वारा नस्लीय रूप से विभाजित एक जिम को शहर था। एक बच्ची के रूप में, वह व्यवस्था मुझे सामान्य लगती थी, तब भी जब चीजें खराब थीं और मुझे महसूस होता था कि कुछ गड़बड़ है। लेकिन नागरिक अधिकार आंदोलन के उदय, वर्णभेद को दूर करने के संघर्ष ने अचानक मुझे अपने बचपन और पारिवारिक स्थिति की पुनर्व्याख्या करने के लिए प्रेरित किया। मेरे माता–पिता फ्रेकलिन रूजवेल्ट समर्थक उदारवादी थे, फिर भी मुझे महसूस हुआ कि उनकी कथनी और करनी में अंतर था। मैंने अपने सम्पूर्ण विद्रोही किशोर क्रोध को राजनैतिक क्षेत्र में प्रसारित किया– पहले नागरिक अधिकार आंदोलन में, फिर वियतनाम युद्व विरोधी संघर्ष में और वहां से, अपनी पीढी के मानक पथ का अनुसरण करते हुए एसडीएस

> >

(स्टूडेन्टस फॉर ए डेमोकेट्रिक सोसाइटी), नारीवादी इत्यादि में।

मैं समाजवादी कैसे बनी के बारे में मैं आपको एक छोटा सा किस्सा बताती हूँ। मैं वियतनाम युद्व विरोधी आंदोलन के मसौदे को तैयार करने में काफी अधिक सम्मिलित थी। हमने युवा अमरीकी पुरूषों को अपने ड्राफ्ट कार्ड को जलाने और सेना में भर्ती होने से मना करने के लिए प्रोत्साहित किया। इस अत्यधिक उग्र वातावरण में, मैं वियतनाम में युद्व के प्रतिरोध में स्वयं को जिंदा जलाने वाले बौद्व भिक्षुओं की रिपोर्ट से आसक्त हो गई। सिर्फ यह बताने के लिए कि वह समय कितना उन्मादी था, मैं एक युवा कॉलेज छात्रा थी और मैं अपने आप से यह कहती हुई घूम रही थी : यदि तुम वाकई/वास्तव में युद्व के खिलाफ हो, तो खुद को न जलाने के औचित्य को कैसे सही कह सकती हो ? सौभाग्य से, मुझे कुछ ट्रांटस्कीवादी मिल गये और उन्होंने कहा, देखो, एक और तरीका है *(हंसते हुए)*। इस तरह मैं समाजवादी बनी और मैं एसडीएस की समाजवादी शाखा से जुड़ गई।

बाद में, मैंने पाया कि मेरा मूल विचार कि कुछ ही वर्षों में अमेरीका में समाजवादी क्रांति हो सकती है, एक भ्रम था। लेकिन नव–वामपंथ के मूल्य और भावना तब से मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण रहे हैं। मेरा बुनियादी नैतिक अंर्तज्ञान और राजनैतिक प्रतिबद्वताएं वास्तव में बदली नहीं हैं। मुझे आशा है कि मैं और अधिक सुविज्ञ हो गई हूँ और मुझे लगता है कि उन अंर्तज्ञानों और दृष्टिकोणों को विकसित करने के अर्थ के बारे में मुझे काफी अधिक जानकारी है। लेकिन '68 मेरे लिए अहम बना रहता है।

एटीः आपके महत्वपूर्ण शिक्षक और अकादमिक प्रभाव क्या थे ?

एनएफः मैंने पहले ब्रायन मावर कॉलेज में अध्ययन किया, जो एक कुलीन महिला कॉलेज है और मैं वहां शास्त्रीय, ग्रीक एवं लेटिन पढने गई थी। महान कवि और द *इलियद* के अनुवादक रिचमंड लेटिमोर मेरे शिक्षक थे और मैं विशिष्ट रूप से उन्हीं से पढने के लिए वहां गई थी। फिर शीघ्र ही मैं दर्शनशास्त्र की तरफ मुड़ी जिसने मुझे भाषाई ज्ञान का उपयोग करते हुए भी मोहित किया। लेकिन जैसे–जैसे साठ का दशक आगे बढा, मुझे लगने लगा कि जो शास्त्रीय शिक्षा मुझे मिल रही थी वह इस समय के अनुकूल नहीं थी। मेरा कार्यकर्त्ता स्वयं/मैंने इन दो जुनुनों से काफी संघर्ष किया : एक राजनैतिक और एवं बौद्विक/एक महत्वपूर्ण शिक्षक, जिन्होंने मुझे इन दोनों के साथ कैसे न्याय करना है सिखाया और जो अब न्यू स्कूल में मेरे सहकर्मी हैं, रिचर्ड बर्नस्टीन थे। उन्होंने मेरा फ्रेंकफर्ट स्कूल से परिचय कराया। इस परंपरा से जो पहली पुस्तक मैंने पढ़ी, वह है हर्बर्ट मार्क्यूस की *वन डायमेंशनल मैन*, जिसने एक ऐसे समाज में रहने की मेरी भावना को पकड़ लिया जिसमें दुनिया को समझने के पारंपरिक रूपक स्पष्टीकरण की बजाय अधिक रहस्मयी थे।

एटीः कार्ल पोलानयी आपकी जीवनी में कैसे आये ? आपको क्या वे एक इतिहासकार के रूप में रुचिकर लगे या शायद हायेक (जिनकी विचारधारा इतनी प्रभावशाली हो गई है, यद्यपि अधिकांश लोग यह भी नहीं जानते कि वह अस्तित्व में है) के समकक्ष के रूप में वे अधिक रूचिकर लगे।

एनएफः पोलानयी के साथ मेंरी प्रारम्भिक मुलाकात ब्रायन मावर में मेरे छात्र जीवन में हुई। मैंने वहां राजनीति विज्ञान के पाठयक्रम के लिए द *ग्रेट टास्फोमेशन* को पढा। लेकिन उस समय, उनका मेरे पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा, क्योंकि तब तक मैं मार्क्स पर ध्यान केन्द्रित कर रही थी और मुझे ऐसा लगता था कि पोलनयी उनकी तुलना में फीके थे। कई वर्षों पश्चात जब मैंने पोलानयी को दुबारा पढा तब मुझे एहसास हुआ कि वे कितने अद्भुत विचारक है, और उनकी पुस्तक कितनी मूल्यवान है। तब मैंने उन्हें पढ़ाना शुरू किया। उन्हें पुनः पढने और अब पढाने की प्रक्रिया में, उन्होंने मुझ पर बहुत अधिक प्रभाव डाला। और मैं अपनी विश्वदृष्टि को ''दो कार्लस'', मार्क्स एवं पोलानयी के इर्द गिर्द घूमती देखने लगी। इनमें से दोनों के पास जबरदस्त अंतदृष्टि है लेकिन कुछ अंधस्थल भी हैं। और मैंने अपने प्रोजेक्ट को इन दो कार्लस की अंतदृष्टि को एक एकल, अधिक व्यापक ढांचे में एकीकृत करने के रूप में देखा जो इन अंधस्थलों को दूर करेगा। वास्तव में यह सही नहीं है। यह केवल दो कार्ल्स नहीं है जिन पर मैंने ध्यान केन्द्रित किया है, बल्कि 'दो कार्लस प्लस' हैं, जहां प्लस का अर्थ है नारीवादी सिद्वांत, पारिस्थितिक सिद्वांत, उपनिवेशवाद विरोधी और साम्राज्यवाद–विरोधी सिद्धांत–जिनमें से कोई भी मार्क्स एवं पोलानयी द्वारा पर्याप्त रूप से विकसित नहीं किया गया।

एटीः चलो महामारी के बारे में चर्चा करते हैं। जब हम महामारी के बारे में सोचते हैं तो हम इसे एक प्रकार की प्राकृतिक आपदा के रूप में सोचते हैं, कुछ ऐसा अप्रत्याशित जिसका मनुष्यों द्वारा रचित किसी भी चीज से लेना देना नहीं है। आपकी आगामी पुस्तक में इसके बारे में पाठ पढने के बाद, मैं चीजों को थोड़ा अलग तरीके से देखता हूँ। कृपया विस्तार से बताएं।

एनएफः *केनीबाल कैपिटलिज्म* का अधिकांश भाग कोविड के प्रकोप के प्रारम्भ के पहले लिखा गया था लेकिन पुस्तक में ''अ परफेक्ट स्टार्म ऑफ केपिटलिस्ट इर्रेशनलिटी एंड इनजस्टिस'' नामक अंतभाषण सम्मिलित है। मैं भी महामारी को इसी तरह देखती हूँ, वह बिन्दु जहां पूंजीवादी की सभी अतार्किकताएं एवं अन्याय मिलते हैं। प्रारंभ में, मैंने वायरस के प्राकृतिक आपदा होने के आपके शुरूआती दृष्टिकोण को साझा किया था। लेकिन तब से मैंने, जिसे महामारी विशेषज्ञ अन्य प्रजातियों से मनुष्यों के लिए जुनोटिक छलांग कहते हैं, के बारे में जाना है। कोविड–19 को फैलाने वाला वायरस मनुष्यों से बहुत दूर गुफाओं में रहने वाले चमगादड़ों से आता है। बहुत लंबे समय तक, इसने कभी किसी को कोई परेशानी नहीं दी। लेकिन कुछ ऐसा हुआ जिसने इन चमगादड़ों को एक सेतु–बंध या मध्यवर्ती प्रजाति के संपर्क में ला दिया और फिर उस प्रजाति को हमारे संपर्क में ला दिया। इस तरह हमें यह वायरस मिला। तो प्रश्न यह हैः ये प्रजातियां, जो पूर्व में एक दूसरे से दूर थी, उनमें नई निकटताओं को किसने बढाया? देखिये, दो चीजे हैंः वैश्विक ताप और उष्णकटिबंधीय वनों की कटाई, दोनों ने प्रजातियों के बड़े पैमाने पर प्रवासन को ट्रिगर किया है, जहाँ लुप्तप्राय या अनुपयुक्त प्रजाति नये आवास, जहां वे बेहतर ढंग से जीवित रह सकते हैं, की तलाश के लिए निकल जाते हैं। नतीजन, बहुत से संतप्त जीव जो नये स्थानों की खोज कर रहे है वे उन प्रजातियों के साथ संपर्क में आते है जिनके साथ पूर्व में उनका कोई संपर्क नही था। और देखो : एक नया जूनोटिक वायरस हस्तांतरण। वैसे, यह वही गतिशीलता है जिसने कोरोना वायरस के पूर्व के प्रकोपों, जैसे कि सार्स एवं मर्स के साथ–साथ ईबोला एवं एड्स को अवक्षेपित किया था। सार्स चमगादड़ से कीवेट और उनसे से इंसानों में पहुंचा। मर्स चमगादड़ों से ऊंटों में और उनसे इंसानों में पहुंचा। यह संभव है यद्यपि विज्ञान अभी भी स्पष्ट नहीं है, कि कोविड–19 पैंगोलिन या कुछ अन्य मध्यस्थ प्रजातियों के माध्यम से हममें फैला। तब प्रत्येक मामले में, ट्रिगर करने वाली गतिकी वैश्विक ताप और उष्ण कटिबंधीय वनों की कटाई है। तो उनके पीछे क्या है ? पूंजीवाद। यह वह व्यवस्था है जिसने वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों की बमबारी कर हमारे लिए वैश्विक ताप की स्थिति

>>

को पैदा किया है। और साथ ही यही वह व्यवस्था है जो खनन एव मवेशियों के लिए मार्ग बनाने के लिए वर्षावनों की कटाई कर रही है। कोविड–19 पूंजीवाद की संतान है। और किसी भी सूरत में, यह अंतिम महामारी नहीं है जिसका हम सामना करेंगे। क्योंकि ये अंतर्निहित कारण बदलते रहेंगे। इसलिए, हाँ, महामारी प्राकृतिक है, लेकिन यह केवल प्राकृतिक नहीं है। यह पूंजीवाद द्वारा अस्थिर की गई प्रकृति है।

एटीः साथ ही, आश्चर्जनक रूप से, पूंजीवाद टीके विकसित करने के लिए बहुत तेज था। और यह संकट के समय में बहुत रचनात्मक हो जाता है। तो क्या यह पूंजीवाद के दूसरी तरफ का मुददा नहीं है ?

एनएफः हॉ और नहीं। हम वैयक्तिक उपचार के संदर्भ में स्वास्थ्य देखभाल के बारे में बहुत अधिक सोचते हैं। लेकिन इसका एक ढांचागत पक्ष भी है, और महामारी ने उस पक्ष पर प्रकाश डाला है। इसने यह दर्शाया कि स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचे को बनाये रखना कितना महत्वपूर्ण है–उसी तरह जैसे हम सड़कों और पुलों और भौतिक बुनियादी ढांचों को बनाये रखते हैं। स्वास्थ्य आपातकालीन स्थितियों से निपटने के लिए दुनिया की क्षमताओंः श्रम शक्ति एवं कच्चा माल मशीनरी एवं उत्पादन सुविधाएं, आपूर्ति श्रृंखला और बौद्विक संपदा के बड़े भाग को निजी फर्म नियंत्रित करती है। लेकिन उनकी जनहित में कोई रूचि नहीं है। उन्हें सिर्फ उनके लाभ और शेयर कीमतों की चिंता होती है। इसे हम बहुत स्पष्ट रूप से वैक्सीन की बौद्विक संपदा पर वर्तमान संघर्ष में देख सकते है, जो यह निर्धारित करेगा कि इसे विश्व स्तर पर एक जनहित वस्तु के रूप में उपलब्ध कराया जायेगा, जैसा कि होना चाहिए, यदि हमें इस वायरस पर कभी भी नियंत्रण करना है। इस प्रयास में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा क्षमता का निजीकरण एक बहुत बड़ी बाधा रहा है।

अब मैं आपके पूंजीवाद के बचाव की तरफ आती हूँ। देखिये, पहला बिंदु यह है कि द्रुत गति से टीके विकसित करने की क्षमता को सक्षम बनाने के काम का एक बड़ा भाग सार्वजनिक क्षेत्र यू एस नेशनल इंस्टीटूट्स ऑफ हेल्थ (NIH) से आया। मुझे इस बारे में अमरीकी पक्ष का ही पक्की तौर पर पता है, लेकिन मुझे लगता है अन्य देशों में भी सार्वजनिक योगदान रहा है–निश्चित रूप से क्यूबा, चीन एवं रूस और शायद कई अन्य में भी। फिर भी, तथाकथित ''मार्डना'' वैक्सीन का अधिकांश प्रारम्भिक कार्य NIH में किया गया था। यह इंटरनेट की तरह है। यू.एस. रक्षा विभाग ने इंटरनेट का सूत्रपात किया। यह एक सार्वजनिक वस्तु के रूप में प्रारंभ हुआ। फिर, बेशक, इसे गूगल, फेसबुक, माइक्रोसॉफ्ट, एपल और अन्य द्वारा ले लिया गया। दोनों मामलों में यह प्रौद्योगिकी मूलरूप से सार्वजनिक क्षेत्र में विकसित हुई थी। अतः यह किसी भी तरह से स्पष्ट नहीं है कि पूंजीवाद को श्रेय मिलना चाहिए। मैं कहूंगी विज्ञान को श्रेय मिलना चाहिए और विज्ञान सार्वजनिक समर्थन के माध्यम से विकसित हो सकते है, जैसा कि अक्सर होता है।

एटीः लेकिन राज्य की एक समस्या है, वह नवउदारवाद का शिकार है और राज्य को कोई पसंद नहीं करता है। ऊपरी तौर पर, चीन जैसे सत्तावादी राज्य (और आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैंड जैसे लोकतांत्रिक राज्य जो खुद को पृथक रख सकते थे और कड़े उपाय लागू कर सकते थे) महामारी से लड़ने में सफल हुए। यूरोप में, सार्वजनिक स्वास्थ्य के उपायों के उपर नागरिक स्वतंत्रता के खतरे को अधिक जोर देने की प्रवृत्ति है।

एनएफः कुछ भी हो, यह समस्या अमरीका में और भी बदतर है। 6 जनवरी को यूएस कैपिटल बिल्डिंग पर हमला करने वाले लोग, जो राष्ट्रपति के चुनावों में जो बिडेन की जीत के प्रमाणीकरण को रोकने या उसमें देरी करने की उम्मीद कर रहे थे, का ट्रम्प द्वारा प्रोत्साहित एक सिद्वांत हैं – जिसे वे ''द डीप स्टेट'' कहते हैं। वे बहुत ही विचित्र और खतरनाक षड़यंत्र सिद्वांतों से विश्वास करते हैं जिसमें कोविड इंकारवाद सम्मिलित है। जलवायु इंकारवाद की तरह यह कहता है कि यह सब एक धोखा है जिसका उददेश्य अधिक सरकारी नियंत्रण को बढावा देना है। इन विचारों की हमारी राजनैतिक संस्कृति, जो काफी जोर से व्यक्तिवादी और उदारवादी है, में गहरी जड़े है। और लंबे समय से चले आ रहा राज्य का संशय अब दक्षिणपंथी ट्रम्पवादी लोकलुभावन पारिस्थितिक तंत्र में और अधिक तेज कर दिया गया है। एक वामपंथी के रूप में, मुझे राज्यों, सबसे पहले अमरीकी राज्य ने जो किया, उदाहरण के लिए, इराक पर हमला करना और कई अन्य भयानक चीजें, से बहुत आपत्तियां हैं। यह मानते हुए कि वे सक्षम और महान शक्तियों से स्वतंत्र है, मैं अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों पर भरोसा करना अधिक पसंद करूंगी। दुर्भाग्य से, यह हमारी स्थिति नहीं है, विश्व स्वास्थ्य संगठन कमजोर है और हो सकता है कि उसने अपना काम बेहतरीन तरीके से नहीं किया हों। किसी भी दशा में, जब आप एक स्वास्थ्य आपातकाल में हो, जैसा अभी हम हैं, हमें मौजूदा सार्वजनकि शक्तियों पर भरोसा करना होगा। और वे देश जिन्होंने सबसे अच्छा प्रदर्शन किया– और आपकी तरह मैं चीन को सम्मिलित करना चाहूंगी, वो हैं जहां जनसंख्या सार्वजनिक शक्ति को एक अपेक्षाकृत रूप से सकारात्मक दृष्टि से देखती है। वे एक अधिक लोकतांत्रिक सार्वजनिक शक्ति चाह सकते हैं परन्तु वे उन्मादी उदारवादी व्यक्तिवादी नहीं है। अमरीका ने हमेशा बाजार के विपरीत सत्ता को मान्य करने के लिए संघर्ष किया है। देश ने लगभग 100 मिलियन लोगों को तेजी से टीका लगाया, लेकिन टीका हिचकिचाहट और प्रतिरोध के कारण यह प्रयास अवरूद्व हो गया। इन परिस्थितियों में मैं वैक्सीन पासपोर्ट शुरू करने के पक्ष में हूँ। आप बॉस्केटबाल खेल देखने जाना चाहते है, आप थियेटर जाना चाहते है, आपको इस बात का प्रमाण दिखाना होगा कि आपको टीका लगा है या फिर वैध चिकित्सा अपवाद का प्रमाण। अब, यह शायद व्यक्तिगत स्वतंत्रता का उल्लंघन है। लेकिन ऐसी परिस्थितियां होती हैं जिसमें आपको सही प्रोत्साहन बनाने की आवश्यकता है। यदि रेस्तरां में धूमपान पर प्रतिबंध लगाना और सीट बेल्ट नहीं पहनने पर चालकों पर जुर्माना लगाना ठीक है, तो इनडोर सार्वजनिक सभाओं में वैक्सीन को मना करने वालों को बाहर रखना ठीक है।

एटीः अनियंत्रित, राज्य–विरोधी और सार्वजनिक–विरोधी संचार की इस स्थिति में, कहने के लिए विश्वव्यापी बल के रूप में नये सोशल मीडिया के साथ, आप सहमति के निर्माण के विपरीत असंतोष या गैर–सहमति का निर्माण कैसे करती हैं ?

एनएफः मैं यह नहीं कहूंगी कि हम असंतोष का निर्माण करते है। बल्कि मैं यह कहूंगी कि पूंजीवाद ने असंतोष का निर्माण किया। हम एक तीव्र, बहु–पक्षीय वैश्विक संकट, हमारी संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के एक सामान्य संकट के बीच में है। कोविड इसका एक पक्ष है लेकिन कई अन्य हैंः आर्थिक, पारिस्थितिक, सामाजिक और राजनैतिक। इस स्थिति में, एक व्यापक भावना है कि हमारी सामाजिक व्यवस्था और हमारे राजनैतिक नेता असफल हो गये है। असंतोष सब तरफ है और सही भी है। दक्षिणपंथी, सत्तावादी–बहिष्करणवादी लोकलुभवानवाद

>>

इस असंतोष की एक अभिव्यक्ति है–यद्यपि एक ऐसी अभिव्यक्ति जो इसके सही कारकों और वास्तविक समाधानों को समझने में बड़ी गलती करती है। असंतोष के अन्य बेहतर स्वरूप भी अस्तित्व में हैः वामपंथी लोकलुभावनवाद और बर्नी सैंडर्स–प्रकार के आंदोलन, जो असंतोष के अधिक तार्किक, आशाजनक मुक्तिकारी स्वरूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः असंतोष वहां है। लेकिन आप सही है, यह सभी प्रकार की प्रक्रियाओं जैसे सोशल मीडिया एल्गोरिदम और प्रभावित करने वाले, जो अन्य के मध्य, नवउदार रूढिवाद से व्यापक विचलन के मध्य समूह की सोच और उपभोक्तावादी जीवन शैली को मान्य करते हैं, के साथ गुथा है। इसलिए, यह एक जटिल स्थिति है।

किसी भी मामले में, मैं स्वयं कुछ सिद्वांत के अलावा किसी का निर्माण नहीं करती हूँ। और मेरी आशा यह हैं कि मैं जिस तरह के सिद्वांत का निर्माण करती हूँ, वह उन लोगों के लिए मामलों को स्पष्ट करने में मदद करेगा जो पहले से ही अपने कारणों के फलस्वरूप अपनी परिस्थितियों में गतिशील है, अपने स्वयं के गतिरोधों का सामना कर रहे है जो अलग–अलग आबादी के लिए अलग–अलग जगहों पर भिन्न स्वरूप लेते हैं। बहुत से लोग वास्तव में *गति* में है और *असंतुष्ट* है। वे परिवर्तन चाहते हैं और जिस तरह का परिवर्तन वे चाहते है उसकी वैकल्पिक समझ के साथ उसे कैसे लाया जाए के बारे में वैकल्पिक विचारों के साथ प्रयोग कर रहे है। मैं इस प्रक्रिया में यह सुझाव दे कर हस्तक्षेप कर रही हूँ कि उनके असंतोष और उनकी संलग्नता का कारण बनाने वाली अधिकांश समस्याओं को एक ही चीज तक ट्रेस किया जा सकता है : एक सामाजिक गठन के रूप में पूंजीवाद का डिजाइन जो स्वाभाविक रूप से प्रकृति को नरभक्षी बनाने के लिए है, जो नस्लीय आबादी के धन और श्रम को ढंकने करने के लिए, जो देखभाल कार्य पर मुफ्त की सवारी करने और अपने परिवारों एवं समुदायों को बनाए रखने की उर्जा को खर्च करने और हमारी समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक सार्वजनिक शक्तियों को खोखला करने को तैयार है। ये वे चीजें है जिन्हें पूंजीवाद, अपने डीएनए के कारण, अनजाने में करता है। और इसलिए मेरा संदेश है : हमारी सामाजिक व्यवस्था के इस मानचित्र को देखें और यह देखें कि आपका असंतोष कहां फिट होता है और यह अन्य के असंतोष से कैसे संबंधित है। यह समझिये कि एक ही स्त्रोत है, एक ही समान शत्रु है। आइये एकजुट हो और उससे लड़ें। ■

सभी पत्राचार नेन्सी फ्रेजर को <frasern@earthlink.net> पर प्रेषित करें।

महामारी के बीच देखभाल गृह मौतें

माइकल फाइन, मैक्वेरी विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया, और आईएसए सदस्य और वृद्धावस्था के समाजशास्त्र पर आईएसए अनुसंधान समिति के पूर्व उपाध्यक्ष (आरसी 11) द्वारा

कोविड–19 प्रतिबंध के कारण कांच के शीशे से अलग किए गए नर्सिंग होम में अपनी दादी से मिलता परिवार, अप्रैल 2021। सार्वजनिक डोमेन।

कोविड–19 महामारी के प्रति सामाजिक प्रतिक्रिया घरेलू और आभासी वातावरण में पारस्परिक अंतर्क्रिया के सूक्ष्म स्तर से लेकर वृहद स्तर तक फैली हुई है जिसमें देखभाल प्रथाएं और संबंध, बड़े पैमाने पर, संपूर्ण राष्ट्रीय आबादी और उनके अंतरराष्ट्रीय आदान–प्रदान को प्रभावित करते हैं। इनमें से प्रत्येक स्तर पर कार्यों को देखभाल के रूपों के रूप में समझने की आवश्यकता है।

हाल के वर्षों में सामाजिक सिद्धांत और समाजशास्त्रीय अनुसंधान के लिए देखभाल के महत्व को स्वीकार करने वाली सैद्धांतिक समझ विकसित करना अधिकाधिक महत्वपूर्ण हो गया है। 2020–21 में कोविड–19 महामारी से साक्ष्य राष्ट्रीय सरकारों और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों द्वारा एक चिंताजनक प्रतिक्रिया को दर्शाते हैं। जहाँ कुछ देशों में सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रतिक्रिया ने प्रदर्शित किया कि महामारी के प्रभाव को सीमित करना संभव है, अधिकांश देशों ने इससे संघर्ष किया।

महामारी के तनाव के तहत, राज्य ने पूरे देश के लिए देखभाल की जिम्मेदारी संभाली। इसमें आबादी को सहायता प्रदान करना और उनकी रक्षा करना और सफलता की अलग–अलग अलग डिग्रियों के साथ उनकी भलाई का प्रबंधन करना सम्मिलित था। बाजार द्वारा प्रतिक्रिया देने में असमर्थता और पूरी तरह से ढहने के खतरे में होने के कारण, उस समय राजनेताओं की तात्कालिक प्रतिक्रिया, जो उत्तरोत्तर घटनाओं के प्रबंधन में केवल आंशिक रूप से सफल थीं, राज्य मशीनरी का गठन करने वाली संवैधानिक शक्तियों, संस्थानों और परिपाटियों द्वारा संरचित थीं ।

पिछली ढाई शताब्दियों के दौरान, सामंतवाद और परंपरा से वैश्विक पूंजीवाद में सामाजिक परिवर्तन के युग में, जिसने आधुनिक दुनिया का निर्माण किया, देखभाल प्रावधानों के लिए सामाजिक संस्थानों के अत्यधिक जटिल कुलक, जिन्हें पोलानयी ने ''बाजार समाज'' कहा, उभरे। सबसे हालिया चरण में, समकालीन कल्याणकारी पूंजीवाद के पुनर्गठन ने सबसे उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में राज्य को सेवा बाजारों के प्रचार के माध्यम से देखभाल को तेजी से बदलने के लिए अपनी शक्तियों का उपयोग करते हुए देखा है। चाइल्डकैअर और शिक्षा, जीवन भर विकलांगता सहायता और चिकित्सा देखभाल से लेकर वृद्ध देखभाल और आवास तक, इन बाजारों और अर्ध–बाजारों का विभिन्न रूपों में संचालन, आधुनिक जीवन को तेजी से आकार देने और आधार प्रदान करने लगा है ।

इस प्रक्रिया में सामाजिक सिद्धांतों के लिए खुलासा की गई सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक अधिकांश उन्नत पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं, विशेष रूप से पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका की अर्थव्यवस्थाओं, से प्रकट अपेक्षाकृत अप्रभावी प्रतिक्रिया है। ये धनी, विकसित देश जो आम तौर पर उच्च जीवन स्तर का आनंद लेने वाली समृद्ध आबादी की वैश्विक सूची में शीर्ष पर हैं, तथाकथित प्रभावी नियामक प्रणाली और अच्छी तरह से प्रदर्शन करने वाली स्वास्थ्य और कल्याण प्रणाली वाले देश भी विशेष रूप से कमजोर पाए गए थे।

2020 में, पहले वायरस के प्रसार, फिर बाद में चिकित्सा उपचार तक पहुंच की समस्याओं के कारण, अधिकांश उन्नत पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं की सरकारें इस संक्रमण पर प्रभावी नियंत्रण करने

>>

में असमर्थ थीं। 2021 में, अति–रूढ़िवादी षड्यंत्र आंदोलनों और कल्याण और प्राकृतिक स्वास्थ्य में भोले विश्वासियों द्वारा फैलाए गए टीकाकरण के प्रति व्यापक शत्रुता और संदेह के साथ, टीकाकरण की आपूर्ति और कवरेज की समस्याएं, प्रतिध्वनित होती और फिर अधिकांश धनी पूंजीवादी कल्याणकारी राज्यों के प्रारंभिक गड़बड़ चरणों को दोहराती प्रतीत हो रही थीं ।

महामारी द्वारा सामाजिक विनियमन और प्रशासन की उजागर की गई समस्याओं को असंख्य रूपों में व्यक्त किया गया था। शायद ओईसीडी में वृद्ध देखभाल गृहों के सैकड़ों हजारों निवासियों की अनावश्यक मौतों से ज्यादा मार्मिक और दुखद कुछ नहीं था। इस अर्थ में, देखभाल गृह, एक केस स्टडी के रूप में कार्य करते हैं, एक सूक्ष्म जगत जिसमें स्थानीय, राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर देखभाल प्रावधान और विनियमन की व्यापक प्रणालियों में महामारी द्वारा उजागर की गई समस्याओं की विस्तृत श्रृंखला को पहचानना और चित्रित करना संभव है।

देखभाल सिद्धांत से आगे बढ़ते हुए, बाजार समाज के निर्माण के पोलानयी के विश्लेषण से ली गई दो प्रस्थापनाओं को यहाँ अग्रेषित किया जाता है। ऐसा देखभाल के राजनीतिक और आर्थिक आयामों की सैद्धांतिक समझ में योगदान देने और महामारी की प्रतिक्रिया पर अंतर्राष्ट्रीय शोध को सूचित करने के उदेश्श्य से किया जा रहा है। पहली, देखभाल के बाजारीकरण से उत्पन्न होने वाली शासन की समस्याओं की पहचान करती है, दूसरी सार्वजनिक देखभाल के वस्तुकरण के परिणामों से संबंधित है, विशेष रूप से देखभाल श्रमिकों और अन्य फ्रंटलाइन कर्मचारियों के बढ़ते अनिश्चित श्रम पर निर्भरता में व्यक्त।

> देखभाल गृहों में मौतें

2020 में कोविड की पहली लहर के दौरान, मृत्यु दर के आंकड़े अक्सर अविश्वसनीय और कम बताये जाते थे। कुछ देशों में देखभाल गृहों में होने वाली मौतों को प्रारम्भ में राष्ट्रीय योग में जोड़ा नहीं गया था । फरवरी 2021 में इंटरनेशनल लॉन्ग–टर्म केयर पॉलिसी नेटवर्क द्वारा प्रकाशित हालिया आंकड़ों दर्शाते हैं कि 22 देशों में, जिनके बारे में महामारी के प्रथम वर्ष में विश्वसनीय आंकड़े उपलब्ध थे, सभी कोविड–19 मौतों में से औसतन 41 प्रतिशत देखभाल गृह निवासियों में थीं। ऐसा ऑस्ट्रेलिया में होने वाली सभी कोविड मौतों का 75 प्रतिशत से लेकर दक्षिण कोरिया में रिपोर्ट की गई केवल 8 प्रतिशत तक के मध्स तक था। अधिकांश देश जिनके लिए आंकड़े उपलब्ध है, यह संख्या असमानुपातिक रूप से उच्च है। कनाडा में, सभी कोविड मौतों में से 59 प्रतिशत, नीदरलैंड में 51 प्रतिशत, स्वीडन में 47 प्रतिशत, ऑस्ट्रिया में 44 प्रतिशत देखभाल गृहों में हुई। संयुक्त राज्य अमेरिका में, वृद्ध देखभाल गृहों में 139,699 मौतें हुईं, जो कि महामारी के पहले वर्ष में राष्ट्रीय कुल मौतों का 39 प्रतिशत थीं ।

देखभाल गृहों को सहायता की आवश्यकता वाले वृद्ध लोगों की देखभाल और सुरक्षा के लिए राज्य द्वारा वित्त पोषित और विनियमित किया जाता है। उन्हें अपने निवासियों को संक्रमण से सुरक्षा प्रदान करते हुए एक सुरक्षित आश्रय–स्थल प्रदान करना चाहिए था। इसके बजाय, वे सबसे कमजोर आयु वर्ग के मध्य संक्रमण के प्रसार के केंद्र बन गए, जो सुरक्षा प्रदान करने के लिए सार्वजनिक नीतियों की व्यापक विफलता का प्रमाण थे। संक्रमण के प्रसार से बचाने के लिए घर–आधारित देखभाल की तुलना में देखभाल गृहों की विफलता को उनके निवासियों की उम्र या पुरानी बीमारी पर नहीं डाला जा सकता है। न ही इसे स्टाफ के व्यक्तिगत सदस्यों की विफलताओं के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। यद्यपि कई विशिष्ट, स्थानीय आकस्मिक कारकों ने संक्रमण के प्रत्येक प्रकरण में एक भूमिका निभाई, इस तरह की मौतों की वैश्विक घटना एक सैद्धांतिक रूप से अधिक जमे और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के महत्व पर जोर देती है जो सार्वजनिक देखभाल की इस विफलता के पीछे सामान्य तत्वों को दिखाई देता है।

ऑस्ट्रेलिया सहित कई देशों में, प्रगतिशील आवाजों ने तर्क दिया है कि मौतें उन नीतियों का परिणाम हैं जो वृद्ध देखभाल गृहों को निजी व्यवसायों के रूप में काम करके लोगों पर मुनाफे को प्राथमिकता देने की अनुमति देती हैं। यद्यपि, कुछ देशों में इस तर्क का समर्थन करने के लिए बहुत से परिस्थितिजन्य साक्ष्य हैं, अंतरराष्ट्रीय तुलनाओं से पता चलता है कि लाभ की तलाश और मौतों के बीच सटीक संबंध न तो कारकीय है और न ही सार्वभौमिक है। कुछ लाभकारी गृहों में कई मौतें हुईं, लेकिन अन्य में कोई दर्ज नहीं हुई। वहीं, कुछ गैर लाभकारी गृहों से भी बड़ी संख्या में कोविड मौतों की सूचना मिली। अन्य देशों में, जैसे कि नीदरलैंड और स्वीडन में, बड़ी संख्या में देखभाल गृहों में होने वाली मौतों की सूचना दी गई थी जिसे देखभाल गृह मालिकों द्वारा लाभ प्राप्ति से जोड़ कर नहीं देखा जा सकता है।

> बाजारीकरण और शासन

फिर भी बाजार की कड़ी को खारिज नहीं किया जाना चाहिए। बाजारों की ऐतिहासिक विफलता के प्रत्युत्तर में वृद्ध देखभाल गृहों के लिए राज्य का समर्थन विकसित हुआ। लेकिन पिछले 20–30 वर्षों में, प्रभावी रूप से यह सुनिश्चित करते हुए कि कानूनी स्वामित्व की स्थिति की परवाह किए बिना, प्रभावित सभी गृहों के संचालन को प्रतिस्पर्धी बाजार दबावों के अंतर्गत रख, समृद्ध पूंजीवादी राज्यों में देखभाल बाजारों को फिर से शुरू किया गया है। यह प्रक्रिया (विपणन) उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में प्रस्तावित अहस्तक्षेप बाजार व्यवस्था को प्रलेखित करने वाली पोलानयी की प्रक्रिया की प्रतिध्वनि करती है और उससे करीबी नजदीकी से मिलती है । प्रत्येक युग में, बाजार व्यवस्था जानबूझकर सरकारों द्वारा बनाई गई थी।

आज बाजारीकरण देखभाल और मानव सेवा क्षेत्र में एक वैध तर्क और संचालन के एक तरीके के रूप में मौजूद है जो इसके घटक भागों के बीच अन्तर्क्रियाओं को आकारित करता है। इसका प्रभाव पदानुक्रम और नौकरशाही प्राधिकरण के संबंधों को तोड़कर, और क्षैतिज रूप से, स्थानीय और क्षेत्रीय स्तरों पर और सेवाओं और सुविधाओं के भीतर सहयोग को बाधित और उलट कर, प्रणाली को लंबवत रूप से विभाजित करने के लिए किया गया है। हालांकि पोलानयी द्वारा इस संबोध को काम में नहीं लिया गया था, लेकिन ''शासन'' की समस्याओं को समझना एक मजबूत परिकल्पना प्रस्तुत करता है जो कोविड मौतों और बाजारीकरण के बीच की कड़ी को समझाने में मदद करता है। महत्वपूर्ण रूप से, शासन की अवधारणा बाजारीकरण के साथ–साथ उभरी और यह व्यवहार में ''नए सार्वजनिक प्रबंधन'' जैसी विचारधाराओं के साथ जुड़ी हुई है।

बाजार प्रतिस्पर्धा की स्थितियों के तहत, प्रबंधन के कॉर्पोरेट स्तर पर प्राधिकरण को तेजी से प्रत्यायोजित किया गया है, जहां गोपनीयता और स्वतंत्रता सहयोग और प्रणाली एकीकरण पर प्राथमिकता लेती है। देखभाल गृहों में, उपभोक्ता की पसंद पर बाजार का जोर चिकित्सा स्वच्छता के लिए अधिक पारंपरिक जिम्मेदारियों से दूर जाने के साथ–साथ आया है जिसने कई मामलों में पेशेवर स्टाफिंग आवश्यकताओं को प्रभावित किया है। इस प्रकार देखभाल गृह व्यापक संक्रमण की रोकथाम के प्रबंधन के लिए अधिकाधिक अनुपयुक्त थे। इसके बावजूद, देखभाल गृहों को

>>

स्व–निहित इकाइयों के रूप में संचालित करने की आवश्यकता थी, क्योंकि वे जानबूझकर सार्वजनिक स्वास्थ्य उपायों द्वारा तीव्र स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं, विशेष रूप से अस्पतालों की व्यापक प्रणाली से काट दिए गए थे। ऐसी परिकल्पना की जा सकती है, उनके स्वायत्त शासन ने उन्हें कोरोनावायरस के प्रसार के लिए विशिष्ट रूप से कमजोर बना दिया।

> अनिश्चित देखभाल कार्य के परिणाम

इसके अलावा अनिश्चित, कम वेतन वाले श्रम पर देखभाल गृहों की बढ़ती निर्भरता बाजारीकरण से निकटता से जुडी है। देखभाल में निवेश की लाभप्रदता सुनिश्चित करने को जारी रखते हुए राजकोषीय व्यय को नियंत्रित करने के लिए मजदूरी लागत को कम करने के लिए बाजार के दबाव का व्यापक रूप से उपयोग किया गया है। इसके परिणामस्वरूप लागत में कमी आई है जो कोविड के प्रकोप से पहले बड़े पैमाने पर देखभाल कर्मियों और देखभाल गृहों में अन्य प्रमुख घरेलू सहायक कर्मचारियों की कीमत पर होती थी।

स्वास्थ्य अधिकारियों और कई महामारी विज्ञान के अध्ययनों द्वारा रिपोर्टों ने इन आवश्यक श्रमिकों के असुरक्षित रोजगार और घरों के भीतर और बीच में संक्रमण के प्रसार के बीच संबंध की ओर इशारा किया है। अलग–अलग घरों में रोजगार लेने या जीविकोपार्जन के लिए अलग–अलग नौकरियों में काम करने के लिए मजबूर अनिश्चित श्रमिकों के विस्तार ने स्पष्ट रूप से वृद्ध देखभाल सुविधाओं के महामारी के प्रवेश में योगदान दिया है। इस प्रकार अनिश्चित देखभाल कार्य का उभार दर्शाता है कि देखभाल बाजारों की सीमाएँ पहुँच गई हैं– देखभाल के प्रावधानों को बनाए रखने के लिए किए गए उपायों ने उनकी सुरक्षा के बजाय उनके लिए खतरों को पेश करने और उनकी दीर्घकालिक व्यवहार्यता को कमजोर करने के बजाय काम किया है। देखभाल को बाजार के संदर्भ में व्यापार करने के लिए एक वस्तु के रूप में मानने से ऐसा प्रतीत होता है कि पोलानयी के शब्दों में देखभाल प्रभावी रूप से ''एक अवास्तविक वस्तु'' बन गई है, जैसा कि ब्रिगिट औलेनबैकर और उनके सहयोगियों ने हाल ही में तर्क दिया है।

> निष्कर्ष

देखभाल गृहों में प्रदान की गई देखभाल के दृष्टिकोण से, महामारी के प्रभाव बेतहाशा विनाशकारी प्रतीत होते हैं। लेकिन वे विकृत भी रहे हैं, व बाजारीकरण की सीमाओं को उजागर करने और ऐसी स्थितियाँ पैदा करने के लिए भी काम कर रहे हैं जिनके तहत राज्य को सामाजिक और राजनीतिक विनियमन के केंद्र की ओर वापस जाना आवश्यक और लोकप्रिय दोनों रहा है। क्या यह भी गहरे परिवर्तन का अग्रदूत है, जिस तरह के ऐतिहासिक बदलाव को पोलानियाई की दोहरी आंदोलन की अवधारणा एक संभावित प्रतिक्रिया के रूप में पहचानती है?

वैश्विक महामारी संकट और इसकी राष्ट्रीय अभिव्यक्तियाँ लोकतांत्रिक सामाजिक सीखें एक आवश्यक सामाजिक भलाई के रूप में देखभाल को पुनः प्राप्त करने के अवसर को इंगित करती हैं, बजाय इसके कि इसे आगे और भी अधिक चरम शोषण के लिए एक आर्थिक वस्तु के रूप में माना जाये। लेकिन क्या वायरस द्वारा उजागर की गई विफलताओं के जवाब में एक प्रगतिशील और लोकप्रिय सामाजिक आंदोलन के उभरने की उम्मीद की जा सकती है? और यदि हां, तो इसकी सफलता सुनिश्चित करने के लिए किन सामाजिक परिस्थितियों की आवश्यकता होगी? यह कौन से रूप ग्रहण कर सकता है? महामारी के पहले दो वर्षों के दौरान षड्यंत्र के सिद्वांतों से प्रेरित और राष्ट्रीय राजनीतिक लोकलुभावनवाद के तेजी से आक्रामक और असहिष्णु रूपों पर पोषित वेक्सर–विरोधी आंदोलनों के उभार ने दर्शाया है, निश्चित रूप से यह एक प्रमुख सवाल है जो महामारी सामाजिक सिद्धांत और समाजशास्त्रीय अनुसंधान के लिए उठाती है। ■

सभी पत्राचार माइकल फाइन को <michael.fine@mq.edu.au> पर प्रेषित करें।

> काम के एक समकालीन सैद्धांतिकरण की ओर

जी. गुंटर वॉस, प्रोफेसर एमेरिटस, केमनिट्ज प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जर्मनी द्वारा

औद्योगिक पूंजीवाद में, आर्थिक गतिविधि के रूप में काम का एक संकीर्ण दृष्टिकोण, जिसके फलस्वरूप काम के अन्य रूपों (जैसे घरेलू या परिवार से संबंधित काम) को और अधिक हाशिए पर रखा गया और लगभग ''अदृश्य कार्य'' बन गए। श्रेयः (बाएं चित्र) क्रिएटिवकॉमन्सय (दाईं तस्वीर) ILO एशिया–प्रशांत। कुछ अधिकार सुरक्षित।

समाजशास्त्रीय शब्दों में, काम को शारीरिक शक्ति और मनो–शारीरिक कौशल का उपयोग करने वाली एक उद्देश्यपूर्ण मानव गतिविधि के रूप में समझा जा सकता है। यह तथ्य कि अन्य मानदंड (प्रयास, उपयोगिता, उपकरण, मजदूरी, आदि) को अक्सर प्राथमिक पहलुओं के रूप में अतिरिक्त रूप से लागू किया जाता है, दर्शाता है कि इस तरह की श्रेणी स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं है। भले ही काम व्यक्तियों द्वारा किया जाता है, यह कम से कम अप्रत्यक्ष रूप से हमेशा बदलते सामाजिक संदर्भों से एकीकृत और आकारित होता है जो श्रम के विभाजन (सहयोग, संगठन, आदि) पर आधारित होते हैं।

> काम क्या है?

लगभग किसी अन्य अवधारणा की तरह, काम की धारणा वैज्ञानिक रूप से और विशेष रूप से सामाजिक व्यवहार के संबंध में ऐतिहासिक परिवर्तन के अधीन रही है। हाल ही में, इस सवाल पर तीखे विवाद हुए हैं कि वास्तव में काम क्या है या क्या होना चाहिए। काम को अधिक स्पष्ट रूप से कैसे परिभाषित किया जाए, इस पर कुछ विचार नीचे दिए गए हैं।

एक लंबे समय से चलने वाला प्रश्न यह है कि क्या काम सबसे पहले ''बोझ'' है या उपलब्धि की भावना के कारण लोगों को ''आनंद'' भी प्रदान कर सकता है और सकारात्मक आत्म विकास के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। इस भेद में दो अलग–अलग दृष्टिकोण छिपे हैं। एक व्यक्ति काम को अनुभव के एक अनिवार्य अवसर के रूप में देख सकता है जो मानव अस्तित्व का आधार है। इसकी अनुपस्थिति का तात्पर्य आवश्यक मानवीय आवश्यकताओं या यहाँ तक कि मानवीय गरिमा से वास्तविक इंकार है। हालाँकि, काम की ठोस ऐतिहासिक अभिव्यक्तियाँ समाज में कई समूहों के लिए बोझ और खतरों से जुड़ी हुई हैं (और जारी हैं), जिससे प्रयास की व्यर्थता के नए रूप सामने आए हैं। उदाहरण के लिए, यह लैटिन शब्द ''श्रम'' (यात्रा, या कठिनाई) और ''*ओपस*'' (सृजन; जिसे सृजित किया गया है) के बीच अंतर में व्यक्त किया जाता है, जो अंग्रेजी शब्दों ''श्रम'' (जन्म देने के कार्य को निरूपित करने सहित) और ''काम,'' के बीच के अंतर में भी प्रतिबिंबित होता है और जो इसके अलावा ''*अर्बेइट*'' और कम इस्तेमाल किए जाने वाले जर्मन शब्द ''*वर्क*'' के बीच जर्मन अंतर में भी देखा जाता है ।

निश्चित रूप से कार्ल मार्क्स द्वारा दो पहलुओं (''काम/श्रम का दोहरा चरित्र'') के बीच किया गया भेद (एडम स्मिथ द्वारा, और यहां तक कि अरस्तू के द्वारा भी, जिनमें से अरस्तू ने *ओकोनोमिया* और *क्रिमैटिस्टिक्स* शब्दों का इस्तेमाल किया गया था) व्यापक रूप

>>

से जाना जाता है: एक ओर ''ठोस'' उत्पादक श्रम के माध्यम से व्यावहारिक ''उपयोग मूल्यों'' का निर्माण, और दूसरी ओर ''अमूर्त'' श्रम के माध्यम से आर्थिक ''विनिमय मूल्यों'' का निर्माण। तर्क के अनुसार, इस विरोधाभास का विकास, पूंजीवाद के तहत व्यवस्थित रूप से सुगम है, इस प्रकार यह एक तेजी से महत्वपूर्ण सामाजिक विरोधाभास की ओर जाता है।

यद्यपि यह धारणा कि उन्नत समाजों में कार्य करने वाले लोगों की गतिविधि मुख्य रूप से पैसा कमाने (''लाभदायक काम'') की ओर अग्रसर होती है, लंबे समय तक निर्विवाद रही, कार्य की एक अधिक व्यापक रूप से कल्पना की गई अवधारणा आज इस बढ़ती मान्यता को दर्शाती है कि कार्य ने ऐतिहासिक रूप से स्वरूपों की विविधता को प्राप्त किया है जो न सिर्फ इसके सार के सन्दर्भ में बल्कि इसके सामाजिक धारणा में भी भिन्न है। यह इसका भी सुझाव देता है कि कार्य का विशिष्ट रूप हमेशा से रहा है और अभी भी निरंतर परिवर्तन के अधीन है। आय–उन्मुख रूपों के साथ (बहुसंख्यक विभिन्न प्रकार के आश्रित मजदूरी श्रम के लिए, और कम संख्या में लोगों के लिए, स्व–रोजगार के रूपों की एक बड़ी संख्या), कार्य की अन्य अभिव्यक्तियों की एक उल्लेखनीय विविधता है: ''स्वयंसेवक कार्य या ''नागरिक जुड़ाव'' (आमतौर पर पैसा कमाने के उद्देश्य के बिना); ''जनादेश–आधारित'' या ''राजनीतिक कार्य''; ''घरेलू कार्य'' (खरीदारी, खाना बनाना, सफाई करना आदि), ''परिवार संबंधित और देखभाल का काम'' (बच्चों का पालन–पोषण, नर्सिंग, वृद्ध व्यक्तियों की देखभाल आदि); ''आत्मनिर्भर कार्य'' और ''निर्वाह कार्य'' (आत्मनिर्भरता सहित, माल का प्रत्यक्ष उत्पादन), ''जबरन श्रम'' (दोषियों, प्रतिवादियों, दासों आदि द्वारा किया जाता है)।

इसी तरह, लंबे समय तक, कार्य को मुख्य रूप से एक सामग्री ''निर्माण'' गतिविधि के रूप में माना जाता था, जो कि हालांकि, कई मायनों में वास्तविकता का एक गलत विवरण निकला। धीरे–धीरे यह स्वीकार किया गया कि ''अनुत्पादक'' कार्य भी बहुत महत्वपूर्ण है (उदाहरण के लिए, प्रशासनिक कार्य, ज्ञान–आधारित कार्य) और वे ''सेवाएं'', जिन्हें लंबे समय तक कम समझा गया था (उदाहरण के लिए, प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्तिगत, सूचनात्मक, वित्तीय और तकनीकी सेवाएं), तेजी से महत्व प्राप्त कर रही हैं ।

और, समान रूप से महत्वपूर्ण, यह अनिच्छा से स्वीकार किया गया था कि काम के कुछ ही प्रकार हैं जो स्पष्ट रूप से ''विनाशकारी'' हैं (युद्ध से संबंधित कार्य, हिंसक आपराधिक गतिविधि, हानिकारक संशोधन और/या प्राकृतिक दुनिया का एकमुश्त विनाश)। उत्तरार्द्ध बताता है कि काम हमेशा एक मौजूदा रूप (जैसे, एक पेड़) को नष्ट कर नए रूप का निर्माण करते हुए (जैसे, एक कुर्सी) को बनाते हुए रूपों के निरंतर संशोधन को दर्शाता हैं

इसके अलावा, कार्य की बहुप्रचारित ''उपयोगिता'' का आकलन संबंधित दृष्टिकोणों के आधार पर काफी भिन्न हो सकता है: कुछ संदर्भों में जो लाभप्रद दिखाई दे सकता है वह अन्य में काफी हानिकारक हो सकता है; अल्पावधि में जो उपयोगी हो सकता है वह लंबी अवधि में बड़े पैमाने पर नुकसान का कारण बन सकता है।

आज एक नए रूप में जो उठाया जा रहा है, वह यह प्रश्न है कि क्या काम एक स्वाभाविक मानवीय विशेषता है और इस प्रकार यह मनुष्यों की ''प्रजाति–प्राणी'' या गट्टुंगस्वेसेन (मार्क्स) के रूप में एक उद्विकासिय अनूठी मुख्य विशेषता है, या क्या अन्य जीवित प्राणी भी इस रूप में काम करते हैं । हाल के नृवंशविज्ञान संबंधी निष्कर्षों से पता चलता है कि काम जैसी गतिविधियां, अल्पविकसित उपकरणों का यादृच्छिक पृथक उपयोग, और यहां तक कि उत्पादन के कुछ रूप मनुष्यों ही नहीं अपितु अपरा जंतुओं के लिए भी विशिष्ट नहीं हैं। असल में मार्क्स पहले ही स्वीकार कर चुके हैं कि जानवर न सिर्फ काम करते हैं बल्कि औजारों को भी काम में लेते हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि मानव श्रम, तब औजारों के उत्पादन की विशेषता है, लेकिन, सबसे ऊपर, नियंत्रण करने वाली चेतना की विशेषता है जो मार्क्स द्वारा प्रदत्त छवि के सन्दर्भ को प्रयोग में लेते हुए ''सबसे खराब वास्तुकार'' को ''सर्वश्रेष्ठ मक्खी'' से भिन्न करती है। आज, हमें (कभी–कभी बल्कि परेशान करने वाला) प्रश्न को जोड़ना होगा: जटिल मशीनें और प्रक्रियाएं वास्तव में किस हद तक काम कर सकती हैं (जैसे, लचीला स्वचालन, रोबोट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता)?

> काम की ऐतिहासिक रूप से बदलती अवधारणा

इस तरह के वैचारिक तनावों से पता चलता है कि परिवर्तन की अपनी ऐतिहासिक प्रक्रिया के दौरान काम की अत्यधिक भिन्न धारणाएं एक अन्तर्निहित समाजशास्त्रीय चिंता का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसे स्पष्ट करने के लिए, आइए हम इतिहास पर एक संक्षिप्त नजर डालें:

- ग्रीको–रोमन पुरातनता में, रोजमर्रा के व्यावहारिक जीवन के लिए शारीरिक गतिविधि के माध्यम से वस्तुओं का निर्माण (आज, ''श्रम'' के रूप में कल्पित), मुख्य रूप से पराधीन दासों और महिलाओं का कार्य था, जबकि पूर्ण नागरिक (पुरुष) के लिए आरक्षित गतिविधि राजनीतिक या दार्शनिक बौद्धिक कार्य था और कुछ हद तक, सैन्य सेवा। कारीगरों का शिल्प (तकनीक) एक मध्यवर्ती रूप का प्रतिनिधित्व करता था।

- यूरोपीय मध्य युग के प्रारंभिक ईसाई सामंतवाद में, काम की आम धारणा शारीरिक, अधिकांश समय कृषि के लिए, मुख्य रूप से पराधीन व्यक्तियों द्वारा की जाने वाली गतिविधि थी। इसके अलावा, अभिजात वर्ग (कुलीन वर्ग, पादरी) द्वारा अपनाई गई ''मुक्त'' गतिविधियाँ भी थीं। सबसे महत्वपूर्ण बात स्वर्ग में मानव की गिरावट के लिए शारीरिक कार्यविधियों को दैवीय दंड के रूप में निरंतर ऋणात्मक निरूपण करना है। इसके विपरीत, वास्तविक धार्मिक अभ्यास (''पूजा सेवा'') अत्यधिक मूल्यवान थी। काम की यह समझ धीरे–धीरे व्यावहारिक शारीरिक गतिविधियों के अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण की ओर बढ़ी, जिसे बाद में देवत्व और यहां तक कि ईश्वर की इच्छा के रूप में प्रतिबिंबित किया जाने लगा। मठों में, एक कार्य संस्कृति का उदय हुआ जिसमें उत्पादक कार्य, हालांकि अभी भी धार्मिक सेवा के बराबर नहीं था, की स्पष्ट रूप से सराहना की गई (*ora et labora*)।

- नगरों की नींव की पृष्ठभूमि के सहारे, एक विस्तारित शिल्प संस्कृति, क्षेत्र–पार व्यापार और तकनीकी विकास के संयोजन ने न केवल उत्पादक कार्यों के उच्च मूल्यांकन की, बल्कि आय अर्जित करने की दिशा में भी एक अभिविन्यास जो स्पष्ट रूप से अच्छे के लिए वर्जित था, की सुविधा प्रदान की। लूथर

>>

और रेफोर्मेशन ने लाभकारी कार्य को लगभग दैवीय अध्यादेश (''कॉलिंग'' या बेरुफंग) का दर्जा दिया । मैक्स वेबर ने ''आतुर श्रम'' की पहचान करके अपनी प्रोटेस्टेंट– इथिक्स थीसिस में, कैल्विनवादी सिद्धांत के पूर्वनिर्धारण के सिद्धांत में निहित दैवीय चयन के संकेतों की खोज के लिए, पश्चिमी (''आकस्मिक'') पूंजीवाद की महत्वपूर्ण नींव के रूप में पेशेवर सफलता की आकांक्षा पर जोर दिया। पुनर्जागरण और ज्ञानोदय ने एक साथ प्राकृतिक मानव अधिकार के रूप में नहीं तो व्यक्तिगत आत्म–पूर्ति की नींव के रूप में काम के महत्व पर जोर दिया।

- औद्योगिक पूंजीवाद में, आर्थिक गतिविधि के रूप में काम के बारे में एक और संकीर्ण दृष्टिकोण मजबूत हुआ जिसके कारण काम के अन्य प्रकार (जैसे घरेलू या परिवार–सम्बंधित काम) सांस्कृतिक रूप से और अधिक हाशिये पर गये और लगभग ''अदृश्य कार्य'' बन गये। काम के औपचारिक रूप से मान्यता प्राप्त रूपों को प्रासंगिक कौशल के तेजी से केंद्रित उपार्जन के आधार पर विशेष गतिविधियों के रूप में माना जाता था। अधिकांश आबादी (जैसा कुछ क्षेत्रों में अभी भी मामला है, बच्चों सहित) अनिवार्य रूप से विशिष्ट बाजारों (''श्रम बाजार'') में अपनी श्रम क्षमता की बिक्री के माध्यम से अब निर्वाह के आवश्यक मौद्रिक साधनों को प्राप्त करने पर निर्भर थी। जिन व्यक्तियों को वंचित किया गया था या जिन्होंने इस अवसर को खो दिया था, उन्हें ''बेरोजगार,'' ''बिना काम'' के लोग (जो वे नहीं थे) के रूप में माना जाता था।

कार्य का वास्तविक इतिहास कार्य की विकसित हो रही सामाजिक अवधारणा के समानांतर प्रकट होता है, लेकिन दोनों एक समान नहीं हैं। प्रत्येक मामले में प्रमुख दृष्टिकोण हमेशा प्रासंगिक कार्य गतिविधियों की श्रेणी का केवल एक आशुचित्र लेता है। इसके विपरीत, कई सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण कार्यों को व्यवस्थित रूप से अनदेखा कर दिया जाता है और इस तरह उनका अवमूल्यन किया जाता है। इसके साथ, काम का वास्तविक इतिहास भी हमेशा ''उपकरणों'' का इतिहास होता है और इस प्रकार अपनी प्राकृतिक जीवन स्थितियों और उनकी ''आंतरिक प्रकृति'' (मार्क्स) के साथ मनुष्यों के ''प्राकृतिक प्राणियों'' के रूप में उनकी अंतर्क्रिया का इतिहास होता है। इस अर्थ में, कार्य का इतिहास, एक ओर, मानव क्षमताओं और कौशल, तकनीकी संभावनाओं और प्रकृति की क्षमता के उपयोग के आश्चर्यजनक विकास का इतिहास है। साथ ही, यह प्राकृतिक और सांस्कृतिक मूल्यों के विनाश, मनुष्यों के शोषण और अलगाव और प्रयास की व्यर्थता के लगातार आवर्ती रूपों का इतिहास भी है। यह आज तक मान्य है, और आधुनिक पूंजीवाद के केंद्रों से दूरी उतनी ही अधिक होती जा रही है। और यह कम से कम जिन लोगों को दोनों –स्थानीय और एक वैश्विक स्तर– पर काम से और इस तरह रोजगार के अवसरों से योजनाबद्ध तरीके से बाहर रखा गया हैं जो उन्हें स्वयं को जीवित रखने की अनुमति देते हैं, के इतिहास में शामिल हैं। चूंकि औद्योगीकरण के प्रारंभिक वर्षों के दौरान उभरे नए प्रकार के सामूहिक विसर्जन को कुछ क्षेत्रों में (सीमित) सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों की स्थापना के माध्यम से कम किया गया है, सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों और रोजगार संबंधों के नियंत्रण से जुड़े खतरे एक बार फिर हर जगह बढ़ रहे हैं। कई लोगों के आकस्मिक आश्चर्य के लिए, काम से संबंधित बीमारियाँ न केवल शारीरिक रूप से प्रकट होती हैं, बल्कि वैश्विक उत्तर के कल्याणकारी राज्यों में भी गंभीर मनोवैज्ञानिक स्थितियों के रूप में प्रकट होती हैं, इस तथ्य के लगातार प्रमाण हैं।

> काम का समाजशास्त्रीय सिद्धांत

समाजशास्त्र ने बार–बार काम के विषय के लिए खुद को समर्पित किया है (यद्यपि अक्सर केवल चुनिंदा रूप से)। इस प्रक्रिया में, समाजशास्त्रियों ने विभिन्न विषयों की अवधारणाओं पर संज्ञान लिया है। लेकिन बीसवीं सदी के अंत के बाद ही समाजशास्त्रीय सिद्धांत निर्माण अधिक वैविध्यपूर्ण हो गया। निम्नलिखित उदाहरण इसे स्पष्ट करते हैं:

- अपने आदर्शवादी विषय दर्शनशास्त्र के साथ, जॉर्ज एफडब्ल्यू हीगल, काम के सबसे प्रभावशाली प्रारंभिक आधुनिक सिद्धांतकार हैं। वह काम को मानव के बौद्धिक रूप से निर्देशित ''बाहरीकरण'' (और, एक ही समय में, आत्म–''अलगाव'') का गठन करने जो अपने उत्पादों में खुद को प्रतिबिंबित करने और और इन उत्पादों के व्यक्तिपरक ''अधिग्रहण'' के द्वारा ''आत्म–चेतना'' प्राप्त करने आधार के रूप में मानता है।

- कार्ल मार्क्स हीगल से आगे बढ़ते हैं, फिर भी वे काम को ''विशुद्ध रूप से बौद्धिक'' नहीं, बल्कि एक ''कामुक मानव गतिविधि'' और मुख्य रूप से आर्थिक उत्पादक गतिविधि के रूप में मानते हैं। वे काम के बारे में अपने शुरुआती आम तौर पर सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित करते हैं और पूंजीवादी सामाजिक संबंधों के तहत श्रम के व्यापक विश्लेषण और आलोचना में इसका विस्तार करते हैं। वे पूंजीवाद के तहत काम के सामान्य रूप को विमुख ''मजदूरी श्रम'' के रूप में संदर्भित करते हैं। मार्क्स के अनुसार, लोग केवल तभी अस्तित्व में रह सकते हैं जब वे अपनी ''श्रम शक्ति'' अर्थात अपनी कार्य करने की क्षमता को एक वस्तु के रूप में बेचें। कार्यस्थल के संदर्भ में नियंत्रित और निगरानी प्रक्रियाओं में एकीकृत कार्य ''अधिशेष मूल्य'' और आर्थिक ''लाभ'' की उत्पत्ति के लिए आर्थिक शोषण का आधार बनता है। मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से कार्य के स्व–निर्धारित मानव अनुभव की संभावना, इस प्रकार व्यवस्थित रूप से विकृत और अंततः कम हो जाती है।

- अपने शुरुआती लेखन में से एक में, एमिल दुर्खीम ने सामाजिक विभेदन का एक प्रारूप विकसित किया। उनके लिए, ''श्रम के विभाजन'' का अर्थ समाज की क्षमताओं को विशेष पेशेवर कार्यों में वर्गीकृत करना है। ऐतिहासिक रूप से, वे प्रकार्यों के एक कमजोर ''यांत्रिक'' विभाजन से समान सामाजिक इकाइयों (सामूहिक मूल्यों के माध्यम से सुनिश्चित ''एकजुटता'' के साथ ''श्रम का एक खंडीय विभाजन'') से प्रकार्यों के विभेदित ''जैविक'' वितरण से अधिकाधिक भिन्न इकाइयाँ (प्रकार्यात्मक निर्भरता से उत्पन्न होने वाले एक नए प्रकार के सामाजिक सामंजस्य के साथ) की दिशा में संक्रमण देखते हैं ।

- हन्नाह अरेंड्ट मानव गतिविधि के मूलभूत रूपों के मध्य अंतर करती हैं। अरस्तु के शब्दों पोइएसिस (बनाना, उत्पादन करना) और प्रैक्सिस (स्वंतंत्र लोगों या आत्माओं की गतिविधि) से आगे बढ़ते हुए, वे तीन श्रेणियों का निर्माण करती हैं: ''श्रम'' के रूप में वह गतिविधि जो प्रजातियों के निरंतर भौतिक अस्तित्व की सेवा करती है, जिसका अर्थ स्वतंत्रता नहीं, बल्कि जीवन को पोषित करने की परम अनिवार्यता । इसे ''काम'' के विपरीत एक सर्वव्यापी ''कृत्रिम'' दुनिया के परिणामी उद्भव जिसका मनुष्य विदेशी के रूप में अनुभव करते हैं, के साथ पूर्ण रोजमर्रा की

> >

जिंदगी के लिए टिकाऊ चीजों के भौतिक उत्पादन, के साथ देखा जाता है। अरेण्ड्ट तर्क देते हैं, तीसरी श्रेणी के रूप में, ''एक्शन'' – अरस्तु के प्रैक्सिस के सादृश्य में – समझ के द्वारा सामाजिक बहुलता के गठन से सम्बंधित है। व्यक्ति ''श्रम'' या ''कार्य'' किए बिना जीवित रह सकता है, लेकिन, एक सामाजिक प्राणी के रूप में, अस्तित्वपरक रूप से राजनीतिक ''कार्रवाई'' पर निर्भर है।

- जुरगेन हैबरमास दो प्रकार की मानवीय गतिविधि की तुलना करते हैं: प्रकार्यात्मक सामग्री उत्पादन की दिशा में प्रेरित श्रम के रूप में ''साधक'' गतिविधि,और ''अभिव्यक्तिशील क्रिया'', सामाजिकता का उत्पादन। ऐतिहासिक शब्दों में, वे मुख्य रूप से दक्षता–उन्मुख ''व्यवस्था'' (अर्थव्यवस्था, समाज) के भीतर निष्पादित साधक क्रिया से सामाजिक ''जीवन जगत'' में सामाजिक रूप से अपरिहार्य समझ–उन्मुख क्रिया को खतरा मानते हैं ।

भले ही (व्यापक अर्थ में) ''कार्य'' मानव गतिविधि के पर्याप्त अनुपात की विशेषता है, फिर भी मानव अस्तित्व को इसके बराबर नहीं किया जा सकता है। एक ''कार्य–केंद्रित समाज'' में मनुष्य मुख्य रूप से अधिग्रहण करने वाले, काम के प्रति जुनूनी प्राणी नहीं हैं (जैसा कि कुछ अभी भी मानते हैं)। इस तरह का दृष्टिकोण कई अन्य महत्वपूर्ण मानवीय गतिविधियों की विशिष्टता को पकड़ने में विफल रहता है। ''आराम'', ''मनोरंजन'', या ''खेल'' जैसी सभी श्रेणियां इस ''अन्य'' को मिलाने की कोशिश करती हैं –कभी कभी सटीक परिभाषा (जैसे खेल और खेलने के काम के पक्षों के सन्दर्भ में) के तैयार करने के लिए कोशिश के समय एक ही प्रकार की कठिनाइयों का सामना करती हैं। कार्य की अवधारणा के संबंध में काम एक स्थिर सत्य दावे के आधार पर एक द्विआधारी दृष्टिकोण पर काबू पाना है। लचीले मापदंडों पर आधारित एक संबंधपरक समझ अधिक प्रासंगिक होगी ताकि विशिष्ट गतिविधियों में ''कार्य'' की विशेषताओं की पहचान की जा सके। केवल उसी तरह से काम के आधुनिक रूपों और धारणाओं की उपरोक्त आलोकित की गई विविधता को पूरी तरह से समझा जा सकता है। ■

सभी पत्राचार जी. गुंटर वॉस को <info@ggv-webinfo.de> पर प्रेषित करें।

> कोविड–19 और भारत के प्रवासी श्रमिक

राफिया काजिम, एलएनएम विश्वविद्यालय, भारत, और शिक्षा के समाजशास्त्र (आरसी 04), भाषा और समाज (आरसी 25), महिला, लिंग और समाज (आरसी 32), और दृश्य समाजशास्त्र (आरसी 57) पर आईएसए की अनुसंधान समितियों के सदस्य द्वारा

2020 में दिल्ली–राजस्थान सीमा पर तालाबंदी 1.0 की घोषणा के बाद प्रवासी श्रमिक अपने गाँव वापस जा रहे हैं। श्रेयः इब्सर हुसैन।

एक महामारी या किसी स्वास्थ्य को संभालनें में भारत सरकार की गैर तैयारी कोविड–19 महामारी के दौरान स्पष्ट हुई, जब 24 मार्च 2020 की रात्रि इसने अचानक लॉकडाउॅन 1.0 की धोषणा कर दी। राष्ट्रव्यापी कर्फ्यू के प्रारम्भ होने के पहले नागरिकों के पास केवल चार घंटे की अवधि थी जिससे उनमें अराजकता फैल गई। प्रवासियों और शहरी निर्धनों के प्रति राज्य की उदासीनता लॉकडाउन लागू करने के तरीके से स्पष्ट हो गई, जो दिहाड़ी मजदूरों पर पड़ने वाले इसके तात्कालिक विनाशकारी प्रभावों को ध्यान रखने में विफल रहा।

बहुत कम बचत और अनिश्चितता की स्थिति में भुखमरी के आसन्न खतरे के साथ, उनमें से अधिकांश को अपने मूल स्थानों पर लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, लॉकडाउन 1.0 के पहले सप्ताह में, करीब 50,000 प्रवासियों ने दिल्ली और मुंबई जैसे महानगरीय केंद्रों से अपने मूल स्थानों की यात्रा शुरू की।

घर पहुंचने की कोशिश में प्रवासी कामगारों ने जिस तरह पैदल मीलों की दूरी तय करते समय अपनी जानें गवाईं, उसके उदाहरण उनकी अनिश्चित स्थिति को और अधिक उजागर करते हैं। 8 मई को औरंगाबाद में रेलवे ट्रैक पर सो रहे 16 प्रवासी मजदूरों को एक मालगाड़ी ने कुचल दिया। पुलिस, जो सड़कों पर चलते हुए पाए जाने वालों को बेरहमी से पीट रही थी, और जो प्रवासियों को वैकल्पिक और अपेक्षाकृत परेशानी मुक्त मार्ग लेने के लिए डराने के लिए जिम्मेदार थे, को दोष देने के बजाय, सरकार ने पटरियों पर पर सोने की मूर्खता का सारा आरोप प्रवासियों पर मढ़ दिया। लौटने वाले प्रवासियों की मृत्यु उनके मूल स्थानों से दूर, कोविड–19 के कारण से नहीं बल्कि सरकारी उदासीनता के कारण पारगमन मार्गों पर हुई।

विडंबना यह है कि ''कल्याणकारी राज्य'' के लिए, प्रवासी निर्धन, ''वैध नागरिकता'' के किसी भी अर्थ से रहित, केवल एक ''लक्षित आबादी'' रह जाते हैं। राज्य उनके लिए कुछ कल्याणकारी योजनाएं तैयार करता है, और ये उनसे मिलने वाले राजनीतिक लाभ की गणना के बाद ही उन्हें दी जाती हैं।

> सर्वोत्कृष्ट गैर–नागरिक!

प्रवासियों का जीवन कठिनाइयों और अनिश्चितताओं से भरा हुआ है। इस अनिश्चितता के नीचे अलगाव की भावना है जो प्रवासियों को बैरी शहरी लोगों के हाथों अनुभव होती है। नागरिक समाज के वैध नागरिक होने का दावा करने वाले शहरी लोगों के लिए, प्रवासी ''अज्ञात अन्य'' हैं, एक जनसांख्यिकीय और अनुभवजन्य श्रेणी के लोग, जिनकी यद्यपि घरों और शहरों को साफ करने और सड़कों, पुलों और शॉपिंग मॉल बनाने की आवश्यकता है, पर वे शहरी परिदृश्य के सौंदर्य के लिए एक नागरिक खतरे के रूप में अवांछित बने रहते हैं। यह राज्य और उसके ''वैध नागरिकों'' की सामूहिक बैरी शत्रुता है जो शहरी निर्धनों के लिए सामान्य समय में भी जीवित रहना कठिन बना देती है और प्राकृतिक आपातकाल के समय में इससे भी अधिक कठिन। ''अज्ञात अन्य'' के रूप में शहरी प्रसार के हाशिये पर रहने वाले प्रवासी श्रमिक शहर में अपनेपन की भावना विकसित करने में विफल होते हैं।

>>

> पहचान और अपनापन

पहचान और अपनेपन की राजनीति इंगित करती है कि हम कौन है, और क्या नहीं है, यानी जहां से हम सम्बद्ध नहीं है। अपनेपन और पहचान के परस्पर क्रिया द्वारा ''घर'' की समझ को सूचित किया जाता है और इसे केवल स्थानिकता या सामयिकता से परिभाषित नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार मेजबान शहरों में वर्षों तक काम करने के बाद भी, प्रवासी अपने पैतृक गांवों में लौटने के लिए तरसते हैं। ''अपनापन '' इस प्रकार सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक, क्षेत्रीय और जाति की सीमाओं के अनजाने निर्माण को संदर्भित करता है। उदाहरण के लिए, एक बिहारी, एक प्रवासी, एक मजदूर, एक दिहाड़ी मजदूर, एक झुग्गी–झोपड़ी में रहने वाले, मुंहफट, और शहरी क्षेत्र में एक नाजायज प्रवेशक के रूप में उसकी बहुआयामी पहचान को उजागर करने वाली कई सीमाओं के निर्माण के साथ, दिल्ली में बिहार के एक प्रवासी को यह पता चलता है कि वह कौन है और वह कहां का है। उसकी क्षेत्रीय पहचान (यानी, बिहारी) को ''दिल्ली के वैध नागरिकों'' द्वारा किसी भी प्रकार की हिंसा, दुर्भाग्य, दुर्घटना या आपराधिक गतिविधि के लिए स्पष्टीकरण के रूप में लागू किया जाता है; इन ''वैध नागरिकों'' का मानना है कि उन्हें दिल्ली के वैध स्वामित्व अधिकारों और इसके साथ ही इसकी सुरक्षा के लिए निवेश किया गया है।

> सब एक शोकयोग्य मौत के लिए?

जूडिथ बटलर के अनुसार, कौन मानव के रूप में गिना जाता है, किसका जीवन जीवन के रूप में गिना जाता है, और किसका जीवन शोक के योग्य है के बारे में शोक एक प्रकार्य है। प्रवासी श्रमिक और शहरी निर्धन, उनके ''अज्ञात अन्य'' होने के कारण, चेहराविहीन सख्यां जिन्हें शोक योग्य नहीं माना जाता है के अलावा कुछ भी नहीं हैं। इसलिए उनका मानना है कि अपने घर (जहां से वे सम्बद्ध हैं) में मरने से शोक योग्य की मात्रा बढ़ जाएगी। ऐसा इस तथ्य के कारण होगा कि वहां, व्यक्ति एक ''सामाजिक रूप से गठित शरीर'' है जो दूसरों के साथ जुड़ा हुआ है। और चूंकि खोना परिवर्तन के साथ आता है, हानि होती है, और दिवंगत आत्मा से संबंधित लोगों पर खोने का परिवर्तनकारी प्रभाव होता है। यह पूरी तरह से स्पष्ट हो जाता है कि इन प्रवासी कामगारों के लिए, कहाँ मरना है, का चयन करना कैसे मरना है से अधिक प्रधानता रखता है। ऐसा सिर्फ इसलिए कि अपने गृह क्षेत्र में मृत्यु और उसके साथ आने वाला शोक उन्हें कम से कम मनुष्य के रूप में कुछ सम्मान प्रदान करेगा, और वे एक नामहीन, चेहराविहीन, बेघर, नगण्य आबादी के रूप में नहीं माने जायेंगे।

यह आंशिक रूप से भारत के कोने–कोने में फंसे हजारों प्रवासी श्रमिकों द्वारा बेपरवाह घर वापसी की व्याख्या करता है: कोविड–19, भूख, थकान, पुलिस बर्बरता –जैसे खतरों की बहुलता से तत्परता से सामना करना–इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि–वित्तीय असुरक्षा की तुलना में प्रवासी मजदूर अपनी मानसिक और सामाजिक सुरक्षा को लेकर अधिक चिंतित थे।

ये वे स्थितियाँ हैं जिन में ग्रामीण भारत के प्रवासी श्रमिक तालाबंदी हटने के बाद हैदराबाद के शहरी क्षेत्रों में निवास करते हैं। वे सड़क के किनारे झुग्गियों के रूप में रहते हैं और निर्माण स्थलों पर काम करते हैं जबकि पत्थर की चक्की के रूप में अपने पारंपरिक व्यापार को भी जारी रखते हैं। श्रेयः राफिया काजिम।

प्रवासी मजदूरों के लिए परदेस–विदेशी भूमि/शहरों में मरने का खयाल मनोवैज्ञानिक तौर पर असहनीय था। कई प्रवासियों ने कहा कि अगर उन्हें मरना है, तो वे शहरों की बजाय ''घर'' पर मरना पसंद करेंगे। वास्तव में यह शोक अयोग्य मृत्यु का भय है जो अर्जुन अप्पादुरई के शब्दों में, इन ''अशक्त और अपर्याप्त मनुष्यों'' पर भारी पड़ता है।

> निष्कर्ष के तौर पर

यह तथ्य कि भारतीय प्रवासी श्रमिकों के पास सामूहिक आवाज नहीं है, उन्हें किसी भी मजबूत सौदेबाजी की शक्ति से वंचित रखता है। जो मजदूरी वे कमाते हैं, वह भी वैश्विक मानकों के हिसाब से सबसे कम है। उनमें से अधिकांश अपनी अल्प दैनिक आय पर जीवित रहते हैं।

समय की मांग है कि संबंधित सरकारें प्रवासी कामगारों के लिए व्यापक योजनाएं लेकर आएं। सभी प्रवासी कामगारों का आधिकारिक रूप से पंजीकरण अनिवार्य कर उन्हें एक डेटा बेस भी बनाना चाहिए। सरकारों को देश के शहरी और ग्रामीण निर्धनों के प्रति संवेदनशील होने की आवश्यकता है और तदनुसार ग्रामीण केंद्रित योजनाओं की शुरूआत और कार्यान्वयन के साथ ग्रामीण भारत को फिर से शुरू करने को प्राथमिकता देनी चाहिए। प्रवासी श्रमिकों का जीवन भी मायने रखता है! ■

सभी पत्राचार राफिया काजिम को <rafiakazim@gmail.com> पर प्रेषित करें।

> वैश्विक सन्दर्भ में
अनौपचारिक एवं अनिश्चित कार्य

क्रिस टिल्ली, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, लॉस एंजेल्स, यूएसए एवं आईएसए की कार्य के समाजशास्त्र (आर सी 30), श्रम आंदोलनों (आरसी 44) और सामाजिक वर्ग एवं सामाजिक आंदोलन (आरसी 47) पर शोध समिति के सदस्य द्वारा

''बिना किसी श्रम अनुबंध के और न ही अच्छे उपचार के साथ, मेरा कार्य अदृश्य है।'' 2018 में घरेलू कामगारों ने मेक्सिको सिटी में विरोध किया। श्रेयः जॉर्जीना रोजस–गार्सिया।

अनौपचारिक कार्य वह क्षतिपूर्ति कार्य है जो स्वयं तो विधि–मान्य है लेकिन रोजगार कानूनों के ''मानकों'' की पहुँच या पकड़ से बाहर रहता है। ''पहुँच से परे'' का अर्थ है वह कार्य जो इन कानूनों के अंदर नहीं आता है। सड़क विक्रेता जैसे स्व–उद्यमी श्रमिक और इनके साथ अन्य द्वारा काम पर रखे – घरेलू श्रमिक, कृषि श्रमिक, दैनिक श्रमिक– सभी इस सन्दर्भ में अधिकांश दुनिया में अनौपचारिक हैं। ''पकड़ से परे'' का अर्थ है कि सैद्धांतिक रूप से कानून लागू होता है पर व्यवहारिक रूप से लागू नहीं किया जाता है। इसमें छोटे उद्यमों में कई कर्मचारी सम्मिलित हैं (छोटे खुदरा स्टोर या रेस्तरां के बारे में सोचें) लेकिन कुछ बहुत बड़े उद्यमों में भी हैं। अधिक प्रभावी रूप से अनौपचारिक रोजगार अनौपचारिक, ऑफ द बुक व्यवसायों में रोजगार प्राप्त लोगों तक ही सीमित नहीं है। उदाहरण के लिए, मेक्सिको में अधिकांश अनौपचारिक श्रमिक औपचारिक उद्यमों में श्रम करते हैं। यद्यपि वैश्विक उत्तर में अनौपचारिक कार्य कई लोगों के लिए सीमित रूचि का एक सीमांतीय प्रघटना हो सकता है, *दुनिया के अधिकांश श्रमिक अनौपचारिक रूप से कार्य करते हैं* और अब समय हो गया है कि अनौपचारिक कार्य एवं इसे कैसे सुधारा जा सकता है, पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

एक और शब्द ''अनिश्चित कार्य'' ने हाल ही में ध्यान आकर्षित किया है। अक्सर ऐसे औपचारिक कार्य का वर्णन करने वाला यह शब्द जो बुनियादी कानूनी आवश्यकताओं को पूरा करता है, उस कार्य को संदर्भित करता है जो असुरक्षित है और जिसमें एक नियामक ''मानक रोजगार सम्बन्ध'' की तुलना में कम भुगतान किया जाता है। दोनों अवधारणाएं परस्पर व्याप्त हैंः अनिश्चित कार्य आवश्यक रूप से रोजगार कानूनों से बचता या उनका उल्लघन नहीं करता है लेकिन अधिकांश अनौपचारिक कार्य अनिश्चित होते हैं।

अनिश्चितता स्थानिक और सामयिक रूप से सापेक्ष है। अनिश्चितता और अनौपचारिक कार्य दोनों ही सापेक्ष रूप से परिभाषित होते हैं, इसलिए इन्हें राष्टीय सन्दर्भों में बांधना महत्वपूर्ण है। दस वर्ष पूर्व एक कांफ्रेंस में घाना के श्रमिक विद्वान् अकुआ ब्रिटवम को अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के अधिकारीयों द्वारा अनिश्चित कार्य पर प्रस्तुतिकरण पर प्रतिक्रिया करते हुए मेरे सामने कहा कि जिसे आप अनिश्चित कार्य कहते हैं, वह घाना में जिसे हम कार्य कहते हैं ... जैसा लगता है।''वर्षों बाद एक अन्य ILO अधिकारी ने मुझसे कहा, ''जिसकी जर्मन श्रमिक अनिश्चित कार्य के रूप में शिकायत करते हैं, कोरियाई श्रमिकों को वह पसंद आएगा। जिसकी कोरियाई श्रमिक अनियमित कह कर शिकायत करते हैं, दक्षिण अफ्रीकी श्रमिकों को वह पसंद आएगा।

तो इन सब में नया क्या है? अनौपचारिकता और अनिश्चितता निश्चित तौर पर नए नहीं हैं। वस्तुतः 1848 में जिस तरह मार्क्स एवं एंगेल्स ने *कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो* में निर्माण श्रमिकों का वर्णन किया था, वह आज के अनौपचारिक काम के विवरण जैसा लगता है। इसका मतलब यह कहना नहीं है कि उस समय सभी कार्य अनौपचारिक थे। अधिकांश दुनिया नियमों के विस्तृत समुच्चय द्वारा शासित श्रम के गैर– मुक्त रूपों में कार्य कर रही थी – चैटल दासता, गिरमिटिया श्रम, चपरासी, बटाईदार, इत्यादि। यह कहना अधिक सही होगा कि मार्क्स के दिनों में अनिश्चित अनौपचारिक कार्य के नए रूप उभर रहे थे और बढ़ रहे थे।

जहाँ तक इस बात का सम्बन्ध है, अनौपचारिक और अनिश्चित कार्य कभी खत्म नहीं हुए। उदाहरण के लिए, जापान के प्रसिद्ध आजीवन रोजगार मॉडल ने महिलाओं, युवा और बुजुर्ग लोगों और प्रवासियों को छोड़कर हमेशा केवल अल्पसंख्यक श्रमिकों को कवर किया।1950–1960 के दशक में औपचारिक श्रम के ''स्वर्णिम युग'' के दौरान उत्तरी यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य पूर्व ब्रिटिश बसावट वाले उपनिवेशों में भी, कई ने अनौपचारिक या अनिश्चित नौकरियों में कठिन श्रम किया। यह सबसे पहले महिलाओं, युवा श्रमिकों और प्रवासियों पर लागू होता है। प्रवासियों में सीमा पार और आंतरिक दोनों प्रवासी शामिल थेः मेरे देश, संयुक्त राज्य अमेरिका में, उन दशकों में सबसे बड़ा प्रवासी समूह दक्षिण से

> >

2011 में मर्टल विटबोई इंटरनेशनल डोमेस्टिक वर्कर्स फेडरेशन (IDWF) इवेंट में बोलते हुए। विटबोई, एक दक्षिण अफ्रीकी घरेलू कार्य कर्ता नेता और खुद एक पूर्व घरेलू कामगार, संघ के अध्यक्ष के रूप में कार्य करते हैं। श्रेयः IDWF

उत्तर की ओर प्रवास करने वाले छह मिलियन मूल–निवासी अश्वेत लोग थे, लेकिन मेक्सिको से अतिथि श्रमिकों को आयात करने वाले ब्रेसेरो कार्यक्रम ने भी अपने 22 साल के अस्तित्व में 4.6 मिलियन श्रम अनुबंध को उत्पन्न किया।

जो नया है वह कुछ मायनों में 1848 में जो नया था उसकी पुनरावृत्ति है – अनौपचारिक और अनिश्चित कार्य उन जगहों और आबादी में फैल रहा है जहां यह पहले नहीं पाया गया था। यह एक प्रश्न उठाता है: अनौपचारिक और अनिश्चित कार्य को रोजगार के कुछ ''मानक'' रूप के सापेक्ष परिभाषित किया गया है। लेकिन अगर वह ''मानक'' रोजगार इतना असाधारण हो जाये कि यह अब शायद ही ''मानक'' रहे तो क्या होगा ? यह प्रश्न विशेष रूप से वैश्विक दक्षिण, जहां अनौपचारिक कार्य अक्सर अधिकांश कार्यबल (भारत में 90 फीसदी से अधिक) को रोजगार देता है, में आवश्यक है। यहां वास्तविक समस्या वैचारिक नहीं बल्कि व्यावहारिक है: हम उन नौकरियों की गुणवत्ता की रक्षा कैसे कर सकते हैं जो अनौपचारिकीकरण और अनिश्चितता से तुच्छ हो रही हैं?

> अनिश्चित श्रमिकों द्वारा आयोजन

उत्तर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा शामिल कार्यकर्ताओं द्वारा संगठित होना है। मार्क्स के दिनों में अनौपचारिक कार्यकर्ता निश्चित रूप से संगठित हुए, कुछ मामलों में ट्रेड यूनियनों की स्थापना हुई जो आज तक भी कायम हैं। और आज के अनिश्चित और अनौपचारिक कार्यकर्ता भी संगठित हो रहे हैं, जहां यह कानूनी है वहां ट्रेड यूनियनों के साथ साथ एसोसिएशन, सहकारी समितियां और अन्य समूहों का भी गठन कर रहे हैं । वास्तव में, उन्होंने हाल के वर्षों में कुछ सबसे बड़ी वैश्विक मजदूर वर्ग की जीत हासिल की है: उदाहरण के लिए, घरेलू कामगारों के अधिकारों की पुष्टि करने वाले ILO के कन्वेंशन 189 को अपनाना, या भारत का हालिया कानून जो सड़क विक्रय /स्ट्रीट वेंडिंग को वैध बनाता है।

अनिश्चित अनौपचारिक श्रमिक कैसे संगठित होते हैं, इसके बारे में तीन चीजें विशेष रूप से विशिष्ट हैं। पहला, पूंजी के साथ उनका संबंध अक्सर जटिल होता है। असली नियोक्ता को उपसंविदा की परतों के द्वारा छुपाया जा सकता है, या श्रमिकों का मुख्य रूप से शक्तिशाली आपूर्तिकर्ताओं या बिचौलियों द्वारा शोषण किया जा सकता है। अधिकांश के पास अपेक्षाकृत कम संरचनात्मक आर्थिक उत्तोलन है – हड़ताल शायद एक प्रभावी रणनीति नहीं हो। और कई मामलों में सरकार को अनौपचारिक श्रमिकों के शोषण में फंसाया जाता है, जैसे कि जब अमेरिकी सरकार ब्रेसेरो कार्यक्रम के लिए शर्तें निर्धारित करती है, या जब पुलिस रेहड़ी–पटरी वालों को परेशान करती है या जबरन वसूली करती है। इन सभी कारणों से, अनिश्चित और अनौपचारिक श्रमिक अक्सर लाभ और सुरक्षा के लिए दबाव डालते हुए राज्य को निशाना बनाते हैं।

दूसरा, अनौपचारिक और अनिश्चित कार्य में सबसे अधिक केंद्रित समूह अभी भी वे हैं जो अन्य तरीकों से हाशिए पर हैं, विशेष रूप से महिलाएं, अधीनस्थ नस्लीय या जातीय समूह और प्रवासी। इस प्रकार, वे अक्सर इन पहचानों के आसपास उतना ही संगठित होते हैं जितना कि कार्य–आधारित पहचान के आसपास। कई मामलों में उनकी पहचान परस्पर विरोधी होती हैं, जिसमें विभिन्न पहचान शामिल होती हैं।

अंत में, यह तथ्य कि वे राज्य को अपनी ओर से कार्य करने की मांग करते हैं और यह तथ्य कि उनकी विविध और अंतरविरोधी पहचान हैं, का अर्थ है कि श्रमिकों के ये समूह अक्सर गठबंधन–निर्माण द्वारा शक्ति का निर्माण करते हैं–उदाहरण के लिए महिला आंदोलन, अप्रवासी अधिकार आंदोलन, नस्लीय वकालत संगठन, के साथ साथ संघ।

अनौपचारिक और अनिश्चित कामगारों के अधिकारों की रक्षा करना आज विश्व स्तर पर श्रमिक वर्ग की सबसे बड़ी चुनौती है। ये कामगार खुद मोर्चा संभाल रहे हैं। हम जैसे बाकी लोगो (श्रमिकों, विद्वानों और नागरिकों) को भी लड़ाई में शामिल होना चाहिए। ■

सभी पत्राचार क्रिस टिल्ली को <tilly@luskin.ucla.edu> पर प्रेषित करें

पेसिडिना (कैलिफोर्निया) सामुदायिक केंद्र पर दैनिक श्रमिकों एवं समर्थकों के साथ यूएस नेशनल डे लेबर ओर्गनइजिंग नेटवर्क (NDLON) के सह–कार्यकारी निर्देशक, पाब्लो अल्वराडो (चरम बायीं ओर), 2017।
श्रेयः पेसिडिना सामुदायिक केंद्र रोजगार केंद्र।

> ऑस्ट्रिया, जर्मनी और स्विट्जरलैंड में विवादास्पद देखभाल

ब्रिगिट औलेनबेकर, जोहान्स केपलर विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रिया और अर्थव्यवस्था और समाज (आरसी 02), निर्धनता, समाज कल्याण और सामाजिक नीति (आर सी 19), कार्य के समाजशास्त्र (आरसी 30) एवं महिला, लिंग और समाज (आरसी 32) पर आईएसए अनुसंधान समितियों की सदस्य; **अरंका वैनेसा बेनज़ा,** गोएथे विश्वविद्यालय, जर्मनी; **हेल्मा लुत्ज**, गोएथे विश्वविद्यालय, जर्मनी और महिला, लिंग और समाज (आरसी 32), बायोग्राफी एंड सोसाइटी (आरसी 38) पर आईएसए की अनुसंधान समितियों की सदस्य तथा नस्लवाद, राष्ट्रवाद, स्वदेशी और जातीयता पर आईएसए अनुसंधान समिति के अध्यक्ष (आरसी 05); **वेरोनिका प्रीलर**, जोहान्स केप्लर विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रिया और आईएसए आरसी 19 और आरसी 32 के सदस्य, एवं **कैरिन श्विटर** और **जेनिफर स्टेनर**, ज्यूरिख विश्वविद्यालय, स्विट्जरलैंड द्वारा

श्रेयः ईवा लंघनस।

> वृद्धजनों की घरेलू देखभालः देखभाल के उभरते नए बाजार एवं अनिश्चित प्रवासी कार्य

अन्य देशों की तरह ही ऑस्ट्रिया, जर्मनी और स्विट्जरलैंड भी उत्तरोत्तर "देखभाल अंतराल" का सामना कर रहे हैं। जैसे–जैसे उनकी आबादी बूढ़ी होती जा रही है, परिवारों के मध्य अनौपचारिक देखभाल क्षमता कम हो रही है। राज्य भी अपनी कल्याणकारी भूमिकाओं को वयस्कों पर केन्द्रित कर स्वयं को पुर्नगठित कर रहे है। जिसके चलते सरकारें सामाजिक सेवाओं के प्रावधानों, विशेष रूप से दीर्घकालिक वरिष्ठ देखभाल वाले क्षेत्र, से तेजी से अपने हाथ खींच रही है। इसके फलस्वरूप लाभ पर आधारित देखभाल का एक मॉडल उभरा है जो अंतर्राष्ट्रीय देखभाल व्यवस्थाओं में मध्यस्थता करता हैः देखभाल को मध्य और पूर्वी यूरोप में यूरोपीय संघ के नए सदस्य देशों से चक्रीय प्रवासियों (अधिकांश महिलाएं) को आउटसोर्स किया जाता है। ये कामगार वरिष्ठजनों की देखभाल करती हैं और उनके निजी घरों में एक समय में कुछ हफ्तों या महीनों के लिए (लिव–इन केयर) रहती हैं। देखभाल के तेजी से बढ़ते और उच्च रूप से प्रतिस्पर्धी बाजार में मध्यस्थ एजेंसियों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। हालांकि उन्होंने पूर्व में अनौपचारिक क्षेत्र को कुछ हद तक औपचारिक बना दिया है, इसने उनके काम करने की परिस्थितियों में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं किया हैः रहवासी देखभाल कामगारों से अक्सर चौबीसों घंटे सेवा में रहने की अपेक्षा की जाती है और उनके वेतन भी स्थानीय वेतन से काफी कम होते हैं। यद्यपि इन तीनों ही देशों में रहवासी देखभाल कार्य के एक अत्यधिक अनिश्चित क्षेत्र के रूप में उभरी है, इसके विभेदीकृत विनियमों ने सार्वजनिक बहस और आलोचना के लिए अवसरों को आकारित किया है।

> ऑस्ट्रियाः स्व–नियोजित देखभाल कर्मी

ऑस्ट्रिया में, रहवासी देखभाल एक स्व–नियोजित पेशे के रूप में मान्यता प्राप्त क्षेत्र है। यहां काम के घंटे या मजदूरी के नियम–कानून

> >

देखभाल कर्मियों पर लागू नहीं होते हैं। यह व्यवस्था परिवारों और ऑस्ट्रियाई कल्याणकारी राज्य के लिए एक लचीला और तुलनात्मक रूप से एक सस्ता समाधान प्रदान करती है। फिर भी, स्वरोजगार के इस मॉडल पर विवाद बना हुआ है। इसके विपक्ष में यह तर्क दिया जाता है कि स्वतंत्र बाजार के खिलाड़ियों के रूप में देखभाल कर्मियों के आदर्श के विपरीत– एजेंसियां काम की स्थितियों को बहुत ज्यादा प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, वे अधिकांशतः कीमतों के साथ–साथ वेतन निर्धारण भी करती हैं। स्व–संगठित देखभाल कर्मियों की पहलें फर्जी स्वरोजगार के रूप में दुष्प्रचार को समाप्त करने का अभियान भी जारी रखती है। "चैंबर ऑफ कॉमर्स" और एजेंसियां जो औपचारिक रूप से एजेंसियों और श्रमिकों दोनों का ही प्रतिनिधित्व करते हैं –वे मौजूदा मॉडल को और औपचारिक और पेशेवर बनाने के लिए आग्रह करते हैं। ऑस्ट्रियाई गुणवत्ता मुहर–002–24 जिसके लिए एजेंसियां स्वेच्छा से आवेदन कर सकती हैं, को एजेंसियों की लॉबिंग के परिणाम के रूप में देखा जा सकता है। यह उन एजेंसियों के पक्ष में बाजार की प्रतिस्पर्धा को अनुकूल वातावरण देने का एक सफल प्रयास है, जो खुद को न्यूनतम मानकों के लिए प्रतिबद्ध करती हैं। चूंकि गुणवत्ता मानकों का उद्देश्य देखभाल की गुणवत्ता (कार्य की गुणवत्ता के बजाय) में सुधार लाना है, यह मुहर केवल अप्रत्यक्ष रूप से काम करने की स्थिति को प्रभावित करती है और उन्हें अपने आप में एक समस्या के रूप में नहीं मानती है। हाल के वर्षों में बेहतर काम काजी परिस्थितियों के निर्माण के लिए ट्रेड यूनियनों और देखभाल क्षेत्र से जुड़े कर्मियों के संघर्ष तेज हुए है लेकिन इनके क्षेत्र में अभी तक काफी कम प्रभाव पड़ा है।

> जर्मनी: पोस्टेड देखभाल कर्मी

जर्मनी में, आमतौर पर लागू कानून के बाहर रहवासी देखभाल कर्मियों के लिए विशिष्ट कानून मौजूद नहीं है। यह कानूनी ढांचों की बहुलता में परिलक्षित भी होता है, जिनका उल्लेख एजेंसियां अक्सर करती हैं। अधिकांश एजेंसियां पोस्टिंग–मॉडल का ही उपयोग करती हैं: मेजबान देशों में देखभाल कर्मी एजेंसियों के माध्यम से ही नियोजित होते हैं जिन्हें कथित रूप से उनके सामाजिक सुरक्षा योगदान का भुगतान करना होता है। फिर भी एजेंसियां को जर्मनी में बुनियादी काम काजी परिस्थितियों (जैसे न्यूनतम वेतन और अधिकतम काम के घंटे), का पालन करना चाहिए, भले ही इन नियमों को आमतौर पर अनदेखा किया जाता है। देखभाल के काम का अंतरर्राष्ट्रीय चरित्र और निजी घरों में कार्यस्थल का विशिष्ट स्थान कार्य परिस्थितियों के पर्याप्त नियंत्रण में एक बड़ी बाधा है। इसके अलावा, श्रम संघों के प्रतिनिधि एवं अन्य हितधारक नियामक अंतर और श्रमिकों के लिए अनुवर्ती सामाजिक सुरक्षा की कमी की आलोचना अक्सर करते हैं। कानूनी निश्चितता प्राप्त करना भी इस उद्योग का एक केंद्रीय लक्ष्य है– जो व्यापार हितसंघ वीएचबीपी द्वारा प्रतिनिधित्व किया जाता है। इसके अलावा, एजेंसियां जर्मन दीर्घकालिक देखभाल क्षेत्र में एक नए स्तंभ के रूप में आधिकारिक रूप से स्वीकृत होने और उनके हित में कानून बनाने का निरन्तर प्रयास करती हैं। यह नीचे से इस क्षेत्र को संस्थागत बनाने यानि मुख्यधारा में लाने का एक प्रयास कहा जा सकता है। देखभालकर्मियों के लिए सोशल मीडिया संचार और अनौपचारिक ज्ञान के आदान–प्रदान का एक महत्वपूर्ण उपकरण बन गया है–लेकिन जर्मनी में राजनीतिक स्व–संगठन अब तक भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में ही हैं।

> स्विट्जरलैंड: कर्मचारियों की तरह ही देखभाल कर्मी

स्विट्जरलैंड में रहवासी देखभाल क्षेत्र को रोजगार की दृष्टि से एक औपचारिक रूप प्रदान किया गया है। स्विट्जरलैंड की कुछ मुख्य प्रमाणित एजेंसियां ही श्रमिकों को निजीघरों (कार्मिक ठेका) अथवा मध्यस्थ व्यवस्था के लिए ठेके पर दे सकती हैं जिसमें श्रमिकों को सीधे घरों (कार्मिक नियुक्ति) में नियोजित किया जाता है। ऑस्ट्रिया और जर्मनी के विपरीत यहाँ स्वरोजगार मॉडल व पोस्टिंग कानून में पूरी तरह निषिद्ध हैं। इसके अलावा, रहवासी देखभाल को दीर्घकालिक देखभाल व्यवस्था हेतु अतिरिक्त स्तंभ के रूप में संस्थाबद्ध नहीं किया गया है। यहां सरकार की वित्तीय सहायता (चिकत्सीय) नर्सिंग सेवाओं तक ही सीमित है। इसलिए लोगों को अपनी रहवासी देखभाल हेतु खर्च स्वयं वहन करना पड़ता है। श्रम कानून के संदर्भ में, निजी घरों में काम को संघीय कार्य अधिनियम से छूट दी गई है। इस का अर्थ यह है कि रहवासी देखभालकर्मियों को अधिकतम काम के घंटे या रात्रि कार्य के लिए अन्य श्रमिकों की तरह सुरक्षा का लाभ नहीं मिलता है। और जहाँ लागू कानून न्यूनतम प्रति घंटा वेतन को स्पष्ट परिभाषित करता है, यह एक तरह से अप्रभावी ही है। क्योंकि ऑन–कॉल ड्यूटी बाध्यकारी रूप से विनियमित नहीं है। हाल के वर्षों में एक नियामक और महत्वपूर्ण मीडिया बहस बनी हुई है जिसने देखभाल क्षेत्र की अनिश्चित कामकाजी परिस्थितियों को समस्याग्रस्त कर दिया है। अन्य दो देशों की तुलना में (स्वयं–)संगठित और संघीकृत ढ़ाचें के देखभालकर्मियों ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

> निष्कर्ष: आंतरिक रूप से समस्याग्रस्त मश्चडल के रूप में रहवासी देखभाल

इन तीनों देशों की तुलना से पता चलता है कि– विशेषकर जर्मनी और ऑस्ट्रिया में – दलाल/मध्यस्थ एजेन्सियाँ और उनके संगठन इस क्षेत्र के नियमों–कानूनों को आकार देने में ताकतवर खिलाड़ी बन गए हैं। इस बीच, प्रवासी श्रमिकों की आवाजें लगभग नदारद रहीं है। स्विस मामले में, रोजगार संबंध के रूप में रहवासी देखभाल के औपचारीकरण ने श्रमिकों और संघ के प्रतिनिधित्व के जमीनी स्तर पर आयोजन की सुविधा दी है। परिणामतः देखभाल कर्मचारियों की समस्याएं लोगों के ध्यान में आयी है।

इन तमाम अंतरों के बावजूद, रहवासी देखभाल मॉडल आंतरिक रूप से इन तीनों देशों में आने–जाने वाले प्रवासी कामगारों के लिए अत्याधिक अनिश्चिताओं वाली कामकाजी परिस्थितियों पर आधारित है। साथ ही, यह मॉडल मध्य और पूर्वी यूरोप में उपलब्ध देखभाल सेक्टर के उपलब्ध संसाधनों को क्षीण करता है। इन अंतर्दृष्टियों के आधार पर हम दीर्घकालिक देखभाल व्यवस्था में रहवासी देखभाल को एक मजबूत स्तंभ के रूप में और अधिक संस्थाबद्ध बनाने के खिलाफ आगाह करते हैं। यह केवल कभी भी एक शोषक त्वरित सुधार ही हो सकता है। वहनीय रूप से ''देखभाल अंतराल'' का समाधान करने के लिए देखभाल कार्य की एक अधिक आधारभूत पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता है ताकि वृद्धजन देखभाल लिव–आउट कार्मिकों, जो स्थानीय रूप से रहने के लिए पर्याप्त आय कमा सके, द्वारा प्रदान की जा सके। ■

सभी पत्राचार
ब्रिगिट औलेनबैकर को <brigitte.aulenbacher@jku.at>
हेल्मा लुत्ज को <lutz@soz.uni-frankfurt.de>
कैरिन श्विटर को <karin.schwiter@geo.uzh.ch> पर प्रेषित करें।

> डिजिटल युग में काम का भविष्य

रूथ कास्टेल–ब्रैंको, साराह कुक, हन्ना डावसन, यूनिवर्सिटी ऑफ विटवाटरसैंड, दक्षिण अफ्रीका, और **एडवर्ड वेबस्टर**, यूनिवर्सिटी ऑफ विटवाटरसैंड और आई एस ए की श्रम आंदोलनों पर शोध समिति (आर सी 44) के पूर्वाध्यक्ष द्वारा

मार्च 2020 में कैम्पस स्क्वायर, जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में कूरियर अनौपचारिक कार्य क्षेत्र। श्रेयः फिकिले मसिकाने।

यह व्यापक रूप से यह दावा किया जा रहा है कि डिजिटल श्रम प्लेटफार्मों का उदय काम के भविष्य को नया आकार दे रहा है। जहाँ कुछ लोग "प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था" – ऑनलाइन वेब–आधारित प्लेटफार्म कार्य जो सुदूर से सम्पादित होते हैं व विशिष्ट क्षेत्र में लोकेशन–आधारित प्लेटफॉर्म–कार्य दोनों के स्वतंत्रता और लचीलेपन के अपने वादे के कारण प्रशंसा करते हैं, शोध दर्शाता है कि प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था श्रम के अल्पकालिकरण को गहरा कर रही है और व्यावसायिक स्वास्थ्य व सुरक्षा जैसे जोखिमों को श्रमिकों पर स्थानांतरित कर रही है।

अधिकांश बहसों से यही निष्कर्ष निकलता है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म्स "नए" ढ़ंग के कार्य का सृजन कर रहे हैं। यद्यपि, इनमें से अधिकतर नौकरियां लंबे समय से अस्तित्व में हैं–मीटर वाली टैक्सीयां, रेस्तरां भोजन वितरण सेवाएं, और घरेलू सफाईकर्मी। तो फिर, गिगवर्क के उभरते नए रूपों में ऐसा "नया" क्या है? और औपचारिक और अनौपचारिक कामगार कौन है के अर्थ को डिजिटल प्लेटफॉर्म कैसे बदल रहे हैं?

> ग्लोबल साउथ में प्लेटफॉर्म कार्य में "नया" क्या है ?

ग्लोबल साउथ की अर्थव्यवस्थाओं के बारे में शायद सबसे खास बात है कि यहाँ अनौपचारिकता का उच्च स्तर पाया जाता है। गिगवर्क के "नए" रूप ऐसे संदर्भों में विकसित होते है जहां अनौपचारिक कार्य संबंधों अपवाद नहीं बल्कि सामान्य होते हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म में श्रम पर आईएलओ की एक रिपोर्ट बताती है कि अफ्रीका में 80 प्रतिशत से अधिक आबादी की आजीविका मुख्यतः अनौपचारिक गतिविधियों से संचालित होती है।

अनौपचारिक कार्य संबंधों को लंबे समय से औपचारिक रोजगार के विपरीत परिभाषित किया जाता रहा है – यानि, नियमित के बजाय अल्पकालिक नौकरियाँ, एक लिखित एवं मानकीय अनुबंध की अनुपस्थिति, कोई सामाजिक लाभ या सुरक्षा नहीं, और सामूहिक एजेंसी एवं प्रतिनिधित्व का अभाव। वास्तव में, अनौपचारिक कार्य में विविध रोजगार व्यवस्थाओं की विशेषता वाली गतिविधियों की श्रेणी शामिल है। चेन[1] इनको *स्वयं–खाता संचालकों* के रूप में वर्गीकृत करते हैं जिनका उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व है, वे स्वायत्त रूप से कार्य करते हैं और अपने माल को सीधे बाजार में बेचते हैं; वे *स्वयं–खाता संचालक* जो वाणिज्यिक संबंधों के रूप में प्रच्छन्न रोजगार संबंधों में अंतर्निहित हैं। दूसरे *वेतनभोगी* कर्मचारी हैं जो नियोक्ता की चालाकी के कारण श्रम और सामाजिक सुरक्षा के दायरे से बाहर रखे गए है। लिंग, नस्ल और अन्य संरचनात्मक पदानुक्रम अक्सर इन श्रेणियों में स्पष्ट परिलक्षित होते हैंः पुरुष स्वयं–खाता कार्य में हावी रहते हैं, जहां आय अधिक होती है और गरीबी में फिसलने का जोखिम निम्नतम होता है, जबकि महिलाएं कम आय वाली गतिविधियों में संकेंद्रित होती हैं।

प्लेटफॉर्म कार्य अनौपचारिकता की इन विभिन्न विशेषताओं को पुनःप्रस्तुत करता है। प्लेटफॉर्म कर्मचारियों को *स्वतंत्र* ठेकेदारों के रूप में आसानी से गलत ढ़ंग से वर्गीकृत कर दिया जाता है, जिसके चलते सवैतनिक अवकाश, अन्य लाभ (मातृत्व लाभ सहित), सामाजिक सुरक्षा या व्यावसायिक एवं स्वास्थ्य बीमा तक इनकी पहुंच का अभाव रहता है। फिर भी, वे आर्थिक रूप से प्लेटफॉर्म पर *निर्भर* है और उसके ऐप पर उनका बहुत कम नियंत्रण रहता है। वास्तव में, जैसा कि वेबस्टर और मसिकाने[2] दर्शाते हैं, श्रमिक ऐप के "अधिनायकवादी एल्गोरिथम प्रबंधन" के अधीन रहते हैं जो कार्यों का आवंटन करता है, उनके कार्य–संपादन को ट्रैक करता है, वेतन निर्धारित करता है, और रोजगार को एकपक्षीय रूप से समाप्त कर सकता है।

उदाहरण के तौर पर स्थान–आधारित कार्य (जैसे डिलीवरी) मुख्यतः युवा पुरुषों से जुड़ी एक गतिविधि है, जो लंबे कार्य के घंटे और आमने–सामने के संपर्क की विशेषता द्वारा चिन्हित होती है। हालांकि इसमें मजदूरी कम है पर विकल्पों की तुलना में कमाई बेहतर होती हैं; और चूंकि मांग और आपूर्ति स्थानीय संदर्भों में

> >

उत्पन्न होती है इसलिए श्रमिकों के लिए सामूहिक रूप से संगठित होना आसान हो जाता है। वहीं इसके विपरीत ऑनलाइन वेब–आधारित कार्य (जैसे संपादन) ग्लोबल साउथ में अदृश्य श्रमिकों द्वारा उन ग्राहकों के लिए किया जाता है जिनमें से अधिकांश ग्लोबल नॉर्थ में हैं। कम और अधिक लचीले कामकाजी घंटों की विशेषता के चलते यह महिलाओं को अधिक आकर्षित करता है जिन्हें उत्पादक और प्रजनन गतिविधियों को एक साथ संभालना पड़ता है।

डिजिटल प्लेटफॉर्मः विविध होने के साथ और काफी केंद्रित हैंः ऊपर उल्लेखित आईएलओ रिपोर्ट–2021 के अनुसार डिजिटल प्लेटफॉर्म से उत्पन्न होने वाले राजस्व का 70 प्रतिशत हिस्सा अकेले संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन को जाता है। जहाँ यह राष्ट्रीय स्तर पर छोटे और मध्यम उद्यमों को कमजोर कर सकता है, यह शक्ति के नए स्रोत भी निर्मित करता है। दक्षिण अफ्रीका के गौतेंग में, उबर ईट्स राइडर्स हाइब्रिड कलेक्टिव्स में संगठित हो रहे हैं, जो राष्ट्रीय तर्ज पर असतत पारस्परिक सहायता संघों के रूप में उत्पन्न हुए लेकिन वे एक क्षेत्र–व्यापी नेटवर्क के रुप में स्थापित हुए हैं। व्हाट्स एप के माध्यम से जुड़ कर उन्होंने डिजिटल प्रत्यक्ष कार्रवाई का खजाना विकसित किया है जिसमें सामूहिक रूप से लॉग ऑफ करके अपने श्रम को रोकना सम्मिलित है। इस बीच, कोलंबिया में रप्पी (RAPPI) डिलीवरी वर्कर्स ने एनजीओ और सेंट्रल वर्कर्स यूनियन के सहयोग से एक यूनियन ऐप "यूएनआईडीएपीपी" विकसित किया और वे बहुराष्ट्रीय प्लेटफार्म[3] को लक्षित करने वाली पारदेशीय प्रत्यक्ष कार्यवाही में सफलतापूर्वक संलग्न हुए। युगांडा में अमलगमेटेड ट्रांसपोर्ट एंड जनरल वर्कर्स यूनियन ने *बोडा–बोडा* चालकों के लिए एक ऐप विकसित करने में सहयोग किया जिसके परिणामस्वरूप उन्होनें नाटकीय रूप से अपनी सदस्यता का विस्तार किया और कोरियर कर्मियों की कार्य स्थितियों में बड़े स्तर पर सुधार हुआ।

जहाँ अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में हस्तक्षेप अक्सर उद्यमों के विकास पर केंद्रित रहे हैं, आईएलओ कन्वेंशन 204 इस बढ़ती आम सहमति पर प्रकाश डालता है कि इनमें अनौपचारिक श्रमिकों के लिए कड़ी मेहनत से प्राप्त श्रम और सामाजिक सुरक्षा के विस्तार को ध्यान में रखा जाए। यूनाइटेड किंगडम में सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला दिया कि उबर चालक वैतनिक अवकाश, न्यूनतम मजदूरी तथा पेंशन के हकदार हैं। दक्षिण अफ्रीका में प्रतिस्पर्धा आयोग ने छोटे और मध्यम उद्यमों पर प्लेटफार्मों के प्रभाव की जांच शुरू की है।

> भविष्य में क्या होगा?

दो व्यापक रास्तों की पहचान की जा सकती हैः संचालन कैसे होगा के बारे में बिना किसी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समझौते के विदेशी स्वामित्व वाली तकनीकी दिग्गजों का वर्चस्व गहरा होगा। इससे कुछ अनौपचारिक नौकरियां तो पैदा होंगी पर कर्मचारी औपचारिक रोजगार के किसी भी सुरक्षा कवच या लाभ के बिना कम वेतन वाले कठिन परिश्रम में उलझे रहेंगे। विदेशों में मुनाफे और करों को बरकरार रखने के साथ, इसकी ग्लोबल साउथ के पुनः उपनिवेशीकरण के एक रूप में व्याख्या जा सकती है ।

प्लेटफॉर्म वर्कर्स और उनके संगठनों की सक्रिय भागीदारी के साथ बनाया गया "डिजिटल सोशल कॉम्पेक्ट" एक वैकल्पिक मार्ग हो सकता है। इसमें श्रमिकों की सुरक्षा के तमाम नियम–कानून सहित सुसंगत वैश्विक और राष्ट्रीय नीतियां शामिल होंगी। यह आशावादी मार्ग अनौपचारिक श्रमिकों के लिए श्रम और सामाजिक सुरक्षा के विस्तार की संभावनाएं खोलता है। ■

सभी पत्राचार रूथ कास्टेल–ब्रैंको को <Ruth.Castel-Branco@wits.ac.za> पर प्रेषित करें।

1. Chen, M. (2012) "The Informal Economy: Definitions, Theories and Policies." WIEGO Working Paper, Number 1.
2. Webster, E and F. Masikane (2020) "'I just want to survive': The case of food delivery couriers in Johannesburg. " Southern Centre for Inequality Studies.
3. Velez, V. (2020). 'Not a fairy tale: unicorns and social protection of gig workers in Colombia.' SCIS Working Paper, Number 7.

> डिकोडिंग एल्गोरिथम नियंत्रण

सैंडिसवा मापुकाटा, शफी वेराचिया, यूनिवर्सिटी ऑफ विटवाटरसैंड दक्षिण अफ्रीका और **एडवर्ड वेबस्टर**, यूनिवर्सिटी ऑफ विटवाटरसैंड और आईएसए रिसर्च कमेटी ऑन लेबर मूवमेंट्स, आरसी (44) के पूर्व अध्यक्ष द्वारा

अर्बु द्वारा चित्रण।

द जस्टिस लीग सुपरहीरो का एक समूह है, जिसमें बैटमैन और वंडरवुमन शामिल हैं। इतना ही नहीं हैं यह समूह सुपरविलेन डार्कसीड से कृत्रिम काल्पनिक दुनिया को बचाने का प्रयास करते हैं। 2016 में स्थापित एल्गोरिथम जस्टिस लीग (एजेएल) भी इसी तरह एक अधिक न्यायसंगत दुनिया की आकांक्षा रखती है। खासकर इस दिशा में कि कृत्रिम बुद्धि (एआई) का सदुपयोग कैसे किया जाए। यह समूह एल्गोरिथम नियंत्रण से लड़ने में चार प्रमुख सिद्धांतों को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करता है। सकारात्मक सहमति, सार्थक पारदर्शिता, निरंतर निरीक्षण और जवाबदेही व आवश्यक आलोचना।

यद्यपि इसे कृत्रिम बुद्धि कहा जा रहा है पर यह कृत्रिम से ज्यादा कुछ है। जैसा कि केट क्रॉफर्ड *एटलस ऑफ एआई* में लिखते हैं, "एआई" सन्निहित और भौतिक दोनों है"। यह एआई की भौतिकता है जिसमें श्रमिकों पर बढ़ते नियंत्रण के उद्भवको देखा जा सकता है। नियंत्रण का एक रूप जो एल्गोरिथम नियंत्रण के रूप में परिभाषित किया जा सकता हैं। इस लेख के माध्यम से एल्गोरिथम नियंत्रण की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए, हम यह जानने का प्रयास कर रहे हैं कि यह श्रमिकों को कैसे प्रभावित कर रहा है और वे कैसे इसके प्रतिरोध में आ रहे हैं। लेख एल्गोरिथम नियंत्रण के लिए कार्यकर्ता के नेतृत्व वाले प्रतिरोध पर कुछ सुझावों के साथ पूरा होता हैं ।

> एल्गोरिदम है क्या?

दुनियां भर में सभी हितधारक (सरकारें, शिक्षाविद् और कार्यकर्ता) इस बात से जूझ रहे हैं कि एल्गोरिथम नियंत्रण की प्रणालियाँ दुनिया को कैसे बदल रही हैं। एल्गोरिथम एक सारहीन रूप में मौजूद है । इस सच्चाई के बावजूद कि इसके अस्तित्व और उपयोग के भौतिक परिणाम बहुत स्पष्ट हैं। एल्गोरिथम एक प्रक्रिया है या यह नियमों का एक समुच्चय है जिसका किसी गणना या अन्य समस्या–समाधान कार्यों में पालन किया जाता है। विशेष रूप से कंप्यूटर की दुनियां में क्लाउड कंप्यूटिंग जैसी तकनीकों का उदय, जो इंटरनेट पर कंप्यूटिंग सेवाओं के वितरण की अनुमति देता है (उदाहरण के लिए अमेजॅन वेब सेवाएं)। एल्गोरिदम संगठनों और व्यवसायों के संचालन में उनके बहुत से पहलुओं को स्वचालित करने में सक्षम बनाता है। एक तर्क यह भी है कि एल्गोरिदम तटस्थ हैं। हालांकि काम का एक बढ़ता हुआ दायरा (इसके लिए रूहा बेंजामिनः *रेस आफ्टर टेक्नोलॉजी* देखें) दिखाता है कि एल्गोरिदम कैसे पक्षपाती और व्यवहार में भेदभावपूर्ण हो सकते हैं। क्योंकि उन्हें मानदंडों और निर्देशों के एक सेट के आधार पर मानव प्रोग्रामर द्वारा कोडित किया जाता है। यदि उनमें पूर्वाग्रह भर दिया जाता है तो एल्गोरिदम भेदभाव के मौजूदा पैटर्न को ही स्वचालित करता है। यह बड़ी कंपनियों की मौजूदा व्यवस्था में विशेष तौर पर देखा गया है,

>>

विशेष रुप से जिन्हें गोरे लोग संचालित कर रहे हैं। अपनी पुस्तक *"अल्गोरिदम ऑफ ऑप्रेशन"* में सफिया नोबल यही चर्चा करती है कि कैसे गूगल के एल्गोरिदम अश्वेत महिलाओं और लड़कियों के साथ भेदभावपूर्ण रहे हैं।

> एल्गोरिथम नियंत्रण: वास्तविकता

औद्योगीकरण के इतिहास में एल्गोरिथम ने पहले से कहीं अधिक निरन्तर काम पर नियंत्रण को है। एल्गोरिथम श्रम प्रक्रिया पर नियंत्रण के माध्यम से लाभ को अधिकतम करने का काम करता है। इस का एक अच्छा उदाहरण है जिसे मार्क्स "प्रशंसा में मूल्यांकन" कहते हैं। एल्गोरिदम काम पूरा करने में श्रमिकों की गति को बढ़ाने के लिए डिजाइन किये जाते हैं। यदि प्लेटफॉर्म कार्यकर्ता एल्गोरिथम के मानकों के अनुरुप कार्य नहीं करते हैं तो प्रबंध–तंत्र के पास श्रमिकों के पारिश्रमिक को तुरंत बदलने और उन्हें उक्त प्लेटफॉर्म से हटाने की शक्ति है। दिसंबर 2020 में दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में उबर ड्राइवरों ने उबर ऐप को अक्षम करते हुए सवारी के अनुरोध को अस्वीकार कर अपना विरोध दर्ज कराया। ड्राइवरों की शिकायतों की प्रतिक्रिया में उबेर प्रबंध–तंत्र ने उनके खातों को अवरुद्ध करने का एक अस्पष्ट तरीका निकाला। जिसमें असमान तरीके से ड्राइवरों द्वारा अर्जित शुल्क को एक तरफा तरीके से तय कर उबर द्वारा लागू किया गया।

द उबेराइजेशन ऑफ वर्क में एडवर्ड वेबस्टर दिखाते हैं कि कैसे उबेर जैसी कंपनियों के लिए एल्गोरिदम उन्हें उच्च मूल्यवर्धित गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाता है। साथ ही साथ प्रौद्योगिकी–सक्षम आउटसोर्सिंग और उप–अनुबंध प्रथाओं के उपयोग के माध्यम से मुख्यधारा की रोजगार देन–दारियों से विनिवेश करता है। इस तरह ये कंपनियां एकाधिकारवादी प्रवृत्तियों को प्रदर्शित करती हैं और कॉर्पोरेट प्रशासन के मूल्य–मानकों के साथ–साथ मानक रोजगार प्रथाओं को भी ठेंगा दिखाती हैं।

एल्गोरिथम नियंत्रण के बारे में खास बात यह है कि यह अदृश्य है और पंहुच से परे है। सामान्यतः किसी प्लेटफॉर्म के कार्यकर्ताओं की पंहुच एल्गोरिथम के सोर्स कोड तक नहीं होती है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) की *विश्व रोजगार और सामाजिक आउटलुक रिपोर्ट–2021* बताती है कि "एक एल्गोरिथम के अंतर्निहित स्रोतकोड तक पहुंच ही यह निर्धारित करने का एकमात्र तरीका है कि क्या वह एल्गोरिथम ऐसे परिणाम उत्पन्न कर रहा है जो प्रतिस्पर्धा–विरोधी और भेदभावपूर्ण हैं। विश्व व्यापार संगठन के नियमोनुसार व्यापार गोपनीयता कानूनों और बौद्धिक संपदा नियमों के चलते इस स्रोतकोड तक पहुंचना मुश्किल है। अंतर्राष्ट्रय श्रम संगठन (ILO) आगे यह तर्क देता है कि सूचना विषमता एल्गोरिथम मालिकों और एल्गोरिथम विषयों के बीच शक्ति के असंतुलन को और बढ़ाती है।"

> एल्गोरिथम नियंत्रण: प्रतिरोध

यद्यपि एल्गोरिथम नियंत्रण मुश्किल प्रतीत होता है क्योंकि कर्मचारी स्वयं अपनी कार्यस्थितियों पर नियंत्रण करने के लिए एल्गोरिदम का उपयोग कर रहे हैं। सबकी सहमति से स्पेन ने राइडर कानून अपने यहां पारित कर लिया है जो डिलीवरी राइडर्स को डिजिटल प्लेटफॉर्म के कर्मचारियों के रूप में मान्यता प्रदान करता है। साथ ही डिजिटल प्लेटफॉर्म के लिए यह अनिवार्य है कि वे इस बारे में पारदर्शी हों कि उनके एल्गोरिदम काम करने की परिस्थितियों को कैसे प्रभावित करते हैं। एल्गोरिथम नियंत्रण और इसके प्रतिरोध पर चर्चा करते हुए उपभोक्ताओं को याद रखना भी महत्वपूर्ण है। क्यांकि जब एल्गोरिदम व्यक्तिगत डेटा का इस्तेमाल करता है तो उपभोक्ता भी मूल्य के उत्पादक बन जाते हैं। यह तर्क दिया जा सकता है कि तमाम बड़ी कंपनियों का उपभोक्ता विभिन्न प्लेटफार्मों का उपयोग करते समय अवैतनिक श्रम करता है। यह तर्क उपभोक्ताओं की स्थिति को बड़े कारोबारी समूहों के प्रबंधकों की तुलना में श्रमिकों की स्थिति के करीब लाता है।

बिग–टेक कंपनियों द्वारा एल्गोरिथम नियंत्रण की तमाम अभिव्यक्तियों के प्रतिरोध के साथ–साथ शोधकर्ताओं को स्थान के महत्व पर विचार करने की आवश्यकता है। विभिन्न स्थानिक संदर्भों में एल्गोरिथम नियंत्रण की प्रणालियां अपनी विशिष्टताएं रखती हैं। राष्ट्र से आगे भी इन अंतरों पर विचार करना महत्वपूर्ण है। ग्लोबल नॉर्थ और ग्लोबल साउथ के बीच मौजूद असमानताओं को देखते हुए, दोनों संदर्भ महत्वपूर्ण विशिष्टताओं को सामने लाते हैं। जो एल्गोरिथम नियंत्रण के विभिन्न रूपों का विरोध करने के आसपास इस बातचीत को और गंभीर बनाते हैं। इस पर भी विचार करना महत्वपूर्ण है कि काम के भविष्य की एक अवधारणा कैसे विकसित की जाए जो कंपनी पर कर्मचारियों को प्राथमिकता देती हो। कैथीओनील ने "वेपन्स ऑफ मैथ डिस्ट्रक्शन" में इसे बेहतर तरीके से समझाते हुए लिखा हैं कि:

> *"बिग डेटा प्रक्रियाएं अतीत को संहिता बद्ध करती हैं। वे भविष्य का आविष्कार नहीं करती हैं। ऐसा करने के लिए नैतिक कल्पना की आवश्यकता होती है, और यह केवल मनुष्य ही कर सकता है। हमें अपने एल्गोरिदम में स्पष्ट रूप से बेहतर मूल्यों को समावेशित करना होगा, जिससे नैतिक नेतृत्व का पालन करने वाले बिगडेटा मॉडल तैयार किए जा सकें। कभी–कभी इस का मतलब होगा, लाभ के आगे निष्पक्षता रखना"।* ■

सभी पत्राचार सैंडिसवा मापुकता को <sandiswa.mapukata@wits.ac.za>,
शफी वेराचिया को <mohammed.verachia@wits.ac.za> और
एडवर्ड वेबस्टर को <Edward.Webster@wits.ac.za> पर प्रेषित करें।

> ऑनलाइन श्रम प्लेटफॉर्म्स :

बिना जवाबदेही के शक्ति?

केले हॉवसन, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, यूके, **पैट्रिक फ्यूरस्टीन**, सोशल साइंस रिसर्च सेंटर बर्लिन, जर्मनी, **फंडा उस्टेक–स्पिल्डा**, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, यूके, **एलेसियो बर्टोलिनी**, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, यूके, **हेंना जोह्नस्टन**, नॉर्थईस्टर्न विश्वविद्यालय, यूएसए और **मार्क ग्रैहम**, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, यूके द्वारा

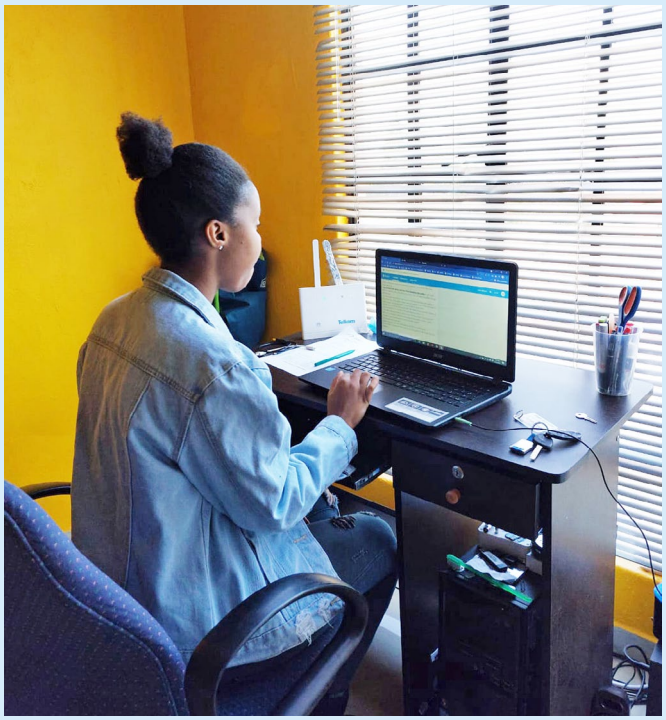

ऑनलाइन गिग वर्कर, या ''क्लाउडवर्कर्स'' एक प्लेटफॉर्म इंटरफेस के माध्यम से क्लाइंट्स से जुड़ते हैं, जो लेनदेन से किराया निष्कर्षित करते हैं, और अक्सर श्रम प्रक्रिया पर उच्च स्तर का नियंत्रण रखते हैं।
श्रेयः फेयरवर्क प्रोजेक्ट।

कोविड–19 महामारी ने ज्ञान श्रमिकों के लिए दूरस्थ कार्य के व्यापक सामान्यीकरण को संचार, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, एल्गोरिथम प्रबंधन व कार्य आवंटन, और श्रमिकों की निगरानी सहित इस संक्रमण काल को सुविधाजनक बनाने के लिए डिजिटल उपकरणों में प्रगति के साथ प्रेरित किया है। जिस प्रकार महामारी ने श्रम बाजारों में कई पूर्व–मौजूद असमानताओं पर प्रकाश डाला है तथा इसे गहरा कर दिया है, ऐसे व्यवसाय, जो दूरस्थ रूप से काम करने में सक्षम हैं, और कम वेतन वाली सेवा नौकरियां जो दूरस्थ से नहीं की जा सकती हैं, और जिनमे श्रमिकों को क्वारंटाइन करते हुए या अलग–थलग रहने के दौरान वायरस के संपर्क में आने व आय के नुकसान के दोहरे जोखिमों का सामना करना पड़ा है, के मध्य एक चिन्हित विभाजन स्पष्ट हो गया है ।

जहाँ दूर से काम करने की क्षमता रखने वालों, और जिनके काम को व्यक्तिगत रूप से किया जाना आवश्यक है, के मध्य असमान श्रम बाजार स्तरीकरण महामारी की शुरुआत के बाद से और तीखे हो गए हैं, परन्तु इस तथ्य की कम व्यापक रूप से चर्चा की गई है कि सभी दूरस्थ श्रमिक सापेक्ष सुरक्षा का लाभ नहीं ले पाते हैं। वास्तव में, कोविड–19 के उद्भव के बाद से ऑनलाइन गिग अर्थव्यवस्था फली–फूली है। यद्यपि श्रम के ये रूप कई लोगों की दिन–प्रतिदिन की सुविधा में योगदान करते हैं, परन्तु वे कम दिखाई देते हैं।

> क्लाउडवर्क में श्रम नियंत्रण

ऑनलाइन गिग वर्क ''भौगोलिक रूप से बंधे'' गिग वर्क जैसे राइड–हेलिंग, फूड डिलीवरी और क्लीनिंग (उबर, डीडी, डिलिवरू आदि कुछ प्रसिद्ध उदाहरण हैं) के साथ निर्धारक विशेषताओं को साझा करता है। ऑनलाइन गिग वर्कर, या ''क्लाउडवर्कर्स'' ग्राहकों से एक प्लेटफॉर्म इंटरफेस के माध्यम से जुड़ते हैं, जो लेनदेन से किराए को निकालता है, और अक्सर श्रम प्रक्रिया पर उच्च स्तर का नियंत्रण रखता है। प्लेटफॉर्म्स कार्य, जिसमें कार्य आवंटन, भुगतान और अनुशासनात्मक कार्रवाइयों के एल्गोरिथम प्रबंधन शामिल हैं, कैसे किया जाता है, को नियंत्रित करते हैं। भौगोलिक रूप से जुड़े काम में संलग्न अपने समकक्षों की तरह, वे श्रमिकों को स्वतंत्र ठेकेदारों या स्वरोजगार के रूप में अनुबंधित करते हैं, जिससे उन्हें अधिकांश अधिकार क्षेत्रों में प्रमुख रोजगार सुरक्षा से जैसे न्यूनतम वेतन, रुग्णता वेतन, अभिवावक अवकाश और पेंशन से बाहर रखा जाता है।

हालांकि, टैक्सी, डिलीवरी और सफाई क्षेत्रों में अपने समकक्षों के विपरीत, क्लाउडवर्क प्लेटफॉर्म ऐसे काम में मध्यस्थता करते हैं जो सैद्धांतिक रूप में दुनिया में कहीं से भी इंटरनेट कनेक्शन के साथ किया जा सकता है। वे सीमा– पार संबंधों के एक जटिल वेब की सुविधा प्रदान करते हैं, और एक वैश्विक –पैमाने पर श्रम बाजार बनाने के लिए सिद्धांतित किए गए हैं। यह गतिशीलता श्रमिकों के लिए नए अवसर पैदा करती है, लेकिन साथ में ही यह कमजोरियों को भी जन्म देती है और विशिष्ट तरीकों से श्रमिकों को जोखिम में डालती है।

सबसे पहले, प्लेटफॉर्म्स असंख्य अधिकार क्षेत्रों में श्रमिकों और ग्राहकों के बीच संबंधों में लगातार मध्यस्थता कर रहे हैं, और इससे उन्हें विनियमन में काबू करना मुश्किल हो जाता है। उनके पास बहुत कम अचल संपत्ति होती है, और वे अपने कर्मचारियों से संविदात्मक दूरी बनाए रखते हैं। इस तरलता और क्षणिकता का

>>

मतलब है कि वे श्रमिकों और व्यापक जनता की रक्षा के लिए बनाए गए स्थानीय कानून के साथ–साथ कर और प्रतिस्पर्धा व्यवस्था से बच सकते हैं।

यही गतिकी श्रमिकों की संरचनात्मक शक्ति को दबाने का कार्य करती है। श्रमिकों के लिए संगठित होना, एकजुटता का निर्माण करना और अपनी कार्य स्थितियों में सुधार के लिए सामूहिक कार्रवाई करना विशेष रूप से कठिन होता है, जबकि वे परमाणुकृत, भौगोलिक रूप से बिखरे हुए, और प्लेटफॉर्म्स के डिजाइन द्वारा एक–दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा में हों। वैश्विक ऑनलाइन श्रम प्लेटफार्मों के लिए सामूहिक सौदेबाजी की सुविधा प्रदान करने वाले राष्ट्रीय नियामक ढांचे को लागू करना मुश्किल है। क्लाउडवर्क में श्रमिकों और सार्वजनिक जवाबदेही की औपचारिक संरचनाओं की अनुपस्थिति प्लेटफॉर्म्स को शर्तों को निर्धारित करने, कार्य स्थितियों को आकारित करने और अंततः अपनी इच्छानुसार जिम्मेदारी या गैर–जिम्मेदार तरीके से व्यवहार करने की भारी शक्ति देती है।

अधिकांश क्लाउडवर्क प्लेटफॉर्म्स में मानक रोजगार की तुलना में प्रवेश में कम बाधाएं हैं। यह उन लोगों को बहुत आवश्यक अवसर प्रदान कर सकता है जिन्हें श्रम बाजारों में समान भागीदारी से बाहर रखा गया है – जैसे कि ग्लोबल साउथ में श्रमिक, उच्च देखभाल और घरेलू कर्तव्यों वाले लोग (मुख्य रूप से महिलाएं), प्रवासी श्रमिक, अल्पसंख्यक जातीय समुदाय और विकलांग श्रमिक। हालांकि, अधिकांश अंतरराष्ट्रीय क्लाउडवर्क प्लेटफॉर्म्स श्रम के एक महत्वपूर्ण अधिपूर्ति का नामांकन करते हैं। यह ग्राहकों को जल्दी और आसानी से श्रमिकों को खोजने में मदद करता है, लेकिन इसका मतलब नौकरी की उपलब्धता और मजदूरी को उन श्रमिकों के लिए दबा दिया जाता है, जो सीमित संख्या में नौकरियों के लिए तीव्र और बढ़ती प्रतिस्पर्धा में हैं।

उन क्लाउडवर्क प्लेटफॉर्म पर जहां कार्य विशेष रूप से अल्पकालिक होते हैं, जिन्हें ''माइक्रोटास्क'' प्लेटफॉर्म (जैसे माइक्रोवर्कर्स, अमेजॅन मैकेनिकल तुर्क और एपेन) के रूप में जाना जाता है, कामगार बड़ी परियोजनाओं में भाग ले रहे हो सकते हैं, उदाहरण के लिए, डेटासेट को एनोटेट करके मशीन लर्निंग सिस्टम के लिए प्रशिक्षित करना। इन परियोजनाओं को बहुत छोटे–छोटे कार्यों में विभाजित किया गया है जिन्हें पूरा होने में कुछ ही सेकंड लगते हैं। यहां, दर्जनों देशों के सैकड़ों कार्यकर्ता बहुत कम समय में, एक ग्राहक के लिए एक परियोजना को पूरा करने में योगदान करते हैं। यह अत्यंत बारीक आउटसोर्सिंग अंतिम उत्पाद से श्रम की स्थितियों को पूरी तरह से अस्पष्ट करने का काम कर सकती है, जिससे क्लाउडवर्क की अदृश्यता में योगदान होता है, जो बदले में श्रमिकों की शक्ति को खत्म करता है, खासकर इसलिए क्योंकि, व्यक्तिगत श्रमिकों को बहुत आसानी से नौकरी से निकाला जा सकता है और प्रतिस्थापित किया जा सकता है।

चूँकि क्लाउडवर्कर्स के लिए अपनी सामूहिक शक्ति का प्रयोग करना बहुत मुश्किल हो सकता है और वे आम तौर पर राष्ट्रीय स्तर के कानून द्वारा असुरक्षित होते हैं, उनकी दैनिक काम की स्थितियां अनिश्चित और जोखिम भरी रहती है। अधिकांश क्लाउडवर्क प्लेटफॉर्म्स ग्राहकों को उस काम को अस्वीकार करने की अनुमति देते हैं जो कर्मचारी द्वारा पहले ही पूरा कर लिया गया हो। यह प्रभावी रूप से भुगतान न होने की स्थिति पैदा करता है। प्लेटफॉर्म्स, श्रमिकों को अस्वीकृति का मुकाबला करने की क्षमता दे सकते हैं, लेकिन यह विवेकाधीन है, और इसमें अक्सर कठिन स्वचालित प्रक्रियाएं शामिल होती हैं जो किसी अन्य कार्य को पूरा करने की तुलना में अधिक समय लेती हैं। और क्योंकि प्लेटफॉर्म्स के पास ग्राहकों की तुलना में बहुत अधिक कर्मचारी होते हैं, वे आमतौर पर ग्राहकों की की तरफ रहते हैं।

ऑनलाइन लेबर प्लेटफॉर्म्स पर काम करने वालों को अपने स्वास्थ्य और सुरक्षा के जोखिम का भी सामना करना पड़ता है, जिसमें ग्राफिक या मनोवैज्ञानिक रूप से परेशान करने वाली सामग्री के साथ–साथ उनकी निजता के लिए जोखिम, या अपर्याप्त डेटा सुरक्षा उपाय सम्मिलित हैं।

अंत में श्रमिकों को ग्राहकों से भेदभाव का खतरा होता है, जिसमें उनके लिंग, जाति या भौगोलिक स्थिति से संबंधित मान्यताओं या पूर्वाग्रहों के आधार पर भेदभाव सम्मिलित है।

> क्लाउडवर्कर्स की सुरक्षा के लिए कदम

प्लेटफॉर्म शक्ति को नियंत्रित करने में सक्षम राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय नियामक दृष्टिकोणों और कामगारों के संगठित होने एवं सामूहिक सौदेबाजी से संबंधित बाधाओं के अभाव में दूरस्थ गिग कार्य में जोखिम भरी और शोषणकारी स्थितियाँ बढ़ गई हैं। चूंकि कोविड–19 महामारी के परिणामस्वरूप असुरक्षित श्रमिक, दूरस्थ कार्य और ऑनलाइन श्रम प्लेटफार्मों पर आते हैं, श्रमिकों के इस वर्ग की सुरक्षा के लिए दोनों जमीनी स्तर पर श्रम शक्ति और नीतिगत समाधानों की आवश्यकता होगी। फेयरवर्क प्रोजेक्ट ने इन प्रयासों के लिए बेंचमार्क और संदर्भ बिंदु के रूप में काम करने के लिए श्रमिकों और विशेषज्ञों के साथ निष्पक्ष क्लाउडवर्क के सिद्धांतों की एक श्रृंखला का सह–निर्माण किया है। उचित वेतन, उचित स्थिति, उचित अनुबंध, उचित प्रबंधन और उचित प्रतिनिधित्व की श्रेणियों के तहत सिद्धांत ऊपर चर्चा किए गए जोखिम और नुकसान के आयामों को कवर करते हैं। हमने सत्रह प्रमुख प्लेटफार्मों का मूल्यांकन (स्कोर) ऑनलाइन गिग इकॉनमी में मौजूद श्रम प्रथाओं की श्रेणी को दिखाने के लिए किया है। जहाँ कुछ प्लेटफार्मों ने अपेक्षाकृत सकारात्मक मूल्यांकन प्राप्त किया, अंततः हमारे शोध से पता चलता है कि जवाबदेही के शून्य में, कोड की एक सरल रेखा के साथ प्लेटफॉर्म्स लगातार ऐसे विकल्प बना रहे हैं जो लाखों श्रमिकों के कल्याण और आजीविका को प्रभावित करते है (अक्सर नकारात्मक रूप से)। पहली फेयरवर्क क्लाउडवर्क रेटिंग का उद्देश्य इन गहन असमान शक्ति संबंधों को उजागर करना है, और बाद के वार्षिक स्कोरिंग राउंड के माध्यम से हम दूरस्थ गिग श्रमिकों के लिए काम के बेहतर भविष्य को पेश करने के संयुक्त प्रयासों में योगदान करने की उम्मीद करते हैं। ■

सभी पत्राचार केले हॉवसन को <kelle.howson@oii.ox.ac.uk> पर प्रेषित करें।

> श्रम और ज्ञानमीमांसा के रूप में स्वामित्व

एरियल सल्लेह, विजिटिंग प्रोफेसर, नेल्सन मंडेला विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका और आईएसए की आजीवन सदस्य द्वारा

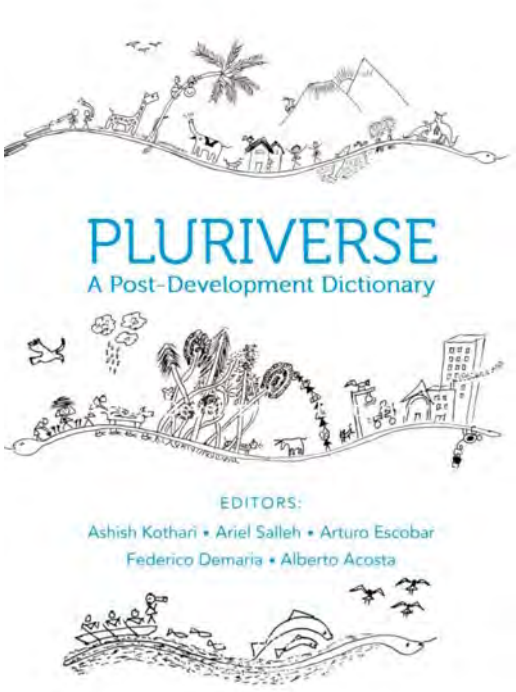

| *प्लुरिवर्स : अ पोस्ट–डेवलपमेंट डिक्शनरी,* तूलिका बुक्स (2019)।

''प्रकृति पर प्रभुत्व'' की यूरोसेंट्रिक फंतासी हमेशा एक समस्याग्रस्त सत्तामीमांसा रही है। तथा पदार्थ और *मेटर* (लैटिन) के बीच की मूल कड़ी कोई संयोग नहीं है। प्रारंभिक पारिस्थितिक नारीवादियों ने सभ्यता की प्रभुत्व की इच्छा को मातृ हत्या के उदात्तीकरण की क्रिया के रूप में देखा, जिससे पुरुषों को रहस्यमय प्राकृतिक प्रवाह पर निर्भरता के बिना सांस्कृतिक रूप से खुद को जन्म देने की स्वतंत्रता प्रदान की। आज, यह वही मनोवैज्ञानिक पृथक्करण है जो प्रकृति को बाहरी बना नवउदार शक्तियों, युद्ध और आधुनिक विज्ञान को सक्षम बनाता है। क्या यह ओडिपल पहेली जो कि अकादमिक है, इस पर खरा उतर सकती है?

> पुन:–स्मरण

किसी भी घटना में, ''अन्यता'' की पुरानी संस्कृति जिस प्रकार वस्तुओं और अमूर्तताओं की दुनिया की स्थापना करती है, इसकी दर्पण छवि कामुक बनी रहती है और इसे ''होल्डिंग'' अथवा स्वामित्व कहा जा सकता है। होल्डिंग, प्रकृति के चयापचय में मानव अंतर्निहितता की बात करती हैं; यह एक माँ की बाहों में आत्म–गठन के मूल क्षण को दर्शाती है। जब लोग खुद को प्रकृति सन्निहित के रूप में महसूस कर पाते हैं, तो वे, जैसा कि नए भौतिकवादी कहना पसंद करते हैं, आसानी से समझ पाते हैं कि पृथ्वी पर सभी जीवन कैसे ''उलझे हुए'' हैं। हालाँकि, मैं उस सूत्रीकरण के लिए की तरफ आकर्षित नहीं हूँ; बल्कि, मैं होल्डिंग को श्रम के एक रूप में देखता हूं – उत्पादक से अलग पुनरुत्पादित। विचारशील होल्डिंग जैव–शारीरिक प्रक्रियाओं को सक्रिय करती है, जैसे कि बच्चे की देखभाल या वन प्रदेश की स्वदेशी सुरक्षा। होल्डिंग एक बार स्थापित और व्यवस्थागत होने के बाद ज्ञानमीमांसा सिखाती है।

हमारे संपादित संग्रह, *प्लुरिवर्स* (2019) में, कैरिन अमिमोटो इंगरसोल हवाई मछुआरों के मध्य इस संवेदनशीलता का वर्णन करतीं है:

> ''आपस में जुडी प्रणाली के रूप में समुद्र, हवा, ज्वार, धाराओं, रेत, समुद्री शैवाल, मछली, पक्षियों और आकाशीय पिंडों के बारे में एक गैर–उपकरणात्मक नौवहन ज्ञान जो दुनिया के मध्य से आगे बढ़ने के एक अलग तरीके की अनुमति देता है ... इस महासागरीय साक्षरता में , शरीर और समुद्री दृश्य एक जटिल सम्भाषण में अंतर्क्रिया करते हैं ... पश्चिमी विचार–संसार के भव्य आख्यान के विकल्प में, जो हमारे 'स्व' को अलग रखते हैं ... इस प्रकार देखना एक राजनीतिक प्रक्रिया बन जाती है, जो समुद्री समय के भीतर सीखी गई सभी यादों और ज्ञान का पठन बन जाती है , लेकिन जिसे पहचान, स्थान और शक्ति के कठोर औपनिवेशिक निर्माणों द्वारा मिटा दिया गया है... (अधिकांश) दुनिया का अधिकांश हिस्सा *स्मृति के बिना* आगे बढ़ता है, जैसे कि हम जिन स्थानों में निवास करते हैं वे खाली भौगोलिकी हैं, और इसलिए वे उपभोग और विकास के लिए उपलब्ध हैं ... '' [*इटेलिक जोडा गया है*]

> पुनर्योजी मूल्य

जैसा कि प्रोटेस्टेंट एथिक थीसिस में तर्क दिया गया है, ईसाई पितृसत्तात्मकता और पूंजीवाद ऐतिहासिक रूप से स्थिर फ्रेम हैं। वैश्विक निगमों और बहुपक्षीय एजेंसियों के उदय के साथ, देखभालकर्मियों, छोटे भूमि धारकों और प्रथम राष्ट्र के लोगों के अन्य ज्ञान को ''आर्थिक'' नहीं बल्कि ''सांस्कृतिक'' मान कर कमतर आंका जाता है। ''यह श्वेत मध्यवर्गीय पुरुषवादी सम्भाषण में उनके सूक्ष्म रूप से धारणीय प्रावधान को अदृश्य रखता है। जहां राजनीतिक दक्षिणपंथी और वाम दोनों यह मानते हैं कि श्रम ''उत्पादक'' होना चाहिए। अर्थात, ''वास्तविक कार्य'' पदार्थ को ''मानव निर्मित'' में बदलने और इस प्रकार ''मूल्य'' रखने के बारे में है। यहां तक कि प्रगतिशील पारिस्थितिक–समाजवादी, ग्रीन न्यू डीलर्स और राजनीतिक अर्थशास्त्री औपचारिक अर्थव्यवस्था के अंदर देखभाल को स्थानांतरित करने के लिए मात्रात्मक रूप से तर्क देते हैं। मार्क्सवादी उपयोग बनाम विनिमय द्वैतवाद से अलग, पुनरुत्पादन या ''चयापचय'' मूल्य को मापने की आवश्यकता नहीं हैय यह पारिस्थितिक तंत्र के फलने –फूलने पर अनुभवात्मक हैं, जो मानव शरीर के साथ हैं।

> >

शोषण, निष्कर्षणवाद, जैवविविधता हानि, पीक वाटर और जलवायु परिवर्तन के बिना सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के कई तरीके हैं। और 1999 में सिएटल पीपुल्स कॉकस के बाद से, पूंजीवादी पितृसत्तात्मक साम्राज्य को विश्व सामाजिक मंच, वाया कैम्पेसिना, स्वदेशी पर्यावरण नेटवर्क, विश्व महिला मार्च, और एक्सटिंक्शन रिबेलियन जैसे आंदोलनों द्वारा चुनौती दी गई है। इस तरह की पहलें, इवान इलिच व वोल्फगैंग शेक्स जैसे वि–औपनिवेशिक विचारकों, साथ ही मारिया मिज और वंदना शिवा जैसे पारिस्थितिक नारीवादियों से ''दुर्भावना–विकास'' की उनकी शक्तिशाली आलोचनाओं से प्रेरणा लेती है। 2019 की *प्लुरिवर्स* परियोजना एंडियन *बुएन विविर* प्रतिपादकों, भारतीय *स्वराज* समुदायों, यूरोपीय डी–ग्रोथर्स और अन्य लोगों के बीच ''ग्लोबल इज लोकल'' के आह्वान के साथ एक क्रॉस–सांस्कृतिक साझाकरण को खोलती है। मैनफ्रेड मैक्स–नीफ के शब्दों में: लघु स्व–प्रबंधित अर्थव्यवस्थाएं ''सहक्रियात्मक'' हैं, जो एक साथ कई जरूरतों को पूरा करती हैं– जैसे पारिस्थितिक पुनरुत्थान, दैनिक निर्वाह, सीखना, नवाचार, पहचान और अपनापन आदि ।

> संरचनात्मक समानताएं

कीटनाशकों के उपयोग या खनन को रोकने के लिए इलाके और गाँव के प्रयासों को गृहिणियों और किसानों द्वारा श्रमिकों के स्वामित्व के माध्यम से पहचाना जा सकता है। इसी तरह, ये कार्यकर्ता प्रकृति के वस्तुकरण और महिलाओं और स्वदेशी लोगों के शरीर के बीच संरचनात्मक समानताएं नोट करते हैं। आंदोलनों के विश्वव्यापी संचलन में, ग्लोबल नॉर्थ में महिलाओं के लिए राजनीतिक चयन ग्लोबल साउथ में नस्लीय लोगों के समान ही हैं। वहां या तो कानूनी अधिकारों के नागरिक तंत्र के माध्यम से बंधन मुक्ति है या सांप्रदायिक पारस्परिकता के माध्यम से आत्म–बोध है।

इक्कीसवीं सदी में कई लोग मानवता और प्रकृति को एक साथ वापस लाने के लिए बड़े सभ्यतागत कदम उठा रहे हैं। प्रकृति माँ के अधिकारों पर नए जल प्रतिमान या पीपुल्स ट्रिब्यूनल का समग्र विज्ञान इस पुनः सदस्यता को दर्शाता है। खाद्य संप्रभुता उत्तर और दक्षिण में बहुपक्षीय सक्रियता का एक केंद्रीय लक्ष्य है– जिसे संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन की ''खाद्य सुरक्षा'' की अवधारणा के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए। क्योंकि परवर्ती केवल अधिक मुनाफाखोरी, आजीविका से बेदखली, पेट्रो–कृषि मोनो–फसल, और प्रदूषणकारी अंतरमहाद्वीपीय मुक्त व्यापार लाता है। मुख्यधारायी नारीवादियों के, साथ ही साथ कुछ वामपंथी कार्यकर्ता और ग्रीन्स, हावी पूंजीवादी प्रतिमान को समायोजित करने के बारे में आत्मविश्वास से बात करते हैं। लेकिन बहुत बार, राज्य शक्तियाँ, परिवर्तन के लिए सुविचारित कार्यों को असहिष्णुता के दमनकारी रूप के साथ दबाती हैं। यह पहले से ही सर्कुलर इकोनॉमी, ग्रीन डील और अर्थ सिस्टम गवर्नेंस के साथ देखा जाता है।

> एक जैव–सभ्यता?

दुनिया के सामाजिक उत्पाद का ''न्यायोचित और धारणीय वितरण'' सुनने में अच्छा लगता है, लेकिन इसका कोई थर्मोडायनामिक अर्थ नहीं है। जैसा कि जेसन हिकेल बताते हैं: संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों को पूरा करने के लिए, वैश्विक अर्थव्यवस्था को अपने वर्तमान आकार का 175 गुना बढ़ना होगा, क्योंकि यह पहले से ही प्रत्येक वर्ष ग्रह की क्षमता से 50 फीसदी अधिक बढ़ जाता है। होल्डिंग अर्थव्यवस्थाएं स्थानीय उत्पादन के लिए प्रकृति की भौतिक सीमाओं का सम्मान करती हैं। यह लोक प्रतिमान एक ''जैव–सभ्यता'' के लिए प्रयासरत है ताकि एकाकी उच्च–तकनीक व्यक्तिवाद और विषाक्त संक्रमण की अवस्थाओं के जीवन–नकारात्मक सूत्रों को बदला जा सके। विलग संज्ञान (cogito) जिसके अनुसार, ''मुझे लगता है, इसलिए मैं हूं'' के खिलाफ, होल्डिंग तर्क पर आधारित दक्षिण अफ्रीकी *उबंटू* नैतिक ''मैं हूं क्योंकि आप हैं'' है। दुनिया के संबंधित तरीके *बुएन विविर*, इको–विलेज, गिफ्ट इकोनॉमी, *क्योसी, सेंटीपेन्सर* हैं, जो अब विकल्पों के वैश्विक टेपेस्ट्री के रूप में चर्चा में हैं।

क्या पर्यावरण–समाजवादी अपने भौतिकवाद को ''पुनः मूर्त रूप'' दे सकते हैं और पूंजी के घरेलू और भौगोलिक परिधि से ''अन्य'' श्रमिक वर्ग ''मेटा–इंडस्ट्रियल्स'' की ऐतिहासिक एजेंसी पर विचार कर सकते हैं? यहां, सिद्धांत के किनारे पर, अव्यक्त श्रमिक हैं जो सभी वर्गों की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। वास्तव में, वे मानवता–प्रकृति चयापचय को एक साथ रखकर पूंजीवाद को भी संभव बनाते हैं। इस वैश्विक वर्ग को एक मरते हुए यूरोकेंद्रित युग के कठोर अमूर्तन की कोई आवश्यकता नहीं है– वस्तु पर विषय, प्रकृति पर मानवता, महिला पर पुरुष, अश्वेत पर श्वेत, पारिस्थितिकी पर अर्थव्यवस्था।[1] ■

सभी पत्राचार एरियल सल्लेह को <arielsalleh7@gmail.com> पर प्रेषित करें।

1. यह लेख जून 2021 को पेरिस में दिए गए लेक्चर "Femmes, écologie et engagements politiques du Sud au Nord", से लिया गया है।

> मियाजाकी एनीमे : एंथ्रोपोसिन के लिए जीवात्मवाद

शोको योनेयामा, एडिलेड विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया द्वारा

माय नेबर टोटरो (1988)। श्रेयः स्टूडियो घिबली।

इस बात पर आम सहमति है कि जलवायु परिवर्तन, कोविड–19 महामारी और एंथ्रोपोसीन से जुड़े अन्य अस्तित्वगत संबंधी संकटों को संबोधित करने के लिए मानव–प्रकृति संबंधों पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। लेकिन हम बहुत आगे नहीं बढ़े हैं।शायद हमें पूरी तरह से एक अलग तरह के सम्बन्ध की कल्पना करने की जरूरत है। अमिताव घोष का सुझाव है कि हम कल्पना के संकट का सामना कर रहे हैं क्योंकि हमारे पास संदर्भ के सांस्कृतिक ढांचे की कमी है जो हमें वैकल्पिक सत्तामीमांसा की कल्पना करने में सक्षम बनाता है। क्या यह संभव है कि जीवात्मवाद एक समाधान खोजने में मदद कर सकता है?

लेकिन क्या जीवात्मवाद ''आदिम लोगों'' जैसे शिकारी–संग्रहकर्ता, जो आधुनिकता से बहुत दूर रहते हैं, का ''साधारण विश्वास'' नहीं है? जीवात्मवाद को पश्चिमी रूढ़िवादिता में आम तौर पर इसी तरह से निर्मित किया जाता है: कि यह मूल रूप से एक त्रुटिपूर्ण ज्ञानमीमांसा है। एक हालिया विचारधारा ''नव जीवात्मवाद'', जो एक अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण लेते हुए, जीवात्मवाद को आधुनिकता की उपयोगी आलोचना के रूप में प्रस्तुत करता है। हालाँकि, नव–जीवात्मवाद का पूरा वादा अभी तक पूरी तरह साकार नहीं हुआ है। अधिकांशतः, जीवात्मवाद अभी भी पश्चिम में विश्वविद्यालयों के मानव विज्ञान विभागों में एक नमूने जैसी स्थिति में बना हुआ है।

> मियाजाकी एनीमे की वैश्विक लोकप्रियता

स्टूडियो घिबली की एनीमेशन फिल्म निर्देशक, मियाजाकी हयाओ, की एंथ्रोपोसीन में जीवन की चुनौतीपूर्ण वास्तविकताओं के साथ गहन जुड़ाव को प्रेरित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका है। उनके एनीमे में प्रस्तुत जीवात्मवाद में लाखों दर्शकों के दिलों और दिमागों को मानव–प्रकृति संबंधों की सकारात्मक पुनर्कल्पना के लिए खोलने की शक्ति है। मियाजाकी एनीमे अत्यधिक सुलभ छवियों और जीवात्मवाद की कहानियों के साथ हमारी कल्पना को प्रेरित करता है।

''आप शायद मजाक कर रहे हैं !'' एक सहकर्मी ने कुछ साल पहले एक सम्मेलन में कहा था जब मैंने इसी बात को रेखांकित करते हुए एक पत्र पढ़ा था। ''मियाजाकी एनीमे बच्चों की चीज है । मेरे बेटे ने *टोटोरो* तब देखा था जब वह पांच वर्ष का था।'' घिबली के पूर्व सह–निदेशक ताकाहाता इसाओ कहते हैं यह सच है: मियाजाकी का काम प्रमुख रूप से बच्चों के लिए है, लेकिन उनकी फिल्मों के कारण ही, ''जापानी बच्चे जब भी पेड़ों को देखते हैं तो टोटोरो ट्री स्पिरिट को महसूस करते हैं''। दुनिया भर के बच्चों के लिए ऐसा ही मामला हो सकता है। डिजनी द्वारा 1996 में घिबली फिल्मों के वितरण के बाद मियाजाकी एनीमे का वैश्विक प्रभाव तेजी से बढ़ा है। *स्पिरिटेड अवे* को 2003 में सर्वश्रेष्ठ एनिमेटेड फीचर के लिए अकादमी पुरस्कार मिला, और फिल्मों को नेटफ्लिक्स और एचबीडी मैक्स पर स्ट्रीम किया जाने लगा।

> आलोचनात्मक जीवात्मवाद

तो मियाजाकी एनीमे की वैश्विक लोकप्रियता का एंथ्रोपोसीन से क्या लेना–देना है?

मियाजाकी एनीमे में जीवात्मवाद का प्रतिनिधित्व, विशेष रूप से *नौसिका ऑफ द वैली ऑफ द विंड* (1984), *माई नेबर टोटरो* (1988), *प्रिंसेस मोनोनोक* (1997), *स्पिरिटेड अवे* (2001) और *पोनीओ* (2008) जैसी उनकी सिग्नेचर फिल्मों में हमें मानव–प्रकृति के पुनर्कल्पित संबंधों में गहराई से जाने की अनुमति प्रदान करता है।

पुनर्कल्पना? जापान में, जहां सत्तमीमांसा और ज्ञानमीमांसा आधुनिकता के समानांतर आज भी जारी है, स्थिति अलग है। वहां, जीवात्मवाद जिसे यूनेस्को एक अमूर्त सांस्कृतिक विरासत कहता है, के रूप में मौजूद है। इसके अलावा, मैं यह तर्क देता हूं कि आधुनिकता के नकारात्मक पहलुओं के जवाब में और आधुनिकता की एक प्रतिक्रियात्मक आलोचना का निर्माण करने के लिए शक्तिप्रापक

>>

कोडामा (फॉरेस्ट स्प्रिट) इन प्रिंसेस मोनोनोकी (1997)। श्रेयः स्टूडियो घिबली।

(पोकेमॉन के परिवर्तन की तरह) के रूप में एक नए प्रकार का जीवात्मवाद विकसित हुआ है। इसे मैं ''क्रिटिकल एनिमिज्म'' या ''पोस्टमॉडर्न एनिमिज्म'' कहता हूँ।

आलोचनात्मक जीवात्मवाद का विकास मिनमाता रोग पीड़ितों के सम्भाषण से हुआ। ये पीड़ित मानव इतिहास में औद्योगिक प्रदूषण के सबसे खराब मामलों में से एक, जो 1950 के दशक से चल रहा, के शिकार थे। फिल्म देखने वाले जॉनी डेप की 2020 की फिल्म *मिनामाता* से परिचित होंगे, जिसमें फोटोग्राफर यूजीन स्मिथ, जिन्होंने प्रतिष्ठित तस्वीर ''टोमोको उमूरा इन हर बाथ'' ली थी, के जीवन को दर्शाया गया है।

समाजशास्त्री त्सुरुमी काजुको ने पहली बार जीवात्मवाद पर इस जमीनी सम्भाषण को आधुनिकता की आलोचना के रूप में देखा। मैंने अपनी पुस्तक *एनिमिज्म इन कंटेम्पररी जापानः वॉइसेस फॉर द अन्थ्रोपोसीन फ्रॉम पोस्ट–फुकुशिमा जापान*[1] में त्सुरुमी के ''एनिमिज्म प्रोजेक्ट'' का अनुसरण किया है। मियाजाकी चार प्रमुख जापानी बुद्धिजीवियों में से एक हैं, जिनके जीवन के आख्यानों की मैंने पुस्तक में यह खोजते हुए जाँच की है, कि इन रचनात्मक विचारकों को यह विचार कैसे आया कि जीवात्मवाद दुनिया को बचा सकता है ।

मियाजाकी हयाओ का कहना है कि दुनिया को बचाने के लिए जीवात्मवाद की आवश्यकता है। इसलिए जीवात्मवाद का प्रसार उनकी जीवन परियोजना है। उनके काम का दार्शनिक आधार, *नौसिका इन द वैली ऑफ विंड* , जो मानव–प्रकृति संबंधों के बारे में एक हजार से अधिक पृष्ठों की एक महाकथा है, जिसे पूरा करने में उन्हें बारह साल लगे (1982–94), के मेगा संस्करण में पाई जा सकती है।

मियाजाकी (आलोचनात्मक) जीवात्मवाद के तीन घटक हैं। एजेंसी से संपन्न प्रकृति का सुंदर चित्रण है। जैसा कि *प्रिंसेस मोनोनोक* में, वन–आत्मा के रूप में चित्रित कोडामा को प्रतीकात्मक रूप से प्रकृति को जीवन–संसार और आध्यात्मिक–दुनिया के एक गैर–द्वैतवादी संयोजन के रूप में दर्शाया गया है। दूसरा घटक स्थान और स्थानीय का महत्व है, जो राज्य के नेतृत्व वाले जापानी जीवात्मवाद को वैचारिक और भाषावादी सम्भाषण से अलग करता है। जीवात्मवाद की उनकी स्थिति ने अन्य स्थानों पर जीवात्मवाद के साथ शिथिल रूप से जुड़े होने की संभावना को खोल दिया, जिसे आरिफ डर्लिक ''ट्रांसलोकल एलायंस'' कहते हैं। तीसरा मानव/*प्रकृति,* अच्छाई/बुराई, जीवन/मृत्यु, आध्यात्मिक/भौतिक, देखा/अनदेखा, और प्रकाश/अंधेरे जैसे द्वैतवाद का निषेध है, जिसके शक्तिशाली सैद्धांतिक निहितार्थ हैं।

मियाजाकी हयाओ का जीवात्मवाद सैद्धांतिक रूप से अमूलपरिवर्तनवादी है क्योंकि यह सामाजिक विज्ञान और आधुनिकता के पदानुक्रमित द्वैतवाद पर आधारित प्रतिमान के स्वीकृत परिसर को चुनौती देता है, जो हैं: (1) प्रकृति के उपर मानव (मानवकेंद्रीकरण), (2) आध्यात्मिक पर तर्कसंगतता (धर्मनिरपेक्षता), और (3) अन्य पर यूरोपीय परंपरा (यूरोकेन्द्रियवाद)। दूसरे शब्दों में, उनका जीवात्मवाद मौजूदा प्रतिमान को बिगाड़ता है। यह एक अलग प्रतिमान की परिकल्पना करने के लिए हमारी कल्पना को एक नई दिशा में उत्तेजित करने की क्षमता प्रस्तुत करता है जो पदानुक्रमित द्वैतवाद से मुक्त है। अधिक विवरण के लिए, *थ्योरी, कल्चर एंड सोसाइटी* में मेरा आलेख ''मियाजाकी हयाओ'स एनिमिज्म एंड द एंथ्रोपोसिन'' को देखें।

इन सैद्धांतिक निहितार्थों के साथ, मियाजाकी एनीमे की वैश्विक लोकप्रियता एक महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय घटना का निर्माण करती है। मियाजाकी लाखों दर्शकों के दिलों और दिमागों में जीवात्मवाद की शक्तिशाली छवियों को प्रोजेक्ट करते हैं, ठीक उसी तरह जैसे टोटोरो बच्चों के साथ पेड़ के बीज लगाते हैं। मियाजाकी के काम की व्यापक लोकप्रियता उनके एनिमिस्टिक रुख के लिए एक सहज ज्ञान युक्त लोभ या भूख का सुझाव देती है। यह संभव है कि एक पुनः मुग्ध दुनिया की उनकी फिल्में दर्शकों (सामाजिक वैज्ञानिकों सहित) को एक तरह से जीवात्मवादी ज्ञानमीमांसा और सत्तमीमांसा के प्रति अधिक अभ्यस्त होने के लिए तैयार करती हैं, जो घोष की कल्पना के संकट का निवारण करता है। उस अर्थ में, मियाजाकी हयाओ हमें एंथ्रोपोसीन के ''उत्तम तूफान'' का जवाब देने के लिए एक ''उत्तम कहानी'' प्रदान करते हैं। ■

सभी पत्राचार शोको योनेयामा को <shoko.yoneyama@adelaide.edu.au> पर प्रेषित करें।

1. Yoneyama, S. (2019) *Animism in Contemporary Japan: Voices for the Anthropocene from Post-Fukushima Japan*. Oxon and New York: Routledge.

> एंथ्रोपोसीन और उसके असंतोष

गैया गिउलिआनी, सेंटर फॉर सोशल स्टडीज, यूनिवर्सिटी ऑफ कोयम्ब्रा , पुर्तगाल द्वारा

क्बो वेर्डे
श्रेय : गैयागिउलानी।

हाल ही में, एंथ्रोपोसीन एक अवधारणा के रूप में और प्रक्रियाओं और घटनाओं के एक कुलक के रूप में राजनीति, के साथ ही कला, संस्कृति और शिक्षा में बहस के केंद्र में लाया गया है। विवादास्पद रूप से, इसका अधिक मुख्यधारायी अर्थ उन प्रक्रियाओं को संदर्भित करता है जिन्हें विद्वानों ने पीछे जा कर द्वितीय या तृतीय औद्योगिक क्रांतियों में खोजा है, जब मानव हस्तक्षेप ने ग्रह की भूवैज्ञानिक, भौतिक और जैविक संरचना पर गहन प्रभाव डालना शुरू कर दिया था।

> एंथ्रोपोसीन के सिद्धांत पर आलोचनात्मक विचार

अधिक आलोचनात्मक विचारों में, एंथ्रोपोसीन और उस पर सार्वजनिक बहस औपनिवेशिक और पूंजीवादी आधुनिकता (इन समालोचनाओं के अनुसार, एंथ्रोपोसीन एक आधुनिक तथ्य है) तथा विशेषाधिकार प्राप्त मानव, गैर–मानव और निर्जीव के बीच संबंधों को पुनः परिभाषित करने का काम करती है। यह पुनः संकल्पना वैश्विक पैमाने पर कार्बनिक और अकार्बनिक तत्वों को नियंत्रित करने वाली शक्ति संरचनाओं के एक अमूलपरिवर्तनवादी पुनर्विचार से उभरती है।

ये महत्वपूर्ण स्थितियाँ विभिन्न विषयों जैसे जीव विज्ञान, भूगोल, भूविज्ञान, और भौतिकी से लेकर सिनेमा, समाजशास्त्र, नृविज्ञान, राजनीति, दर्शनशास्त्र, कविता और प्रदर्शन कला के पार, वैश्विक नस्लवाद–विरोधी, नारीवादी और समलैंगिक आलोचनाओं और ज्ञान–मीमांसाओं के, पूंजीवाद–विरोधी और वि–औपनिवेशिक दृष्टिकोणों के प्रतिच्छेदन पर अंकुरित हुई है। वे पर्यावरण मानविकी में एक अंतःविषयक संवाद के भीतर विकसित दो महत्वपूर्ण विचारों से आकर्षित होते हैं, पहला, पर्यावरण भी एक सामाजिक घटना है और दूसरा, किसी भी जीवित प्राणी पर एंथ्रोपोसीन के हिंसक प्रभाव को उलटने के लिए, मनुष्यों और अन्य जीवों और पृथ्वी के अकार्बनिक घटकों के मध्य अन्योन्याश्रयता को स्वीकार कर और उन्हें राजनीतिक बनाना होगा।

> एंथ्रोपोसेनिक एंथ्रोपोस और उसके दैत्य

यह संक्षिप्त योगदान इन महत्वपूर्ण प्रतिबिंबों से उत्पन्न होता है, जो कल्पनाओं, आख्यानों और प्रथाओं की लाक्षणिक उत्पादकता से संबंधित एंथ्रोपोसीन की एक विशिष्ट विशेषता पर ध्यान केंद्रित करता है, साथ ही एक सामूहिक अत्तुत्तम विषय (फूको) से निकलने वाली न्यायिक, राजनीतिक और लोकप्रिय संस्कृतियों पर ध्यान केंद्रित करता है जिसे एंथ्रोपोसीन के / एंथ्रोपोस में के रूप में पहचाना गया है ।

जैसा कि एलिजाबेथ पोविनेली ने बल दिया है, यह एंथ्रोपोस उत्तर औपनिवेशिक और वि–औपनिवेशिक आलोचनाओं में पहचाने जाने वाले कार्टेशियन विषय और सामाजिक अनुबंध के उदारवादी व्यक्ति को शामिल करता है, जिसे नारीवादी विद्वान हिंसक यूरोसेन्ट्रिक और पश्चिमी आधुनिकता, जिसने दुनिया को पुनराकृत किया है, के उद्भव से जुड़ा हुआ मानते है। इस एंथ्रोपोस से जुड़ी दुनिया, इतिहास, भूगोल और मानवता की एक दृष्टि है, जो कि सांकेतिक रूप से मन और शरीर में, मानव और गैर –मानव, पुरुष और महिला, श्वेत

> >

और अश्वेत, अच्छा और बुरा, तर्कसंगत और तर्कहीन, धर्मनिरपेक्ष और कट्टर, सही और गलत, श्रेष्ठ और हीन, उद्धारकर्ता और घातक आदि को विलग के रूप में देखते है जिसने ऐसे सत्तामीमांसा और तर्क थोपे हैं जो यूरोकेंद्रित आधुनिकता के मध्ययुगीन परिसर के बाद से पूंजीवाद और इसकी हिंसा को बनाए रखते हैं और उन्हें पुनः उत्पन्न करते हैं।

एक ओर एंथ्रोपोसीन के सत्तामीमांसा और तर्कशास्त्र के मध्य तथा दूसरी ओर नस्लीय पूंजीवाद, पितृसत्ता और उपनिवेशवाद के बीच उलझावों पर सिद्धांतों और प्रतिबिंबों को जोड़ते हुए, मैं एंथ्रोपोसीन के एंथ्रोपोस को बनाने में ऐतिहासिक रूप से निर्मित *दैत्यीकरण* प्रक्रिया की महत्वपूर्ण भूमिका, और सत्ता संरचनाओं के केंद्र में आधिपत्य वाले ''हम'' के निर्माण और मूल्य के निष्कर्षण में योगदान देने में जिनकी उत्पत्ति पूंजीवादी और औपनिवेशिक आधुनिकता में हुई है, का पता लगाने का प्रयास करता हूं। यह सर्वेक्षण एंथ्रोपोसीन के सत्तामीमांसा और तर्कशास्त्र के संचालन और समय व स्थान के पार उनकी वैधता के बीच संबंधों को प्रकट करता है, जो कि औपनिवेशिक विद्रोहियों, भगोड़े दासों, *क्विलोम्बोला*, चुड़ैलों, काफिरों, दंगाई किसानों, हड़ताली औद्योगिक श्रमिकों, और स्वदेशी प्रतिरोध के खिलाफ हिंसा की प्रक्रिया और दैत्यीकरण के संबंधों का खुलासा करता है। यह उनके खिलाफ नैतिक आतंक के विवादास्पद निर्माण को औपनिवेशिक हिंसा, राज्य सत्तावाद और घातक निष्कर्षणवाद से जोड़कर ऐसा करता है।

मेरी नवीनतम पुस्तक *मॉन्स्टर्स, कैटास्ट्रोफ्स एंड द एंथ्रोपोसिनः ए पोस्टकोलोनियल क्रिटिक* में, मैं प्राकृतिक आपदा, सामूहिक प्रवासन और आतंकवाद की यूरोपीय और पश्चिमी कल्पनाओं का, आधुनिक अवधारणाओं में दैत्यीकरण और तबाही की उत्तर–औपनिवेशिक जांच के माध्यम से पता लगाने का प्रयास करता हूं। साई –फाई , प्रलय का दिन, और डरावनी फिल्मों तथा टीवी श्रृंखला में लोकप्रिय दृश्य संस्कृति के स्थापित प्रतीक, साथ ही साथ समाचार मीडिया द्वारा पुनरुत्पादित छवियों में, एंथ्रोपोसीन के सत्तामीमांसा और तर्क के लिए आधुनिक भय की वंशावली का पता लगाने में मदद करते हैं। पुस्तक एंथ्रोपोसिन की अंतर्निहित हिंसा का अनावरण करने मात्र पर नहीं रुकती है, बल्कि एक नारीवादी, उत्तर–विकासात्मक और पारिस्थितिकीविद् ज्ञानमीमांसा और एक राजनीतिक परियोजना का प्रस्ताव देती है जो *राजनीतिक* की एक नई अवधारणा को गले लगाती है।

> वर्तमान के लिए एक नारीवादी राजनीतिक परियोजना

एंथ्रोपोसेनिक तर्क और सत्तामीमांसा के प्रत्युत्तर में, मैं *अन्योन्याश्रित देखभाल, आत्म–देखभाल और पृथ्वी–देखभाल की राजनीतिक परियोजना* का सुझाव देता हूं। पश्चिमी आधुनिक नारीवाद से, मैं देखभाल की केंद्रीयता उधार लेता हूं –अर्थात, व्यक्तियों और समुदायों के कल्याण (मनोवैज्ञानिक–सामाजिक और सांस्कृतिक, यौन और आर्थिक) को एक सामान्य, एक संसाधन और एक सामाजिक कर्तव्य (नैन्सी फ्रेजर; स्टेफनिया बार्का) के रूप में समझा जाता है। फिर भी, देखभाल के मुद्दे को क्वीर आलोचनाओं और स्वदेशी, अश्वेत व कामकाजी वर्ग की महिलाओं की आलोचनाओं के माध्यम से पढ़ा जाता है। सारा अहमद और ऑड्रे लॉर्डे की जोड़बंदी से प्रभावित होकर, मैं व्यक्तिगत और सामूहिक स्वायत्तता के लिए आत्म–देखभाल को एक नारीवादी परियोजना के रूप में समझता हूँ, जो देखभाल को एकीकृत करता है, जो अन्यथा पितृसत्तात्मक, नस्लवादी और पूंजीवादी लिंग भूमिकाओं द्वारा संरचित होता है, तथा जो मानव और गैर–मनुष्यों के बीच पारस्परिक देखभाल का पूर्वानुमान लगाता है।

गतिमान लोगों के, अल्पसंख्यकों के वि–औपनिवेशिक और पितृसत्तात्मक–विरोधी संघर्षों के साथ–साथ पर्यावरणीय आपदाओं और उनके नव–औपनिवेशिक प्रतिभूतिकरण के खिलाफ स्थानीय और स्वदेशी लोच व प्रतिरोध के सन्दर्भ में, आत्म–देखभाल का अर्थ व्यक्तिगत और सामूहिक स्वायत्तता, आत्म–संरक्षण और राज्य निगरानी, अनुशासन और दुरुपयोग के खिलाफ एकजुटता है। *अन्योन्याश्रित देखभाल, आत्म–देखभाल, और वैश्विक देखभाल का राजनैतिक प्रोजेक्ट* वि–सत्ताकारण को निष्कर्षणवाद, शोषण और कमजोरीकरण के खिलाफ उपनिवेशवाद–विरोधी संघर्षों को जोड़ता है। यह प्रोजेक्ट न केवल इस समझ पर आधारित है कि अपनी सैन्यीकृत दीवारों और सीमाओं, शिविरों और कार्सरल द्वीपसमूह, निगरानी, गतिहीनता और जबरन गतिशीलता के साथ पूंजीवाद और पितृसत्ता अनिवार्य रूप से न केवल नस्लवादी हैं, बल्कि इस पर भी आधारित है कि नस्लीय पूंजीवाद और पितृसत्ता की उपनिवेशवादिता (सेड्रिक जे रॉबिन्सन, रूथ गिलमोर, लौरा पुलिडो) पूरी तरह विश्व के साथ लाभ–संचालित संबंध पर आधारित है।

ऐसे राजनीतिक प्रोजेक्ट की उपनिवेशवाद विरोधी नींव अनिवार्य रूप से निष्कर्षण विरोधी हैं और विश्व के सभी मानव, गैर–मानव और निर्जीव घटकों की अन्योन्याश्रयता पर आधारित, है।

इस तरह की अवधारणा अर्थकेयर के मुद्दे को सामने लाती है, यानि कि ग्रह के सभी घटकों के बीच एक पूंजीवादी विरोधी संबंध। स्वदेशी बहुसंख्यकवाद, कुर्द *जिनोलोजी* जैसे राजनीतिक ज्ञानमीमांसा आंदोलन, और डोना हरावे, स्टेसी अलिमो और करेन बराड जैसे पश्चिमी बुद्धिजीवियों से प्रेरणा ले कर, यह योजना देखभाल के विचार को गैर–मानव जीवन तक विस्तृत करती है। यह केवल देखभाल, आत्म–देखभाल और पृथ्वी की देखभाल के त्रय के माध्यम से है कि *मानव और गैर–मानव जीवन और गैर–जीवन के प्रति मानवीय जिम्मेदारी एक राजनीतिक मूल्य बन जाती है।*

कई वैश्विक दक्षिण और स्वदेशी समुदाय, वैश्विक उत्तर के हाशिए पर रहने वाले निवासी और पूरे ग्रह पर राजनीतिक आंदोलन इन सिद्धांतों को अपनाते हैं। केवल एक आमूलपरिवर्तनवादी ग्रहीय राजनीतिक परियोजना जो एंथ्रोपोसेनिक तर्क और सत्तमीमांसा की घातक राक्षसियता को स्वीकार करती है, और उनके प्रति प्रतिक्रियाओं की स्थिति और महत्वपूर्ण बहुलता को पहचानती है, सक्रिय रूप से इसे उलटने में सक्षम है। ■

सभी पत्र–व्यवहार गैया गिउलिआनी को <gaiagiuliani@ces.uc.pt> पर प्रेषित करें।

> जीवन का साम्राज्यवादी तरीका और पूंजीवादी आधिपत्य

उलरिच ब्रांड, विएना विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रिया और मार्कस विसेन, बर्लिन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड लॉ, जर्मनी द्वारा

वैश्विक उत्तर में एवोकाडो की उच्च खपत के फलस्वरूप वैश्विक दक्षिण में महत्वपूर्ण जलनिकासी के कई उदाहरणों में से एक। यह दक्षिण अफ्रीका में एक युवा उच्च घनत्व रोपण की एक तस्वीर है।
श्रेयः एड्रियन 2013 / क्रिएटिव कॉमन्स।

सामाजिक आलोचना और सामाजिक वैज्ञानिक सोच में पूंजीवादी समाजों में स्थिरता, परिवर्तन और संकटों की अवधारणा और ठोस विश्लेषण करने की एक समृद्ध परंपरा है। जबकि मुख्यधारायी सामाजिक विज्ञान आमतौर पर उन समस्याओं के मूल कारणों को देखे बिना समस्याओं (समाधान के लिए) की बात करते हैं, आलोचनात्मक सिद्धांत से प्रेरित विश्लेषणों का प्रारंभिक बिंदु सामाजिक संबंधों के अन्तर्निहित रूप से विरोधाभासी और विवादित चरित्र होते हैं। ''साम्राज्यवादी जीवन शैली'' की अवधारणा का उद्देश्य कुछ ऐतिहासिक और वर्तमान अंतर्विरोधों को हमारे समय की एक बड़ी चुनौती : गहराते पारिस्थितिक संकट और पूंजीवाद के वैश्वीकरण के साथ इसके संबंध, को समझने से है।

प्रारंभिक औद्योगीकृत पूंजीवादी समाजों में सबसे ऊपर हावी रहे उत्पादन और खपत के गहन रूप से जमे प्रतिमान, वैश्विक स्तर पर प्रकृति और श्रम शक्ति के लिए अनुपातहीन पहुंच की पूर्वधारणा रखते हैं। यह पारिस्थितिक तंत्र के विनाश, पारिस्थितिक सिंक की अतिवृद्धि, कई देशों में उच्च बेरोजगारी, और श्रम के एक असमान विभाजन को अग्रेषित करता है जो अनिश्चित श्रमिकों, महिलाओं और (अप्रलेखित) प्रवासियों पर अतिरिक्त बोझ डालता है।

विकसित पूंजीवाद की एक विशेषता कम विकसित या गैर–पूंजीवादी भौगोलिक और सामाजिक '' बाह्य'' की आवश्यकता है, जिससे वह कच्चे माल और मध्यवर्ती उत्पाद प्राप्त करता है, जिस पर वह सामाजिक और पारिस्थितिक बोझ को स्थानांतरित करता है, और जिसमें वह भुगतान किए गए श्रम और अवैतनिक देखभाल सेवाओं दोनों को विनियोजित करता है। यह बहिष्कारी और खास है तथा एक साम्राज्यवादी विश्व व्यवस्था का पूर्वानुमान विकसित करता है। साथ ही, वह व्यवस्था उत्पादन और उपभोग के अनगिनत और संरचित कृत्यों में सामान्यीकृत होती है, जो इसके हिंसक चरित्र को इससे लाभान्वित होने वाले लोगों के लिए अदृश्य बना देता है।

> आधिपत्य नायकत्व

सामाजिक और पारिस्थितिक रूप से समस्याग्रस्त लेकिन आकर्षक जीवाश्म–उद्योगपति, यानि कि, साम्राज्यवादी, उत्पादन विधि और जीवन शैली को, एंटोनियो ग्राम्स्की के संदर्भ में, व्यापक रूप से आधिपत्य के रूप में स्वीकार किया जाता है। यह भौतिक संपदा (वैश्विक उत्तर में कई और वैश्विक दक्षिण में कुछ के लिए), लाभ और रोजगार का सृजन करता है, यह प्रमुख विमर्शों (''विकास की आवश्यकता'') और तेजी से डिजिटलाइजेशन द्वारा आकारित व्यक्तिपरकता (''अधिक प्राप्त करने के लिए'', ''सस्ती चीजों को प्राप्त करने के लिए'') में अंकित किया गया है। श्रम और प्रकृति का कहीं और शोषण, पूंजी और श्रम के बीच सामाजिक समझौते की स्थिति है। और यह वैश्विक उत्तर के वर्गीय, पितृसत्तात्मक और नस्लीय समाजों में होता है, जहां महत्वपूर्ण सामाजिक और भौगोलिक असमानताएं मौजूद हैं और हाल के दशकों में बढ़ी हैं।

> >

ग्लोबल नॉर्थ में, भोजन, परिवहन, बिजली, गर्मी या दूरसंचार जैसे क्षेत्रों में रोजमर्रा की जिंदगी के बुनियादी ढांचे काफी हद तक अन्य जगहों से सामग्री प्रवाह, संबंधित संसाधनों को निकालने वाले श्रमिकों और पारिस्थितिक सिंक पर निर्भर करते हैं जो वैश्विक स्तर पर अवसंरचना प्रणालियों के संचालन द्वारा उत्पादित उत्सर्जन को अवशोषित करते हैं। ग्लोबल नॉर्थ में श्रमिक इन प्रणालियों से प्रेरण ा केवल इसलिए नहीं लेते क्योंकि वे उन्हें एक अच्छे जीवन के घटक मानते हैं, बल्कि इसलिए कि वे उन पर निर्भर हैं। अधिकतर, यह एक व्यक्तिगत पसंद नहीं है जिसके कारण श्रमिक ''कहीं से भी सस्ता भोजन'' (फिलिप मैकमाइकल) खरीदते हैं, कार चलाते हैं, या जीवाश्म ईंधन को जलाने से उत्पन्न बिजली से अपने घरों को रोशन करते हैं। इसके बजाय, उन्हें अपने परिवार का पालन–पोषण करने, काम प्राप्त करने के लिए ऐसा करना पड़ता है, या चूँकि जनोपयोगी सेवाएं अक्षय विकल्पों की पेशकश नहीं करती है क्योंकि कई देशों में अब तक अक्षय ऊर्जा को उच्च कीमतों पर प्रदान किया गया है। इस प्रकार, श्रमिकों को साम्राज्यवादी जीवन शैली जीने में केवल इसलिए मजबूर किया जाता है क्योंकि परवर्ती वैश्विक उत्तर की कई जीवन–निर्वाह प्रणालियों में कार्यान्वित और संस्थागत है।

> उत्तर–दक्षिण संबंध

साम्राज्यवादी जीवन शैली का तात्पर्य वैश्विक स्तर पर एक पदानुक्रम है: उपनिवेशवाद के उदय के बाद से, वैश्विक दक्षिण की अर्थव्यवस्थाओं में काम करने और रहने की स्थिति, संसाधन निष्कर्षण और औद्योगिक या सेवा उत्पादन के अपने प्रमुख रूपों के साथ, बड़े पैमाने पर पूंजीवादी केंद्रों की आर्थिक जरूरतें पूरा करने हेतु तैयार की गई है । घरेलू वर्ग, लैंगिगता , लिंग और नस्लीय संबंध विशेष रूप से नहीं, बल्कि अनिवार्य रूप से, इन जरूरतों की ओर उन्मुख हैं।

अतः साम्राज्यवादी जीवन शैली की अवधारणा का उद्देश्य यह दिखाना और समझाना है कि किस प्रकार नव–औपनिवेशिक उत्तर–दक्षिण संबंधों में, वर्ग और लिंग संबंधों में, और उपभोग और उत्पादन की प्रथाओं में नस्लीय संबंधों द्वारा वर्चस्व, शक्ति और हिंसा को सामान्यीकृत किया जाता है, ताकि उन्हें ऐसा नहीं माना जाए। कई महिलाओं, विशेष रूप से नस्लीय महिलाओं को श्रम विभाजन में निचले पायदान पर रखा जाता है, और उनके श्रम और उनके शरीर का भी अधिक शोषण होता है; यहाँ हमें निर्धनता के नारीकरण की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। जीवन की इस पद्धति को न केवल गहरा किया गया है, बल्कि भौगोलिक रूप से पूंजीवादी अर्ध–परिधि के देशों में भी विस्तारित किया गया है।

अपने ऐतिहासिक गठन सहित, वर्तमान वैश्विक राशि समूह में उत्पादक और विनाशकारी दोनों विशेषताएं हैं। यह असमान विकास और अन्योन्याश्रितताओं, संकट की प्रवृत्तियों, और साम्राज्यवादी जीवन शैली के स्थिर पहलुओं से आकारित होती हैं, अर्थात, इसके संकट गहराने वाले पहलुओं में ही संकट से निपटने का हिस्सा निहित है।

इस विरोधाभासी गतिशीलता का एक प्रमुख उदाहरण कारों के दहन इंजन को इलेक्ट्रिक इंजन के साथ बदलने के लिए वर्तमान के भारी प्रयास है। इस रणनीति के आर्थिक, राजनीतिक और वैज्ञानिक नायक वादा करते हैं कि यह जलवायु संकट से प्रभावी ढंग से निपटेगा (परिवहन क्षेत्र अभी भी ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में मुख्य योगदानकर्ता है)। दरअसल, इलेक्ट्रिक कारें ऑटोमोबिलिटी के कारण होने वाली सामाजिक–पर्यावरणीय समस्याओं पर काबू पाने में बहुत कम योगदान देती हैं। कच्चे माल की निर्भरता केवल जीवाश्म से धातु संसाधनों में स्थानांतरित हो जाएगी, इलेक्ट्रिक कारों में उछाल के परिणामस्वरूप, मुख्य रूप से ग्लोबल साउथ में, खनन क्षेत्र तबाह हो जाएगा, और बाइक, पैदल चलने वालों, और सार्वजनिक परिवहन की कीमत पर कारों द्वारा शहरी और ग्रामीण स्थानों पर वर्चस्व कायम रहेगा।

''हरित अर्थव्यवस्था'', जिसका इलेक्ट्रो–ऑटोमोबिलिटी एक उत्कृष्ट प्रतीक है, निवेश, नौकरियों पर उच्च रिटर्न और पारिस्थितिक संकट को कम करने का वादा करता है। ऐसा करने में यह एक पारिस्थितिक आधुनिकीकरण के गलियारे में बना रहता है जो उत्पादन और जीवन जीने के पूंजीवादी तरीके की नींव पर सवाल नहीं उठाता है। एक हरित पूंजीवादी गठन जिसमें यूरोपीय ग्रीन डील जैसी हरित अर्थव्यवस्था रणनीतियाँ, हाल के वर्षों में और अधिक प्रकट हुईं सामाजिक– पारिस्थितिक विरोधाभास के प्रसंस्करण में योगदान दे सकती हैं। लेकिन यह इसे एक स्थानिक रूप से अनन्य और अस्थायी रूप से सीमित तरीके से करेगा जो सामाजिक और पर्यावरणीय लागतों का उत्पादन जारी रखते हुए उन्हें समय और स्थान में बाहरी बनाता है।

> चर्चा हेतु स्वानुभविकता

''रहने की साम्राज्यवादी विधा'' का अनुमान न केवल वैश्विक उत्तर से बल्कि वैश्विक दक्षिण से भी विविध और समृद्ध बौद्धिक परंपरा पर आधारित है। आलोचनात्मक सोच के लैटिन अमेरिकी स्वरुप, निर्भरता सिद्धांत या राजनीतिक पारिस्थितिकी में योगदान और ''संरचनात्मक विषमता,'' ''कॉडिलिस्मो,'' ''सत्ता की औपनिवेशिकता'' (पेरू के समाजशास्त्री एनीबल क्विजानो द्वारा विकसित), या ''ज्ञान की औपनिवेशिकता'' (एडगार्डो लैंडर द्वारा सुझाई) जैसी अवधारणाओं में अन्य चीजों के बीच दृष्टिगोचर ,यहां विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इन उपागमों के बीच संवाद जारी रखने और उन्हें अनुभवजन्य शोध में आगे लागू करने से साम्राज्यवादी जीवन शैली और इसके बढ़ते अंतर्विरोधों के बारे में हमारी समझ में और वृद्धि होगी। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह उन विकल्पों का पता लगाने में मदद करेगा जो तब सामने आते हैं जब टूटन घटित होती है तथा तथाकथित सामान्यता को अब सामान्य नहीं माना जाता है, और इस प्रकार एकजुट जीवन शैली की संभावनाएं और रुपरेखा को खोद कर निकाला जा सकता है। ■

सभी पत्राचार उलरिच ब्रांड को <ulrich.brand@univie.ac.at> पर और मार्कस विसेन को <markus.wissen@hwr-berlin.de> पर प्रेषित करें।

1. Brand, U. and Wissen M. (2021) *The Imperial Mode of Living. Everyday Life and the Ecological Crisis of Capitalism*. London: Verso.

> एंथ्रोपोसिन का अविचार :

कैपिटलोसिन युग में प्रकृति और पुरुष

जेसन डब्ल्यू मूर, बिंघमटन विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क, यूएसए द्वारा

पिएटर ब्रुएगेल द एल्डर से ''बड़ी मछली छोटी मछली को खाते हुए'' का स्ट्रीट–आर्ट संस्करण श्रेयः सेसिलीबंग

एंथ्रोपोसीन नई सहस्राब्दी की सबसे प्रभावशाली पर्यावरणवादी अवधारणा है। क्या यह प्रमुख रूप से खतरनाक भी है?

एंथ्रोपोसीन? *मानव* का युग? यह शब्द मासूम और वैज्ञानिक प्रतीत होते हैं। जलवायु संकट की गंभीर वास्तविकताओं को एक महत्वपूर्ण टकराव के रूप में अंकित किया गया है। यह वास्तव में पतन की कहानी है। मानव ''प्रकृति की महान शक्तियों पर अभिभूत है।'' पृथ्वी प्रणाली के वैज्ञानिकों के लिए, *मानव और* प्रकृति, निश्चित रूप से अराजनीतिक हैं। परन्तु यथार्थ बिल्कुल अलग है। उन्हीं विद्व ानों के लिए जो ''गोल्डन स्पाइक्स'' – एक *भूवैज्ञानिक एंथ्रोपोसीन* –को खोजने के लिए प्रतिबद्ध थे – बहुत जल्दी मानवीय मामलों की कहानियों की तरफ झुक गए। उन्होंने आधुनिकता के विवादास्पद इतिहास को तकनीकी–जनसांख्यिकीय आख्यानों से बदल दिया। इससे *पॉपुलर एंथ्रोपोसिन* का जन्म हुआ। इसके जुड़वां स्तंभ, वाट्स का स्टीम इंजन (1784) और ''मानव जाति का तीव्र विस्तार'' थे। यदि इतिहास खराब था, तो इसकी विचारधारा बदतर थी। क्योंकि मनुष्य और प्रकृति निर्दोष नहीं है। ये साम्राज्यवादी–बुर्जुआ आधिपत्य के लिए प्रचालन तंत्र रहे हैं। अप्रत्याशित सामाजिक उग्रवाद के बीच थॉमस माल्थस का प्रति–क्रांतिकारी पथ (1798) उभरा। पॉल आर. एर्लिच की *द पॉपुलेशन बॉम्ब* (1968) ठीक उसी समय उभरी जब मजदूर, किसान और छात्र विद्रोह ने युद्ध–पश्चात् के पूंजीवाद को खतरे में डाल दिया था। दोनों ही क्षणों में – आज के एंथ्रोपोसीन की तरह –दुनिया की मूलभूत सामाजिक–पारिस्थितिकीय दरारें प्रकृतिवाद के बपतिस्मात्मक झरने में साफ होती हैं। इसका संदेश? परदे के पीछे के *मानव* पर ध्यान मत दो । हम जिस बेहतरीन की आशा कर सकते हैं ,वह ''प्राकृतिक नियमों'' का प्रभावी प्रबंधन है।

> मानव और प्रकृति, बुर्जुआ प्रकृतिवाद से लेकर 'कोई विकल्प नहीं है' तक

यदि आपने कभी भी यह महसूस किया है कि पूंजीवाद के अंत की तुलना में दुनिया के अंत की कल्पना करना आसान है, तो यही कारण है। बुर्जुआ प्रकृतिवाद एक अधिक न्यायपूर्ण और लोकतांत्रिक दुनिया के लिए संघर्षों के इतिहास को मिटा देता है। इसके आलोक में, पॉपुलर एंथ्रोपोसीन निराशा की एक पारिस्थितिकी है। यह नव–उदारवादी हठधर्मिता की पर्यावरणवादी अभिव्यक्ति है: *कोई विकल्प नहीं है*। हम सिर्फ ग्रहीय प्रबंधन की अपरिहार्यता को ही स्वीकार कर सकते हैं। (और यह भी अवास्तविक लगता है) मानव और प्रकृति एक पर्यावरणीय कल्पना के लिए एकदम सही अफीम हैं जो हमेशा हमें बताना चाहती है कि अंतिम क्षण निकट हैं, और यह व्यवस्था को नाम देना तो दूर, इसे खत्म करना भी नहीं चाहती है। 1970 के दशक के प्रारम्भ से, इसने दुनिया के पेशेवर और प्रबंधकीय तबके के हिस्से पर ईमानदार लेकिन राजनीतिक रूप से बेकार लेखन के प्रवाह को चालू किया है। इस बीच, एक प्रतिशत हमें ग्रहीय आग में बड़ी तेजी से ले जा रहा है।

मानव और प्रकृति, तब,शायद ही निर्दोष हैं। इन शब्दों (और उनके संज्ञेय, जैसे समाज) ने 1550 के बाद ही, जो पूंजीवाद के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था, अपने समकालीन अंग्रेजी–भाषा के अर्थ प्राप्त किए। यह जलवायु संकट, संकटमय सर्वहाराकरण और वृक्षारोपण क्रांति का युग था। इस उथल–पुथल भरे युग में, मानव और प्रकृति ने *सत्तारूढ़ अमूर्त* के रूप में आकार लियाः जो अंतहीन संचय में मानव और जीवन के अन्य जालों को पुनर्गठित

> >

करने के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शक था। सभ्य परियोजनाओं से संसक्त, इन अमूर्तताओं ने वर्चस्व के एक लोकाचार –प्रकृति पर मनुष्य का– को तैयार किया जिसने तत्परता से आधुनिक नस्लवाद और लिंगवाद का उत्पादन किया, जो लाभप्रदता को आगे बढ़ाने के लिए बुर्जुआ प्रकृतिवाद और विश्व–ऐतिहासिक अभियान से बंधे थे। यह कैपिटलोसिन की भोर थी, एक भू–ऐतिहासिक युग जिसने वर्चस्व, शोषण और पर्यावरण–निर्माण की नई रणनीतियों को एकीकृत किया।

इस प्रकार सत्ता, लाभ और जीवन की विश्व–पारिस्थितिकी के रूप में पूंजीवाद का उदय आर्थिक के बहुत आगे विस्तारित होता है। *कैपिटलोसीन* ने वेब–जीवन में वर्ग शोषण और अधिशेष संचय के नए प्रतिमानों को एक साथ बुना। 1492 के बाद एक पूंजीवादी पैंजिया का निर्माण ग्रहीय इतिहास में एक जैव–भौगोलिक ऐतिहासिक घटना थी। 1610 का ऑर्बिस स्पाइक – जो मस्लिन और लुईस के लिए एंथ्रोपोसिन के *भूगर्भिक* मूल को चिह्नित करता है –कार्बन गिरावट, दासता और अन्य सस्ती प्रकृति सम्बन्धी रणनीतियों द्वारा संचालित नरसंहार का प्रत्यक्ष परिणाम, का ''सुनहरा स्पाइक'' बन गया।

> प्रोमेथियनवाद: ऐतिहासिक पूंजीवाद का भू–सांस्कृतिक तर्क

वे रणनीतियाँ पूँजी संचय का असंबद्ध तर्क नहीं थीं। वे भू–सांस्कृतिक वर्चस्व: प्रोमेथियनवाद के एक नवीन तरीके से सक्षम की गयी थीं। यहाँ मानव, जिसका मानव प्रजाति से कोई लेना–देना नहीं था, प्रकृति के सामने ठीक उसी प्रकार खड़ा था जैसे भगवान मनुष्य के सामने। सोलहवीं शताब्दी के स्पेनियों के लिए, अच्छे ईसाइयों के लिए कड़ी मेहनत कर के स्वदेशी लोगों की अपूर्ण प्रकृति को बचाया जा सकता था । प्रोमेथियनवाद हर महान साम्राज्य का एक सचेतन सिद्धांत था, जिसके पुजारियों और सैनिकों, व्यापारियों और बागवानों ने तेजी से औपनिवेशिक लोगों को बर्बर, तर्कहीन और सभ्यता के लिए अयोग्य होने की ''खोज'' की। ऐसे लोग –स्वदेशी, अफ्रीकी, सेल्टिक, स्लाव और अनगिनत अन्य– को नागरिक बनाया गया ताकि उन्हें बेहतर रूप से सभ्य किया जा सकता था। साम्राज्य ''सभ्यता के लिए विद्यालय'' बन गया। उसके बाद आने वाले प्रत्येक साम्राज्य ने, सभ्यता और बाद में ''विकास'' को इन बर्बर लोगों तक पहुँचाया।

इसका जलवायु संकट और एंथ्रोपोसीन से क्या लेना–देना है? सब कुछ। प्रकृति वह सब कुछ बन गई जिसके लिए बुर्जुआ भुगतान नहीं करना चाहते थे। इसकी *सस्तापन,* वर्चस्व और संचय की एक रणनीति थी जो भू–सांस्कृतिक *अवमूल्यन* के एक *अभूतपूर्व* तंत्र के लिए ''आर्थिक'' क्षणों में शामिल हो गई। यह कपिटालोसीन विकल्प का केंद्र है।

इसके बाद हम आईपीसीसी के हालिया बयान पर आलोचनात्मक रूप से चिंतन करने के लिए ठहर सकते हैं: ''यह सुस्पष्ट है कि मानव प्रभाव ने वायुमंडल, महासागर और भूमि को गर्म कर दिया है।'' यह सुस्पष्ट रूप से सत्य है – और अनुचित रूप से पक्षपाती। क्योंकि सबसे अधिक वैचारिक रूप से आरोपित कल्पनीय वाक्यांश *''मानव द्वारा प्रभावित''* है। हम धन और शक्ति के हिंसक रूप से असमान वितरण के लिए प्रतिबद्ध व्यवस्था में, जलवायु परिवर्तन के लिए ऐतिहासिक जिम्मेदारी के एक समान रूप से समतावादी वितरण पर सही सवाल उठाते हैं।

शोषण, हिंसा और गरीबी के शिकार लोगों को दोष देने के लिए *मानवजनित* जलवायु परिवर्तन एक विशेष ब्रांड के रूप में प्रकट होता है। क्या यह एक लगभग सटीक विकल्प है ? हमारा युग *पूंजीजन्य* जलवायु संकट का युग है: भूवैज्ञानिक एंथ्रोपोसिन *पूंजी* द्वारा बनाया गया है, न कि ''मानव प्रभावों'' द्वारा। 1854 से, नब्बे निगमों ने औद्योगिक CO_2 उत्सर्जन का दो–तिहाई उत्सर्जित किया है। आज, एक प्रतिशत सबसे धनी निर्धनतम पचास प्रतिशत से दुगुना ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन करते हैं।

> कैपिटलोजेनिक जलवायु परिवर्तन: कैपिटलोसिन की इच्छामृत्यु की ओर

आज की जलवायु राजनीति को समझने के लिए हमें 1492 के बाद से प्रोमेथियनवाद के बैनर तले सामने आई वर्ग राजनीति पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। कैपिटलोसिन परिप्रेक्ष्य इक्कीसवीं सदी के जलवायु संकट के केंद्र में वर्चस्व, संचय और पर्यावरण–निर्माण के पैटर्न की पहचान करता है। महत्वपूर्ण रूप से, यह जीवन के जाल में भू–राजनीतिक अर्थव्यवस्था और भू–सांस्कृतिक वर्चस्व के बीच संबंधों को उजागर करता है, जिससे एक *पूंजीजन्य* त्रिमूर्ति का निर्माण होता है: जलवायु वर्ग विभाजन, जलवायु रंगभेद, जलवायु पितृसत्ता। बौद्धिक – और इसलिए राजनीतिक – चुनौती जीवन, प्रभुत्व और संचय के इन विश्व–ऐतिहासिक जालों को संलग्न करना है। बिग ग्रीन के वैश्विक प्रबंधकीयवाद के खिलाफ, हम एक श्रमिक वर्ग की राजनीति की रूपरेखा शुरू कर सकते हैं जो जीवन के जाल को (कुछ) पुरुषों द्वारा प्रबंधित की जाने वाली चीजों के रूप में नहीं, बल्कि मुक्ति और एक न्यायोचित धारणीयता के लिए एक विश्वव्यापी संघर्ष में साथी के रूप में मानती है। ■

सभी पत्राचार सीधे जेसन डब्ल्यू मूर को <jwmoore@binghamton.edu> पर प्रेषित करें।

> माघरेब में समाजशास्त्र :
इतिहास और परिप्रेक्ष्य

मुनीर सैदानी, ट्यूनिस एलमनार विश्वविद्यालय, ट्यूनीशिया, अरब दुनिया के लिए वैश्विक संवाद के क्षेत्रीय संपादक और आईएसए कार्यकारी समिति के सदस्य (2018–22)

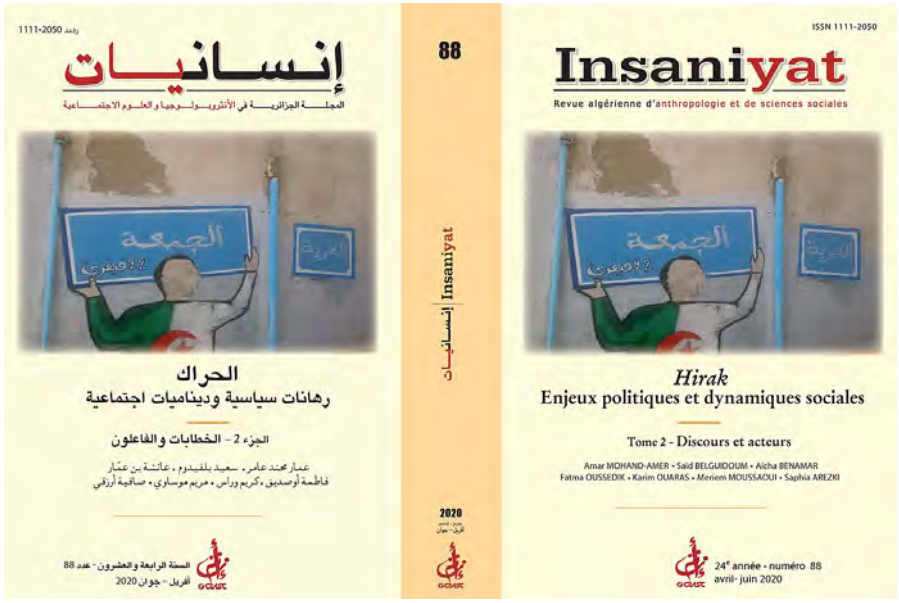

अल्जीरिया में स्थित सांस्कृतिक एवं मानवशास्त्रीय शोध केंद्र, Centre de Recherche en Anthropologie Sociale et Culturelle (CRASC), की पत्रिका, इंसानियत (मानविकी)

वैश्विक संवाद के बहाने से माघरेबियन समाजशास्त्रियों के काम और वैज्ञानिक उत्पादन की प्रक्रिया में अंतर्दृष्टि के विस्तार के लिए एक अदृश्य समाजशास्त्र पर प्रकाश डालने का यह सुअवसर है। निष्पक्षता की दृष्टि से "देशज" समाजशास्त्रियों सहित दुनिया भर में फैले इनके प्रवासी सहयोगियों के भी कम ही प्रयास दिखते हैं। यथार्थ यही है भले एंग्लोफोन और फ्रैंकोफोन की दुनिया में स्थितियां भिन्न दिखती हों। *वैश्विक संवाद* जिसकी चर्चा मैं पिछले एक दशक से कर रहा हूं, एक दुर्लभ अवसर है जिसका लाभ मघरेबियन समाजशास्त्रियों को लेना चाहिए। जब *वैश्विक संवाद* के संपादक समूह ने उत्तरी–अफ्रीका के मघरेबियन समाजशास्त्रियों को आवाज देने का प्रस्ताव रखा तो *वैश्विक संवाद* की अरब विश्व संपादकीय टीम ने पूरे क्षेत्र (अल्जीरिया, लीबिया, मॉरिटानिया, मोरक्को और ट्यूनीशिया) के समाजशास्त्रियों को भाग लेने के लिए आमंत्रित करने का निर्णय लिया। पर हम तीन से अधिक लेख भी प्राप्त करने में सफल नहीं हो सके।

पहला लेख लीबिया में समाजशास्त्र के अध्ययन–अध्यापन और अनुसंधान का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है। लीबिया के समाजशास्त्री मोहम्मद एल्टोबुली की ऐतिहासिक समीक्षा लीबिया विश्वविद्यालय की शुरुआत और उसमें पहले समाजशास्त्र विभाग की स्थापना पर वापस आती है तथा देश में समाजशास्त्र के एक अनुशासन के रुप में विकास की दिलचस्प यात्रा को दर्शाती है। दूसरे लेख में, अल्जीरियाई इतिहासकार और समाजशास्त्री हसनरेमाउन ने 1960 के दशक की शुरुआत से अल्जीरिया में समाजशास्त्र के उत्तर–औपनिवेशिक उतार–चढ़ावों को बताते हुए अल्जीरियाई विश्वविद्यालयों में समाजशास्त्र शिक्षण और अनुसंधान की मौजूदा स्थिति का विवरण प्रस्तुत किया। तीसरा और अंतिम लेख ट्यूनीशियाई समाजशास्त्रियों के प्रदर्शन को रेखांकित करता है। क्योंकि वे अपने देश में कई गुना संकट की चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। समाजशास्त्र में ऐसे विश्लेषणों का उददेश्य समाजशास्त्र के इतिहास और समाजशास्त्र के क्षेत्रीय एवं वैश्विक संदर्भ में ट्यूनीशियाई समाजशास्त्रियों के बीच नए विमर्श खड़ा करना है।

यह तीनों लेख माघरेबियन समाजशास्त्र की उपलब्धियों और कमजोरियों को रेखांकित करते हैं। माघरेबियन समाजशास्त्र का अपना काफी लंबा इतिहास रहा है जिससे जुड़े कुछ पहलुओं को इन लेखों के माध्यम से उजागर किया गया है। माघरेबियन समाजशास्त्र निरन्तर वैज्ञानिक मुद्दों को उठाता रहा है–उत्पादित ज्ञान की प्रतिमानात्मक पहचान, स्थानीय व क्षेत्रीय वैज्ञानिक समुदाय की संरचना, अंतरराष्ट्रीय समाजशास्त्रीय स्कूलों और धाराओं के बीच इसकी स्थिति इत्यादि। इस तरह के लेखों की लघु श्रृंगला का उद्देश्य राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संवाद की संस्कृति का विकास करना है।■

सभी पत्राचार मुनीर सैदानी को
<mounir.saidani@issht.utm.tn> पर प्रेषित करें।

> लीबिया में समाजशास्त्र

मोहम्मद एल्टोबुली, बेंगाजी विश्वविद्यालय, लीबिया और बेंगाजी विश्वविद्यालय के पूर्व राष्ट्रपति

त्रिपोली विश्वविद्यालय, लीबिया के सबसे पुराना विश्वविद्यालय का लोगो

सन् 1955 में बेंगाजी शहर में लीबिया विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही लीबिया में समाजशास्त्र एक महत्वपूर्ण विषय बन गया था। विश्वविद्यालय में कला और शिक्षा संकाय के पांच प्रमुख विभागों के साथ अरबी भाषा, इतिहास, भूगोल, दर्शन और समाजशास्त्र की शुरुआत हुई। कला संकाय के कुल 33 पुरुष छात्र में से 13 समाजशास्त्र के छात्र थे। जिनमें 1959–1960 शैक्षिक सत्र में नौ छात्रों की पहले बैच ने स्नातक पूरा किया। शुरुआत में समाजशास्त्र विभाग को तब दर्शन और सामाजिक अध्ययन विभाग के साथ ही रखा गया था। 1972–73 के शैक्षणिक वर्ष में इन दोनों विभागों को स्वतंत्र विभाग के रुप में स्थापित किया गया। इसी तरह 1966–67 में त्रिपोली में एक शिक्षा संकाय की स्थापना की गई और वर्ष 1971–72 में वहां समाजशास्त्र विभाग शुरु हुआ।

> आगामी विकास

1959 में तेल की खोज के बाद लीबिया में राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों में तेजी आयी। जिसका परिणाम यह हुआ कि लीबिया सरकार ने शिक्षा पर और विशेष रूप से उच्च शिक्षा पर अधिक ध्यान देना शुरू किया। अपने छात्रों को विदेशों में स्नातक की पढ़ाई के लिए भेजा। विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका और पश्चिमी यूरोप में लीबियाई छात्रों को स्नातकोत्तर डिग्री हासिल करने के लिए भेजा गया।

लीबिया में उच्च शिक्षा के बढ़ते ग्राफ और नए–नए विश्वविद्यालयों की स्थापना के साथ विभागों में पढ़ाने के लिए समाजशास्त्र के शिक्षकों की बढ़ती आवश्यकता के चलते अधिक से अधिक स्नातक छात्रों को विदेश भेजा गया। जैसे ही उन्होंने स्नातक किया, उन्होंने विदेशी संकाय सदस्यों को पढ़ाना और उनकी सहायता करना शुरू कर दिया। जो उस समय हर समाजशास्त्र विभाग में मुख्य स्टाफ सदस्य थे। वर्ष 2002–03 तक लीबिया के समाजशास्त्र विभाग में 27 से अधिक संकाय सदस्य थे। इन विभागों ने समाजशास्त्र के विभिन्न पाठ्यक्रमों की पेशकश की, जिनमें सामाजिक सिद्धांत, अनुसंधान पद्धति, सामाजिक सांख्यिकी और डेटा विश्लेषण मुख्य पाठ्यक्रम के रूप में शामिल किए गए। अन्य पाठ्यक्रमों में सामाजिक परिवर्तन, आधुनिकीकरण, जनसांख्यिकी, औद्योगिक समाजशास्त्र, सामाजिक मुद्दे इत्यादि शामिल थे।

देश भर में खोले गए सभी विभागों से हजारों स्नातक तैयार हुए। इतनी बड़ी संख्या में स्नातक और परास्नातक स्तर पर पढ़ाने के लिए योग्य स्टाफ सदस्यों की बढ़ती संख्या ने देश के भीतर स्नातक अध्ययन पर ध्यान केंद्रित किया। यह बाहरी संघर्ष के कारण भी था जो लीबिया और पश्चिमी देशों में मुख्य रूप से अमेरिका के साथ चल रहा था। लीबिया में दो प्रमुख विश्वविद्यालयों–बेंगाजी विश्वविद्यालय और त्रिपोली विश्वविद्यालय में स्नातक कार्यक्रम स्थापित किए गए। फिलहाल लीबिया में समाजशास्त्र के अधिकांश विभाग कम से कम एक मास्टर डिग्री प्रदान कर रहे हैं। लीबिया में शिक्षा के क्षेत्र की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक 1988 में त्रिपोली में स्नातकोत्तर अध्ययन हेतु लीबिया अकादमी की स्थापना है। जिसके बेंगाजी, मिसुरता, डरना और इजदाबिया में भी शाखा परिसर खोले गए। लीबिया अकादमी ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों जैसे विज्ञान, इंजीनियरिंग, कानून, भाषा और साहित्य तथा सामाजिक विज्ञान में विभिन्न मास्टर्स और पी–एच.डी. डिग्री प्रदान करती है।

स्नातक स्तर पर सभी समाजशास्त्र विभागों के अधिकांश पाठ्यक्रम का हिस्सा लीबियाई समाज पर आधुनिकीकरण और विकास के प्रभावों की चिंता पर केंद्रित था। वहीं अब वैश्वीकरण, उत्तर–आधुनिकीकरण, गरीबी, अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष और महामारी जैसे मुद्दों पर केंद्रित हो गया है।

> चुनौतियाँ

इस तरह से लीबिया में समाजशास्त्र की जड़ें धीरें–धीरें मजबूत हुई। लीबिया के विश्वविद्यालयों में और स्नातकोत्तर अध्ययन के लिए लीबिया अकादमी के भीतर समाजशास्त्र सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक विज्ञान के रूप में उभरा। लीबिया में समाजशास्त्र को कई बाधाओं का सामना भी करना पड़ा है जिसमें स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों स्तर के कार्यक्रमों के लिए योग्य प्रशिक्षित सदस्यों की कमी भी शामिल है। अन्य शिक्षण संस्थानों में जाने से पहले विशेषतः खाड़ी राज्यों में कॉलेज शिक्षण अनुभव प्राप्त करने के लिए

>>

अधिकांश संकाय सदस्य पड़ोसी देशों से कम ही समय के लिए आए थे। दूसरी ओर, लीबिया विश्वविद्यालय में पढ़ाने वाले अधिकांश शिक्षक अपने मूल विश्वविद्यालयों में ख्यातिलब्ध विद्वान थे।

अन्य बाधाओं में पुस्तकालयों की कमी और पुस्तकों और पत्रिकाओं का अभाव शामिल है। इसके अलावा स्नातक छात्रों का मार्गदर्शन करने और उन्हें सही शोध विषय के चयन व सिद्धांत या कार्य–प्रणाली चुनने के लिए मार्गदर्शन हेतु परामर्शदाताओं की कमी है। इन विभिन्न समस्याओं को चिन्हित करने में ओमरान एम.अलगुएबजी का उल्लेखनीय सहयोग रहा। जिन्होनें एक राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान दिए अपने एक साक्षात्कार में इन सब समस्याओं का उल्लेख किया। इन समस्याओं पर चर्चा के साथ ही उन्होंने स्नातक अध्ययन के लिए एक ठोस और स्पष्ट रणनीति की कमी का हवाला भी दिया जिसका एक परिणाम यह हुआ कि शोधार्थियों और उनके पर्यवेक्षकों द्वारा चुने गए कुछ विषयों की लीबियाई समाज के लिए बहुत प्रासंगिकता सिद्ध नहीं हो सकी।

1990 के दशक की शुरुआत में स्नातक और परास्नातक दोनों कार्यक्रमों की गुणवत्ता में सुधार और प्रत्येक विश्वविद्यालय व कॉलेज स्तर पर गुणवत्ता नियंत्रण प्रकोष्ठ की स्थापना के साथ बहुत सी चीजें बेहतर हुईं । विभिन्न कार्यक्रमों में समाजशास्त्र के विभिन्न क्षेत्रों में ठोस पाठ्यक्रम प्रस्तुत किए गए है। अनुसंधान पद्धति, समाजशास्त्रीय सिद्धांतों, सामाजिक सांख्यिकी और डेटा विश्लेषण में बहुत सक्षम स्टाफ सदस्य अधिकांश विश्वविद्यालयों के समाजशास्त्र विभागों में शामिल हुए है। इन प्रयासों का सबसे बड़ा लाभ तो यही मिला कि लीबियाई छात्रों को विदेश में उच्च शिक्षा हासिल करने में कोई समस्या नहीं आयी।

> निष्कर्ष

उपरोक्त से स्पष्ट है कि कैसे लीबिया में समाजशास्त्र अर्द्धसदी के मध्य में "लीबिया विश्वविद्यालय" की स्थापना के साथ अधिकांश लीबियाई शिक्षण संस्थानों में सबसे महत्वपूर्ण विषय के रुप विकसित होता गया। दूसरी ओर, इस दिशा में कई समस्याएं भी आयी जिसने लीबिया में समाजशास्त्र के विकास को अवरुद्ध किया। जो मुख्यतः कमजोर पाठ्यक्रम और विशेष रूप से सिद्धांत व कार्यप्रणाली के स्तर पर ज्यादा रही। लीबिया के विद्वान भी कई अन्य जगहों की तरह ही अपने स्वयं के सिद्धांतों को विकसित करने में विफल रहे। लीबिया में सामाजिक घटनाओं का विश्लेषण करने के लिए पश्चिमी सिद्धांतों को ही उपयोग में लाया गया। हालांकि, पश्चिमी और अन्य विश्वविद्यालयों से समाजशास्त्र स्नातकों की बढ़ती संख्या के कारण, लीबिया में सामाजिक विज्ञानों के बीच समाजशास्त्र एक अधिक ठोस क्षेत्र के रुप में विकास हुआ है। इसके अलावा लीबिया के बहुत से संस्थानों से समाजशास्त्र स्नातकों के बीच से नया नेतृत्व उभरा, जिनमें से कुछ सामाजिक मामलों के मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालयों में उच्च पदों पर आसीन हुए। ■

सभी पत्राचार मोहम्मद एल्टोबुली को
<Mohammad.Tobuli@uob.edu.ly> पर प्रेषित करें।

> अल्जीरिया में समाजशास्त्र : शिक्षण, उपयोग और स्थिति

हसन रेमाउन, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, ओरान 2 विश्वविद्यालय और सामाजिक और सांस्कृतिक नृविज्ञान अनुसंधान केंद्र (सीआरएएससी) ओरान, अल्जीरिया में अनुसंधान के एसोसिएट निदेशक

द एल्जेरियन हीरक (2019–2020 के सामाजिक आंदोलन के लिए एक अरबी शब्द)।
श्रेयः क्रियेटिव कॉमन्स

वर्तमान परिदृश्य के साथ अल्जीरिया में समाजशास्त्र जैसे विषय के उपयोग और स्थिति पर यथासंभव संक्षेप में चर्चा कैसे की जा सकती है? संक्षेप में मुझे ऐसा लगता है कि कम से कम तीन पहलुओं पर अवश्य ध्यान दिया जाए ।

(1) अल्जीरियाई विश्वविद्यालय में एक विषय के रुप में समाजशास्त्र की शुरूआत और इसका विकास।

(2) एक अनुशासन के रुप में सामाजिक माँग और अवसरों का विस्तार

(3) ज्ञान के क्षेत्र में समाजशास्त्र की स्थिति और अन्य सामाजिक विषयों के संबंध में इसकी विशेषता वाली समग्र गतिशीलता।

> समाजशास्त्र की शिक्षा

सन् 1962 तक अल्जीयर्स विश्वविद्यालय फ्रांसीसी शिक्षाविदों पर ही ज्यादा निर्भर थे। अल्जीरिया में समाजशास्त्र का शिक्षण और उपयोग समाजशास्त्र की दुर्खीमियन परंपरा के साथ ही शुरु हुआ। शुरुआती वर्षों में समाजशास्त्र को समानान्तर अन्य मुख्य विषयों जैसे दर्शनशास्त्र के साथ संचालित किया गया। नैतिकता और समाजशास्त्र में एक प्रमाण–पत्र कोर्स के साथ संस्थाबद्ध किया गया। सन् 1962 से समाजशास्त्र में डिग्री और स्नातकोत्तर डॉक्टरेट की शुरुआत हुई। इसी के साथ इसे मानविकी के संकाय में बदल दिया गया था। जुलाई 1962 में अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने वाले अल्जीरिया को यह मॉडल विरासत में मिला।अल्जीयर्स विश्वविद्यालयों में समाजशास्त्र की पढ़ाई उच्च शिक्षा में चार प्रमाण–पत्रों ("certificats d'enseignement supérieur," और CES) के माध्यम से होती रही। सामान्य समाजशास्त्र, सामाजिक मनोविज्ञान, राजनीतिक व सामाजिक अर्थव्यवस्था और एक विकल्प के रूप में उत्तरी अफ्रीका का नृवंशविज्ञान या जनसांख्यिकी।

1970 और 1980 के दशक के बाद समाजशास्त्र शिक्षण का सीईएस के लिए अधिक लक्षित शिक्षण मॉड्यूल विकसित हुआ जो प्रति घंटा संस्करणों में सैद्धांतिक पाठ्यक्रमों और पर्यवेक्षित या व्यावहारिक कार्य तथा ट्यूटोरियल्स के साथ ही शुरुआती वर्षों के दौरान फील्ड इंटर्नशिप को एकीकृत करके बनाया गया। यह चार वर्षों के लिए है जिसमें दो वर्ष के सामान्य कोर और इतनी ही अवधि की विशेषज्ञता के साथ दिए निर्देश है जो सत्र के अंत में एक शोध–प्रबंध के लेखन की ओर बढ़ता है। इस बीच विश्वविद्यालयों का कई गुणा विस्तार हुआ है। जहां 1958 से अल्जीयर्स और ओरान तथा कॉन्सटेंटाइन के अनुबंधों तक ही सीमित थे, आज उन की संख्या दर्जनों तक पंहुच गई है। अपने साधनों के आधार पर ये एक से अधिक विशिष्टताओं (कार्य का समाजशास्त्र, शहरी समाजशास्त्र, ग्रामीण समाजशास्त्र, सांस्कृतिक समाजशास्त्र, राजनीतिक समाजशास्त्र, आदि) को खोल सकते हैं। अल्जीरिया में समाजशास्त्र का शिक्षण जो शुरू में दो अलग–अलग भाषाओं (अरबी और फ्रेंच) में था। वह 1980 के दशक की शुरुआत से पूरी तरह अरबीकृत हो गया था। यह पहले भी 1970 के दशक में दर्शन और इतिहास के लिए किया जाता था। यह भी उल्लेखनीय है कि बैचलर ऑफ आर्ट्स, मास्टर और डॉक्टरेट (फ्रेंच में लाइसेंस–मास्टर–डॉक्टरेट) अर्थात् एलएमडी सिस्टम है (यूरोप में सामान्यीकृत) जो लगभग दस साल पहले अपनाया गया था। अंत में, स्पष्टतः करना चाहूंगा कि, दुर्खीमियन और वेबेरियन परंपराओं के अलावा अल्जीरियाई समाजशास्त्रियों की कुछ पीढ़ियां इब्न खल्दुन और मार्क्स के सैद्धांतिक दृष्टिकोण के साथ–साथ पियरे बॉर्डियू और जैक्स बर्क जैसे विद्वनों के काम से विशेषकर प्रभावित हुई हैं।

> सामाजिक मांग और अनुशासन के रुप में अवसर

पूरे देश में विश्वविद्यालय प्रणाली के विस्तार और जनसांख्यिकीय उछाल के कारण शिक्षा प्रणाली पर एक व्यापक प्रभाव

> >

पड़ा है। अल्जीरिया में हजारों समाजशास्त्री हर साल श्रम बाजार में प्रवेश करते हैं। लेकिन उनमें से सभी उन नौकरियों में काम नहीं करते हैं जो सीधे उनके शैक्षिक प्रोफाइल से संबंधित हो। वे मुख्य रूप से सार्वजनिक सेवाओं (प्रशासन, शिक्षण, प्रेस, पुलिस, आर्थिक क्षेत्र आदि) में है। लेकिन निजी क्षेत्र में भी नौकरियों की उपलब्धता के आधार पर विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में चले जाते हैं। वास्तव में, जो छात्र समाजशास्त्र की धारा में स्वयं को खपाते हैं, वे अक्सर ऐसा केवल इसलिए करते हैं क्योंकि वे प्रवेश प्रणाली द्वारा इस ओर उन्मुख होते हैं। खासकर जब उनके पास मानविकी में स्नातक की डिग्री होती है, जो उत्तीर्ण होने के लिए आवश्यक न्यूनतम औसत अंकों के साथ हासिल की जाती है।

हालांकि, समाजशास्त्रियों के काम के लिए सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों की मांग है। सार्वजनिक संस्थानों को, विशेष रुप से सांख्यिकीय सर्वेक्षणों में विशेषज्ञता की आवश्यकता रहती है जैसे कि जनसंख्या जनगणना (1850 से प्रारम्भ) जिसके लिए मूल्यांकन और योजना की आवश्यकता होती है। सामाजिक कल्याण, सामाजिक आंदोलनों का पूर्वानुमान और नियंत्रण व उल्लेख करने के लिए कुछ आवश्यक समाजशास्त्रीय विशेषज्ञता से जुड़े हुए अन्य मुद्दे हैं। सार्वजनिक प्राधिकरण मुख्य रूप से अनुभवजन्य सर्वेक्षणों के पक्ष में रहते हैं। विश्वविद्यालय शिक्षण और वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए समाजशास्त्रियों के दृष्टिकोण महत्वपूर्ण माने जाते है। शोधकार्य विश्वविद्यालयों में उपलब्ध प्रयोगशाला गतिविधियों और राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्रों के माध्यम से किया जाता है। इस प्रकार, वैज्ञानिक अनुसंधान और तकनीकी विकास के उन्मुखीकरण और पंच वर्षीय कार्यक्रम पर 1998–2002 कानून ने देश में प्राथमिकताओं को स्थापित करने का काम किया है। जो 30 राष्ट्रीय अनुसंधान कार्यक्रमों का निर्धारण करता है। जिनमें से दस प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से समाजशास्त्रीय ज्ञान से जुड़े हैं। "जनसंख्या और समाज" कार्यक्रम, जो पूरी तरह से समाजशास्त्रियों, मानवविज्ञानीयों और भूगोलवेत्ताओं के उद्देश्य से सम्बद्ध है। यह 118 विषयों को सूचीबद्ध करता है। जिन्हें 32 अक्षों और (7) अनुसंधान क्षेत्रों में विभाजित किया गया है– (1) शहर और शहरी स्थान (2) ग्रामीण स्थान (3) परिवार, महिला और समाज (4) जनसंख्या का प्रवास और स्थानिक वितरण (5) कार्य और रोजगार (6) सामाजिक गतिशीलता (7) ज्ञान, अभिव्यक्ति और कल्पना।

> स्थिति और भूमिका

स्वतंत्रता के बाद अल्जीरिया में उपनिवेशवादी राष्ट्र राज्य की विरासत वाली विश्वविद्यालयी वैज्ञानिक प्रणाली का ही विस्तार हुआ। बावजूद इसके कि औपनिवेशिक व्यवस्था को कायम रखने और वैद्य बनाने के प्रयास राज्य द्वारा होते रहे। इसकी सामाजिक विज्ञान और मानविकी के क्षेत्र में निरन्तर आलोचना होती रही। यह विशेष रूप से इतिहास लेखन, नृवंशविज्ञान और मनोविज्ञान तथा मनोचिकित्सा जैसे विषयों को सम्बोधित करने वाली नस्लवादी धारणाओं के संबंध में था। जैसा कि "स्कूल ऑफ अल्जीयर्स" द्वारा निरन्तर अभ्यास किए जाते रहे। जो अल्जीरिया के उस विश्वविद्यालय में संचालित होता था जहां औपनिवेशिक अभिजात वर्ग को प्रशिक्षित किया जाता था। इसलिए एक नए राज्य को अपने स्वयं के उद्देश्यों के अनुसार ज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर सुधार करना था। ताकि फिर से सामाजिक पुर्ननिर्माण किया जा सके। सबसे पहला लक्ष्य तो एक राष्ट्रीय पहचान को पुनः प्राप्त करने का रखा गया जो लंबे समय से उपेक्षित था। वहीं आर्थिक के साथ–साथ सामाजिक विकास को बढ़ावा देने की जरुरत थी। इसलिए मनुष्य और समाज के विज्ञान के रुप में अल्जीरियाई समाजशास्त्र का दायित्व दो प्रतिमानों के ढांचे के भीतर खुद को पुनर्गठित कर के इन दोनों अनिवार्यताओं का जवाब देना था :

पहला, पहचान के उद्देश्यों के लिए, इतिहास लेखन (बल्कि राष्ट्रीय इतिहास) का प्रभुत्व था और इसमें दर्शन, धर्मशास्त्र (इस्लामी विज्ञान), फिक (इस्लामिक न्यायशास्त्र), अरबी भाषा के अध्ययन या यहां तक कि व्यक्तित्व और शिक्षा से जुड़े मनोविज्ञान जैसे विषय शामिल थे।

दूसरा, विकासवाद द्वारा समर्थित उन विषयों को जो सामाजिक–आर्थिक प्रचार और आधुनिकीकरण की सेवा कर सकते थे से आकारित था, जिसमें समाजशास्त्री का भी उसी रूप में आह्वान किया गया जैसे एक भूगोलवेत्ता या भाषाविद (अनुवादक) के साथ साथ नैदानिक अथवा कार्य मनोवैज्ञानिक एवं सकारात्मक कानून में विशेषज्ञ का।

इस समग्र संदर्भ में समाजशास्त्र अन्य सभी उद्धृत विषयों की तरह कार्यान्वयन में अपनी स्वयं की ज्ञानमीमांसाओं, अनिवार्यताओं और संस्थागत तथा वैचारिक बाध्यताओं के स्थायी दबाव में बिखरा हुआ है। इस दृष्टिकोण से बातचीत और छल स्थायी प्रलोभन वाले अभ्यास हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि नृविज्ञान, जिसे कुछ दशक पहले तक अपेक्षाकृत हाशिए पर रखा गया था, अब विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में पुनःसंयोजित किया जा रहा है। कभी–कभी सामाजिक–नृविज्ञान के ढांचे के भीतर उसका समाजशास्त्र के साथ विलय कर दिया जाता है। ■

सभी पत्राचार हसन रेमाउन को
<hassan.remaoun@gmail.com> पर प्रेषित करें।

> ट्यूनीशियाई समाजशास्त्र :
एक तिगुने संकट का सामना करते हुए

मुनीर सैदानी, ट्यूनिस अल मनार विश्वविद्यालय, ट्यूनीशिया, अरब दुनिया के लिए वैश्विक संवाद के क्षेत्रीय संपादक, और आईएसए कार्यकारी समिति के सदस्य (2018–22) द्वारा

द Centre d'études et de recherches économiques et sociales (CERES) प्रथम तुनिशिआई सामाजिक शोध केंद्र था जिसकी स्थापना 1962 में हुई थी। 1964 से यह Revue tunisienne de Sciences sociales (तुनिशिआई सामाजिक शोध पत्रिका) प्रकाशित कर रहा है।

पिछले कुछ दशकों में, ट्यूनीशिया का सकारात्मक रूप से बदलते समाज के रूप में व्यापक रूप से विश्लेषण किया गया है। हालांकि, 2010–2011 की ट्यूनीशियाई क्रांति के दस साल से अधिक नहीं के बाद, विफलता और संकट की कहानियां विकसित करते हुए विश्लेषक कम आशावादी हैं। पिछले एक साल में, स्वास्थ्य संकट एक सामाजिक संकट बन गया है, जिसने लगभग एक चौथाई आबादी को गरीबी में धकेल दिया है। जिस संकट का सामना ट्यूनीशिया कर रहा है, वह तीन गुना है: यह एक ही समय में आर्थिक, राजनीतिक और स्वच्छता सम्बन्धी है।

इसके बाद मैं जिस प्रश्न का उत्तर देना चाहता हूं वह यह है: ट्यूनीशियाई समाजशास्त्रियों ने ट्यूनीशिया को हिला देने वाले इस तिगुने संकट से कैसे निपटा है?

मैं ट्यूनीशियाई समाजशास्त्रियों के संरचनात्मक परिदृश्य को चित्रित करके प्रारम्भ करूंगा, फिर ट्यूनीशियाई समाजशास्त्र में प्रचलित प्रतिमान का मूल्यांकन करूंगा, और अंत में, सार्वजनिक बहस में समाजशास्त्रियों की भागीदारी का मूल्यांकन करूंगा। निष्कर्ष में, मैं संकट से परे देखने का प्रयास करूँगा।

> एक कमजोर रूप से संगठित वैज्ञानिक समुदाय

एसोसिएशन इंटरनेशनेल डेस सोशियोलॉग्स डी लैंग्यू फ्रैन्काइज (AISLF) की XXI कांग्रेस जो 2021 में आयोजित हुई, वह ट्यूनीशिया में आयोजित होने वाली दूसरी थी। एसोसिएशन में सदस्यता के इस इतिहास के बावजूद, ट्यूनीशियाई समाजशास्त्र के लिए दर्शकों को बढ़ावा देने के अवसर को सफलतापूर्वक पकड़ा नहीं गया। आईएसए वैज्ञानिक बैठकों में ट्यूनीशिया की भागीदारी 1990 के दशक से प्रारम्भ हुई, लेकिन बाद की बैठकों में केवल कुछ ट्यूनीशियाई समाजशास्त्रियों ने पंजीकरण कराया है। ट्यूनीशिया (1985) में स्थापित अरब समाजशास्त्र संघ का कमजोर होना ट्यूनीशियाई समाजशास्त्रियों की कमजोर सामूहिक प्रतिबद्धता का एक और उदाहरण प्रदान करता है। हालाँकि, वे अरब सामाजिक विज्ञान परिषद (ACSS) और ग्लोबल इंस्टीट्यूट फॉर अरेबिक रिन्यूवल (ARIG, 2019 में स्थापित), और इंटरनेशनल नेटवर्क फॉर अरब सोसाइटीज स्टडी (2020 में स्थापित) की लगभग सभी गतिविधियों में भाग लेते हैं। कुछ अन्य प्रसिद्ध ट्यूनीशियाई समाजशास्त्री पड़ोसी देशों में सामाजिक गतिविधियों–जैसे वेबिनार, संगोष्ठियां, और व्याख्यानों –में भी भाग लेते हैं ।

अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भाग लेने में, ट्यूनीशियाई समाजशास्त्री नेटवर्किंग, संवाद और मान्यता की तलाश में रहते हैं। फिर भी, सभी प्रतिभागी केवल एक व्यक्तिगत प्रतिबद्धता व्यक्त करते हैं। इस वैयक्तिकता के पीछे कई कारणों में से एक ट्यूनीशियाई समाजशास्त्र समुदाय के लिए किसी भी सहयोगी संरचना की अनुपस्थिति है। ट्यूनीशियाई समाजशास्त्रीय संघ (1988 में स्थापित)) ने पिछले चार वर्षों में शायद ही कोई गतिविधि आयोजित की है। *अल मुकादिमा* पत्रिका का तीसरा और आखिरी अंक 2010 का है। इसकी त्रैवार्षिक कांग्रेस के आयोजन की समय सीमा कई महीने पहले समाप्त हो गई थी। ट्यूनीशियाई समाजशास्त्रियों की नई पीढ़ी के भीतर पुरानी पीढ़ी द्वारा बहिष्कार की भावना व्याप्त है, जिसका वे प्रति–बहिष्करण द्वारा प्रत्युत्तर देते हैं। अरब सेंटर फॉर रिसर्च एंड पॉलिसी स्टडीज, ट्यूनिस जैसे आर्थिक और संगठनात्मक रूप से ज्यादा मजबूत वैज्ञानिक संस्थानों के साथ सहयोग किए बिना सामाजिक विज्ञान गतिविधियों को आयोजित करना लगभग असंभव है।

इस तरह के कमजोर संरचित नेटवर्क के साथ, ''वैज्ञानिक समुदाय'' के लिए समाजशास्त्र के प्रदर्शन के लिए दैनिक बदलते सन्दर्भों का सामना करना बहुत

>>

कठिन है। फिर भी, मेरा तर्क है कि ट्यूनीशियाई समाजशास्त्री भी सामाजिक परिवर्तन से निपटने में अधिक महत्वपूर्ण अक्षमता व्यक्त कर रहे हैं। इस अक्षमता का उस प्रतिमान से कुछ लेना–देना है जो अब तक प्रचलित है।

> एक प्रतिमान जो सामाजिक परिवर्तन को नकारता है

अन्य पड़ोसी उत्तरी अफ्रीकी देशों की तरह, आधुनिक ट्यूनीशियाई समाज–शास्त्रीय शिक्षण/अनुसंधान गतिविधियाँ औपनिवेशिक विरासत पर स्थापित हुई थीं। उत्तर औपनिवेशिक – आवश्यक रूप से वि–औपनिवेशिक नही–समाजशास्त्र को एक ऐसी दृष्टि विरासत में मिली है जो सामाजिक परिवर्तन को ऊपर–से–गठन करने वाले राज्य के लेंस से देखती है। केंद्रीय राष्ट्र–राज्य–समाज संबंध ढांचे के साथ, विकासवादी–आधुनिकीकरण समाजशास्त्र कुछ हद तक अदूरदर्शी था। निकटदर्शी होने के कारण, सामाजिक परिवर्तन की इसकी अवधारणा ने समाज को तीन संस्थाओं के बीच ''rapport de force'' के विन्यास के निर्माण (re/de) में केवल एक छोटी भूमिका प्रदान की। सत्तावादी राज्य –सामाजिक रूप से स्थिर और बाधित नहीं –को *एक* ऐतिहासिक परिवर्तन कर्ता के रूप में विशेषाधिकार प्राप्त था। ट्यूनीशियाई राष्ट्र को केवल काल्पनिक और ''आविष्कारी'' के रूप में देखा गया था और अपनी ऐतिहासिकता को नियंत्रित करने की इसकी क्षमता को अस्वीकृत किया गया। इस प्रकार, जब 2010–2011 की लोकप्रिय ट्यूनीशियाई क्रांति हुई, तो यह सामाजिक परिवर्तन के विश्लेषण के लिए तत्कालीन प्रचलित मॉडल के अनुकूल नहीं थी।

2010–2011 की क्रांति के ऐतिहासिक मोड़ ने क्या हो रहा था को समझने के लिए एक नए समाजशास्त्रीय प्रतिमान की आवश्यकता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया। मौजूदा लेंस ने ''राज्य पर सामाजिक बदला'' को देखने, समझने, अवधारणा और मॉडल बनाने को मुश्किल कर दिया था।

इस बीच, स्वच्छता–सामाजिक संकट ने सैद्धांतिक–प्रतिमानात्मक स्तर पर किसी भी समाजशास्त्रीय कार्य को और जटिल बना दिया। 1960 के दशक के उत्तरार्ध से इस क्षेत्र में कार्य कर रहे एक ट्यूनीशियाई समाजशास्त्री ने कोविड–19 का एक ''fait social total'' (मॉस के शब्दों के अनुसार एक पूर्ण सामाजिक तथ्य) के रूप में मूल्यांकन किया । यह उस नए लेंस का अत्यधिक अभिव्यंजक चित्रण था जिसके साथ सामाजिक परिवर्तन को देखा जाना है। लेकिन केवल कुछ चर्चाओं का उद्देश्य सामाजिक शोध करने में वस्तुनिष्ठता/व्यक्तिपरकता, अंदर/बाहर, स्थानीय/वैश्विक, ऐतिहासिक/संरचनात्मक मुद्दों पर पुनः (बहस) करना है। पुराने प्रचलित विचारों से दूर होने के लिए अभी भी बहुत लंबा रास्ता तय करना है। नीचे से आने वाली सामाजिक आवाजें अभी तक समाजशास्त्रियों को अपनी स्थिति और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करने के लिए बाध्य करने में कामयाब नहीं हुई हैं।

एक नए प्रतिमान में बदलाव एक साहसिक कदम है और यह अभी शुरू ही हुआ है। यह तब तक सफल नहीं होगा जब तक सामाजिक ज्ञान का व्यापक प्रसार नहीं होगा।

> एक गैर–सार्वजनिक समाजशास्त्र

कठिनाई से निर्मित होने वाले ट्यूनीशियाई समाजशास्त्रीय क्षेत्र के साथ–साथ वैज्ञानिक समुदाय की दो पिछली विशेषताओं के परिणामों में से एक यह है कि समाजशास्त्रीय ज्ञान अभिजात्य बना रहता है। इसका पहला कारण स्पष्ट रूप से तानाशाही के लंबे इतिहास में निहित है जिसके तहत ट्यूनीशियाई विश्वविद्यालयों को समाज से अलग कर दिया गया था और सामाजिक विद्वानों को सामाजिक बहस से बाहर रखा गया था। सार्वजनिक बहस में भागीदारी की कमी की विरासत ट्यूनीशिया में समाजशास्त्रियों के सामने सबसे अधिक चिंताजनक मुद्दों में से एक साबित हुई है।

ट्यूनीशिया में उत्पादित सामाजिक ज्ञान की विशिष्ट विशेषताओं के सम्बन्ध में, यह ध्यान देने योग्य है कि भाषा का मुद्दा महत्वपूर्ण है। एक ओर, ट्यूनीशिया में समाजशास्त्र, सत्तर के दशक की प्रारंभिक अरबीकरण नीति के बावजूद, अभी भी, कम से कम आंशिक रूप से, फ्रेंच में पढ़ाया जाता है। जब छात्रों को मुख्य वैचारिक उपकरण प्रस्तुत किए जाते हैं, तो आमतौर पर उनके मूलध्रेंच में अनुवादित के ''समकक्ष'' होते हैं। जहाँ अंग्रेजी मुख्य रूप से काफी गायब है, समाजशास्त्रीय शोध का एक महत्व–पूर्ण हिस्सा फ्रेंच में ''विदेशी'' भाषा के रूप में दिया जाता है। दूसरी ओर, और अर्ध–पूर्ण अरबीकरण की स्थिति में, समाजशास्त्रीय ज्ञान और निष्कर्षों को लोकप्रिय बनाना मुश्किल है। इस प्रकार, हम यह तर्क दे सकते हैं कि, इसके वैज्ञानिक शब्दजाल में तैयार किया गए समाजशास्त्रीय प्रवचन शायद ही विस्तार योग्य हो पाते हैं। यह विशेष रूप से तब सच होता है जब अन्य, अधिक जमीनी, सामाजिक प्रवचनों को चुनौती देने की बात आती है। अजेय सामाजिक परिवर्तन और बेकाबू ''*prise de parole*'' (फ्रांसीसी समाजशास्त्री डी सर्ट्यू से लिया ''टेकिंग द फ्लोर'') की पीड़ा में जकड़ी देश में सभी सामाजिक बहसों का अति–राजनीतिकरण विभिन्न प्रकार के सामाजिक विमर्शों को समान और विनिमेय योग्य करार देती हैं।

ऐसी स्थितियों में, वैज्ञानिक आवाजों को अलग करना और सुनना कठिन है। इस प्रकार, ट्यूनीशियाई समाजशास्त्रियों के लिए पूरी तरह से संगठित सार्वजनिक बहस और तर्कसंगत रूप से कार्य करने वाले सार्वजनिक क्षेत्र में ''तर्कसंगत विशेषज्ञ'' दृष्टिकोण के रूप में संदर्भित होने का वैध दावा करना कठिन है।

> निष्कर्ष

इस लेख में लिया गया प्रदर्शन लेंस दिखाता है कि कैसे, अपने पूरे इतिहास में, ट्यूनीशियाई समाजशास्त्र को अपने अस्तित्व को साबित करने के लिए चुनौती दी गई है। यह आलेख पिछले दशक की विशिष्ट चुनौतियों के बारे में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है। ट्यूनीशिया में वर्तमान तिगुना संकट ट्यूनीशियाई समाजशास्त्र के लिए एक और महत्वपूर्ण मोड़ है, और वह जिससे यह सफलतापूर्वक निपटने के लिए अच्छी तरह से सशस्त्र नहीं लगता है।

इस आलेख का उद्देश्य भविष्य पर गहन चर्चा को चेतन करना है। इस चर्चा को प्रज्वलित करने का एक तरीका ट्यूनीशियाई समाजशास्त्रियों की विभिन्न पीढ़ियों, उनकी व्यक्तिगत कैरियर की जरूरतों और सामूहिक कार्रवाई के बीच की खाई को पाटना है। उनकी नेटवर्किंग क्षमताओं को बढ़ाने का काम स्थानीय, क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक साथ किया जाना चाहिए। हमारी वैश्वीकृत दुनिया में, इस तरह के एक अच्छी तरह से सशस्त्र ट्यूनीशियाई समाजशास्त्र बहस और अंतरराष्ट्रीय सामाजिक ज्ञान की उन्नति में एक मूल्यवान योगदान दे सकता है। ■

सभी पत्राचार को मुनीर सैदानी को
<mounir.saidani@issht.utm.tn> पर प्रेषित करें।

> कोविड प्रत्युत्तर में असमानताओं को संबोधित करना

विल्मा एस. नचिटो, जाम्बिया विश्वविद्यालय, जाम्बिया द्वारा

कसम्बा विद्यालय और 58 अन्य विद्यालयों में स्थापित जंबो हैंड वाशिंग स्टेशन।
श्रेयः लुसाका जल सुरक्षा पहल (LuWSI)।

जब अप्रैल 2020 के प्रारम्भ में जाम्बिया में कोविड–19 के पहले मामले की घोषणा की गई थी, तो सोशल मीडिया पर टिप्पणियों की झड़ी ने इस तथ्य की ओर इशारा किया कि कई लोगों के अनुसार यह बीमारी समाज के केवल कुछ क्षेत्रों को प्रभावित करती है, अन्य को नहीं। यह तथ्य कि कोई व्यक्ति यूरोप में छुट्टी मनाकर तभी लौटा था, ने इस धारणा को हवा दी कि अधिक समृद्ध लोग इस नई बीमारी के प्रति संवेदनशील थे, जबकि आम जनता के पास कुछ स्तर की प्रतिरक्षा थी। जैसे–जैसे पहली लहर आगे बढ़ी यह स्पष्ट था कि वास्तव में सबसे अधिक प्रभावित अधिक संपन्न समुदायों से थे। इससे सार्वजनिक स्वास्थ्य संदेशों के लिए अनियोजित बस्तियों और ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवेश करना मुश्किल हो गया क्योंकि एक सवाल हमेशा पूछा जाता कि ''क्या आपने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को देखा है जो कोविड–19 से मरा हो?'' ठोस सबूत के बिना महामारी कई लोगों के लिए एक धोखा बनी रही। अन्य ने विरोध किया कि यह सरकार के लिए दान प्राप्त करने का एक तरीका था।

> दूसरी लहर

दूसरी लहर बहुत अलग नहीं थी और षड़यंत्र के सिद्धांत भड़कते रहे। पूरे समय कम आय वाले समुदायों में आम जनता ने सार्वजनिक स्वास्थ्य चेतावनियों पर बहुत कम ध्यान दिया। मास्क पहनना अनावश्यक माना जाता था और शहर के कुछ क्षेत्रों में मास्क पहनने वालों को वायरस फैलाने वाला माना जाता था। यह स्पष्ट रूप से दो शहरों की कहानी का मामला था, क्योंकि एक हिस्से ने मास्क पहना था जबकि दूसरे ने नहीं। जहाँ राष्ट्रीय स्तर पर कोविड प्रत्युत्तर और कार्यवाहियां चल रही थीं, यह देखना कठिन था कि अनियोजित बस्तियों में जमीनी स्तर पर क्या हो रहा था। इन घनी आबादी वाले क्षेत्रों को महामारी की अगली लहरों के लिए तैयार करने के लिए क्या किया जा रहा था? यह पर ही लुसाका जल सुरक्षा पहल (LuWSI) आती है। LuWSI एक बहु–हितधारक सहयोगी प्रणाली है जिसमें सार्वजनिक और निजी क्षेत्र, नागरिक समाज, समुदाय–आधारित संगठन (CBOs), और स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय गैर–सरकारी संगठन शामिल हैं। LuWSI का उद्देश्य ''सभी के लिए जल सुरक्षा और एक स्वस्थ और समृद्ध शहर का समर्थन करना'' प्राप्त करना है। जर्मन कॉरपोरेशन फॉर इंटरनेशनल कोऑपरेशन (GIZ) के समर्थन से 2016 में शुरू किया गया नेचुरल रिसोर्सेज स्टीवर्डशिप (NaturRes) प्रोग्राम 30 भागीदारों की सदस्यता तक बढ़ गया है। साझेदारों के अपने जनादेश हैं लेकिन वे शहर में जल सुरक्षा को बेहतर बनाने के लिए मिलकर काम करने का प्रयास करते हैं।

> कोविड के लिए जमीनी स्तर की प्रतिक्रिया

2020 के मध्य में जब देश में कोविड के मामले बढ़ने लगे, तो LuWSI के भागीदारों ने, यह देखते हुए कि कोविड को पानी के अधिक उपयोग और साबुन और सैनिटाइजर की अतिरिक्त खरीद की आवश्यकता है, उन तरीकों पर विचार करना शुरू कर दिया, जिनसे वे कम आय वाले समुदायों में बेहतर स्वच्छता प्रथाओं में योगदान दे सकते हैं। कम आय वाले समुदाय पहले से ही दिन–प्रतिदिन की आजीविका के संघर्ष से जूझ रहे थे और कोविड–19 घरेलू स्तर पर अब एक और व्यय को प्रस्तुत कर रहा था। प्रत्युत्तर में, विभिन्न साझेदार विभिन्न हस्तक्षेपों के साथ आए और, तुलनात्मक रूप से

> >

हाथ धोने को प्रोत्साहित करने के लिए विद्यालयों को दान दिए गए जल टैंक। श्रेयः LuWSI

जाम्बिया में मृत्यु दर कम होने के बावजूद, उन्होंने अपने प्रयासों को जारी रखा और वंचित समुदायों को सहायता प्रदान करने के भिन्न तरीकों को तैयार किया। इसका परिणाम लुसाका शहर के भीतर किए गए कई हस्तक्षेप हैं। बाजारों की सफाई और कीटाणु–शोधन, वॉश बेसिन और साबुन का प्रावधान, "हस्त–मुक्त" हाथ धोने के स्थल, और कोविड के बारे में जागरूकता बढ़ाने जैसी गतिविधियाँ कुछ प्रारंभिक पहलें थीं।

यह समझ कि कम आय वाले समुदायों में स्कूली बच्चों को वायरस के संभावित वाहक होने के बावजूद मैसेजिंग और हस्तक्षेप से बाहर रखा जा रहा है, ग्रीन स्कूल पार्टनरशिप प्रोग्राम के तहत लुसाका सिटी काउंसिल द्वारा ''सेफ बैक टू स्कूल कैंपेन'' (SB2S) की शुरुआत की गई। यह अभियान शहर के 100 से अधिक स्कूलों को आउटरीच और सहायता प्रदान करता है। प्रमुख भागीदार वाटरएड, लुसाका नगर परिषद, शिक्षा मंत्रालय और स्वास्थ्य मंत्रालय हैं। SB2S अभियान में समुदाय के सदस्यों को घर–पर देखभाल में प्रशिक्षित करना, स्कूलों में कोविड–19 प्रत्युत्तर में सुधार लाना, और स्वच्छता को बढ़ावा देना शामिल है। इस अभियान के तहत, स्कूलों को क्रॉस संक्रमण की संभावनाओं को सीमित करने के लिए कई ''हैंड–फ्री'' हैंडवाशिंग स्टेशनों से लैस किया जा रहा है क्योंकि स्कूली बच्चे हाथ धोते हैं। पानी की कमी को दूर करने के लिए स्कूलों में पानी की बड़ी टंकियां भी लगाई गई थीं।

LuWSI द्वारा किया गया एक अन्य हस्तक्षेप वार्ड स्तर पर कोविड–19 प्रतिक्रिया योजनाओं का विकास था। वार्ड विकास समितियों (डब्ल्यूडीसी) को संचार कौशल में प्रशिक्षित किया गया ताकि वे अपने इलाके में अपनी कोविड की कहानियों को बता सकें। लूडब्ल्यूएसआई के तहत चल रहे एक अन्य हस्तक्षेप के रूप में, डब्ल्यूडीसी के प्रशिक्षण के बाद, जमीनी स्तर के समुदायों को पीपीई (व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण) सामग्री प्रदान की गई। इस पहल के तहत कोविड–19 प्रतिक्रिया योजनाओं के विकास में भाग लेने वाले WDCs को दस्ताने, सफाई एजेंट, सैनिटाइजर, साबुन, क्लोरीन, व्हीली डिब्बे, झाड़ू और पानी के टैंक जैसी चीजें दी जा रही हैं।

> सफलता के लिए छोटे कदम

इस आलेख में उल्लिखित हस्तक्षेप सीमित और छोटे पैमाने के दिखाई दे सकते हैं। लेकिन जब यह प्रश्न किया जाता है कि क्या होता अगर LuWSI सहयोगी मंच ने इन निम्न–आय वाले स्कूलों और समुदायों में हस्तक्षेप नहीं किया होता, तो सबसे अधिक उत्तर की संभावना ''कुछ नहीं'' की है। यह सही है कि केंद्र सरकार ने उन दिशानिर्देशों पर शिक्षित करने का प्रयास किया है जिनका पालन कोविड के तहत किया जाना चाहिए। सरकार ने स्कूलों और व्यावसायिक परिसरों को यह सुनिश्चित करने के लिए निर्देश भी जारी किए हैं कि वे पर्याप्त स्वच्छता या हाथ धोने की सुविधा की आपूर्ति करें, लेकिन अधिकांश स्कूल सेवा समुदाय महामारी द्वारा लाई गई इन अतिरिक्त आवश्यकताओं के लिए भुगतान नहीं कर सकते हैं। इस मामले में LuWSI कम आय वाले समुदायों में बहुत आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए मंच पर विभिन्न भागीदारों से संसाधनों को समेकित करने में सक्षम रहा है। सहयोगी मंच ने दिखाया है कि अन्य हितधारक कोविड –19 के खिलाफ लड़ाई में केंद्र सरकारों की सफलतापूर्वक सहायता कर सकते हैं। ■

सभी पत्राचार विल्मा एस. नचिटो को <wsnchito@yahoo.com> पर प्रेषित करें।

> कुह्न के दर्शन के भीतर
इब्न खलदुन का प्रतिमान

महमूद धौदी, ट्यूनिस विश्वविद्यालय, ट्यूनीशिया और समाजशास्त्र का इतिहास (आरसी 08), धर्म (आरसी 22), और भाषा और समाज के समाजशास्त्र (आरसी 25) पर आईएसए की शोध समितियों के सदस्य द्वारा

तुनिशिया में इब्न खल्दून की मूर्ति।
श्रेय : एम धिफल्लाह / क्रिएटिव कॉमन्स।

यह आलेख इब्न खलदुन की खोज और उनके नए विज्ञान की खोज पर केंद्रित है जिसे अरबी में *'इल्मु अल उमरान अल बशारी'* (*Ilmu al Umran al bashari*) कहा जाता है, अर्थात "मानव सभ्यता और सामाजिक संगठन का विज्ञान" जो उनकी प्रसिद्ध पुस्तक *द मुकद्दिमाह* में है। यहां मैं आधुनिक दर्शन के विज्ञान के परिप्रेक्ष्य और कुह्न के प्रतिमान, सामान्य विज्ञान और क्रांतिकारी विज्ञान की अवधारणाओं का उपयोग उस प्रक्रिया पर प्रकाश डालने के लिए करता हूं जिसने इब्न खल्दुन (1332–1406) को अपने *नए सामाजिक विज्ञान प्रतिमान* की खोज करने के लिए प्रेरित किया ।

मुकद्दिमाह के लेखक की क्रांतिकारी वैज्ञानिक भावना को पकड़ने के लिए विज्ञान के आधुनिक दर्शन के साहित्य से परिचित होना बेहद प्रासंगिक है। मैं कुह्न की अवधारणाओं को यह समझने के लिए रेखांकित करता हूं जिसे वे सामान्य विज्ञान से क्रांतिकारी विज्ञान में बदलाव कहते हैं और इब्न खल्दुन के सामाजिक विचार का मूल्यांकन करने के लिए भी ।

> प्रतिमान की अवधारणा

सामान्य भाषा में "प्रतिमान" शब्द एक विशिष्ट उदाहरण या मॉडल जिसे दोहराया जाये या जिसका अनुसरण किया जाये को नामित करता है। सामान्य समय में, प्रासंगिक वैज्ञानिक समुदाय में सैद्धांतिक और पद्धतिगत नियमों का पालन करने, उपयोग किए जाने वाले उपकरणों, जांच की जाने वाली समस्याओं और अनुसंधान के मानकों के बारे में एक आम सहमति होती है, जैसा कि कुह्न *द स्ट्रक्चर ऑफ साइंटिफिक रेवोलुशन्स* में लिखते हैं। वैज्ञानिक समुदाय द्वारा कुछ पिछली वैज्ञानिक उपलब्धियों को अपने *मॉडल* या *प्रतिमान* के रूप में अपनाने से यह सर्वसम्मति प्राप्त होती है । जैसा कि नीचे बताया गया है, "प्रतिमान" की इस अवधारणा ने विज्ञान के दर्शन के बारे में सोच में क्रांति ला दी।

> सामान्य और क्रांतिकारी विज्ञान

कुह्न ने अपनी पुस्तक में दो प्रकार के विज्ञान का उल्लेख किया है: *सामान्य* विज्ञान और *क्रांतिकारी* विज्ञान। सामान्य विज्ञान को कुह्न एक ऐसा विज्ञान मानते हैं जहां वैज्ञानिक अपने क्षेत्रों में सामान्य ज्ञान, अवधारणाओं, सिद्धांतों, नियमों को साझा करते हैं। इनसे विचलन उन्हें विज्ञान के क्षेत्र से बहिष्कृत कर देगा। वैसे भी, सामान्य विज्ञान इस धारणा पर आधारित है कि वैज्ञानिक समुदाय जानता है कि दुनिया कैसी है। सामान्य विज्ञान पिछली वैज्ञानिक उपलब्धियों को इसके आगे के अभ्यास के लिए वैध आधार के रूप में देखता है। इस उद्देश्य के लिए, सामान्य विज्ञान अक्सर मौलिक नवीनताओं को दबा देता है क्योंकि वे अनिवार्य रूप से इसकी मूल प्रतिबद्धताओं के विध्वंसक होते हैं। इस प्रकार, जैसा कि कुह्न बताते हैं, सामान्य विज्ञान वैज्ञानिक उपलब्धियों की *संचयी प्रक्रिया* के माध्यम से प्रगति और उन्नति प्राप्त कर सकता है ।

हालाँकि, कुह्न बताते हैं कि एक वैज्ञानिक क्रांति एक *गैर–संचयी* विकासात्मक प्रकरण है जिसमें एक पुराने प्रतिमान को पूरी तरह से या आंशिक रूप से एक असंगत नए द्वारा प्रतिस्थापित किया

> >

किया जाता है। कुह्न के विचार में, एक वैज्ञानिक क्रांति जिसके परिणामस्वरूप *प्रतिमान परिवर्तन* होता है, एक राजनीतिक क्रांति के समरूप होता है। उत्तरार्द्ध समुदाय के सदस्यों द्वारा बढ़ती भावना के साथ शुरू होता है कि मौजूदा संस्थानों ने एक ऐसे वातावरण से उत्पन्न समस्याओं को पर्याप्त रूप से पूरा करना बंद कर दिया है जिसे उन्होंने आंशिक रूप से बनाया है: *विसंगति* और *संकट*। संकट में एक प्रतिमान से एक नए प्रतिमान में संक्रमण, जिससे सामान्य विज्ञान की एक नई परंपरा उभर सकती है, एक संचयी प्रक्रिया नहीं है।

> अरब मुस्लिम इतिहास लेखन का संकट

कुह्न के दृष्टिकोण को इब्न खलदुन की वैज्ञानिक विद्वता पर लागू किया जा सकता है। खलदुन के वैज्ञानिक मार्ग में पहला कदम मुस्लिम इतिहासकारों पर *उनकी मजबूत आलोचनात्मक स्थिति* में दिखाई देता है। वे स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि मुस्लिम इतिहासलेखन *पूर्ण संकट* में था। उनकी अपनी शर्तें, जैसा कि नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है, उन इतिहासकारों के बीच वैज्ञानिक विश्वसनीयता की कमी के प्रति उनके रवैये के बारे में बहुत जोर से बोलती हैं। इतिहास का विषय या जिसे इब्न खलदून *''इतिहास की कला''* कहते हैं , मुस्लिम दुनिया में उनके समय में और उसके पहले के समय में और एक अच्छी स्थिति में प्रतीत नहीं होता था। कुह्न के शब्दों में, मुस्लिम इतिहासलेखन संकट में था और इसे एक *नए क्रांतिकारी प्रतिमान* के रूप में एक समाधान की आवश्यकता थी, जिसे पहले मुस्लिम इतिहासकारों की संचयी बौद्धिक विरासत से विलग के रूप में परिभाषित किया गया था। *मुकद्दिमाह* के लेखक ने विभिन्न कालों के मुस्लिम इतिहासकारों की आलोचना की। यह एकमात्र उद्धरण मुस्लिम इतिहासलेखन की स्थिति के बारे में इब्न खलदुन के दृष्टिकोण का वर्णन करता है:

"उत्कृष्ट मुस्लिम इतिहासकारों ने ऐतिहासिक घटनाओं का विस्तृत संग्रह बनाया और उन्हें पुस्तक के रूप में लिखा। लेकिन, फिर, जिन लोगों को इतिहास के साथ खुद को संलग्न करने का कोई अधिकार नहीं था, उन्होंने पुस्तकों में असत्य गप पेश की, जिसे या तो उन्होंने बनाया था या स्वतंत्र रूप से आविष्कार किया था, इसके साथ ही झूठी, बदनाम रिपोर्टें जो उन्होंने बनाई या अलंकृत की थीं। उनके कई उत्तराधिकारियों ने उनके कदमों का अनुसरण किया और उस जानकारी को हम तक पहुँचाया जैसी उन्होंने सुनी थी। उन्होंने घटनाओं और परिस्थितियों के कारणों की तलाश नहीं की, ना ही उन पर कोई ध्यान नहीं दिया, न ही उन्होंने निरर्थक कहानियों को हटाया या खारिज किया। *सच्चाई तक पहुंचने के लिए बहुत कम प्रयास किए जा रहे हैं* । [...] परंपरा में *अंध विश्वास* मनुष्य को विरासत में मिला एक गुण है।[1]

> इब्न खलदुन का क्रांतिकारी नया विज्ञान

इब्न खल्दुन की अपने नए विज्ञान की खोज कुह्न के क्रांतिकारी विज्ञान के प्रतिमान से मेल खाती है। इब्न खलदुन कहते हैं कि उनका विज्ञान *संचयी प्रक्रिया का परिणाम नहीं* है । इस तरह, कुह्न के शब्दों में, यह वास्तव में एक क्रांतिकारी विज्ञान है। मुकद्दिमाह के लेखक ने स्वीकार किया कि उनके नए विज्ञान के विषय में किसी ने भी नहीं लिखा है: ''असल में, मैंने किसी के द्वारा इस परिपेक्ष्य पर विमर्श को नहीं देखा है।'' इब्न खलदुन ने कई विचारकों और पुस्तकों जैसे अरस्तू की *पॉलिटिक्स* और मोबेथन[2] के काम और मुस्लिम विचारकों की पुस्तकें का उल्लेख किया है। वे पुष्टि करते हैं कि उनका नया विज्ञान उन पुस्तकों के विचार से प्रेरित नहीं है: ''हम अरस्तू के निर्देश या मोबेथन की शिक्षा के बिना भगवान की मदद से इन चीजों से अवगत हुए।'' इब्न खल्दुन अपने नए विज्ञान की कुछ विशेषताएं बताते हैं: ''[विषय, एक तरह से एक स्वतंत्र विज्ञान है।] इस विज्ञान, का अपना एक अजीबोगरीब विषय है – यानि कि मानव सभ्यता और सामाजिक संगठन। इस विषय की चर्चा कुछ नई, असाधारण और अत्यधिक उपयोगी है। ''हालाँकि, इब्न खलदुन अपने नए नवप्रवर्तित सामाजिक विज्ञान के विषय–क्षेत्र के बारे में विनम्र रहते हैं : ''यदि [---] मैंने कुछ बिंदु छोड़ दिया है, या यदि [इस] विज्ञान, की समस्याओं को किसी और चीज से भ्रमित कर दिया गया है, तो समझदार आलोचक के लिए सुधारने का कार्य रहता है।''"■

सभी पत्राचार महमूद धौदी को <m.thawad43@gmail.com> पर प्रेषित करें।

1. Khaldun I. (1980 English edition, tr. F. Rosenthal) *The Muqaddimah*, vol. I :6-7.
2. मोबेथन शब्द अरस्तू की पुस्तक *पॉलिटिक्स* के समरूप भारतीय पुस्तक का संदर्भ देता है।

> ब्राजील में सामाजिक कल्पना और कानून का समाजशास्त्र

फ्रांसिस्को बीड, IESP-UERJ, ब्राजील और गेब्रियल एस सेरक्वीरा, यूनिवर्सिदादे फेडरल फ्लूमिनेन्जे, ब्राजील द्वारा

अल्फ्रेडो सेशियाट्टी द्वारा ''ए जस्टिका''। मूर्ति ब्राजील के सुप्रीम फेडरल कोर्ट की इमारत के सामने स्थित है। क्रेडिट: रिकार्डो / क्रिएटिवकॉमन्स।

समकालीन ब्राजील में कानून के काम करने के तरीके को समझने के लिए काल्पनिक की अवधारणा तेजी से केंद्रीय होती जा रही है। ब्राजील के कानून की सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक गतिशीलता और राष्ट्रीय राजनीति के अन्य पहलुओं (कानून के समाजशास्त्र का उद्देश्य) के बीच बातचीत कैसे आधुनिक जीवन के लिए केंद्रीय मूल्यों और आकांक्षाओं के ठोसकरण को प्रभावित करती है का विश्लेषण करने के लिए यह एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जैसेः (1) एक लोकतांत्रिक राजनीतिक जीवन, एक कुलीन शासन के बजाय अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से नागरिकों की सक्रिय भागीदारी के अधीन; (2) आर्थिक रूप से स्वायत्त और कुशल राष्ट्रीय विकास; (3) व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर आधारित सामाजिक जीवन, जिसमें राज्य का प्रभावी कामकाज उसके नागरिकों के मौलिक अधिकारों की सीमा के भीतर होता है।

यहाँ, काल्पनिक को विषय के अभ्यावेदन और प्रथाओं में शामिल विश्वदृष्टि के रूप में समझा जाना चाहिए, जहाँ तक इन्हें सामूहिक गतिशीलता और संस्थानों के कामकाज के लिए एक सामान्य संदर्भ के रूप में जुटाया जाता है, जिसे कॉर्नेलियस कैस्टोरियाडिस ने ''सामाजिक कल्पना'' कहा है। इस अर्थ में, काल्पनिक की अवधारणा विचारधारा की अवधारणा से इतनी दूर नहीं है, जब तक कि विचार–धारा को कोई केवल ''झूठी चेतना'' (यथार्थ के गलत प्रतिनिधित्व के रूप में) के रूप में नहीं समझता है, बल्कि कुछ ऐसा जो हमारे ठोस कार्यवाहियों के लिए अर्थ के निर्देशांक प्रदान करता है। इसके अलावा, हम इस अवधारणा को इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए लामबंद कर रहे हैं कि विश्वदृष्टि हमेशा उन पहलुओं से गहराई से जुड़ी होती है जो तुरंत तार्किक नहीं होते हैं (यानि कि इसे केवल तर्कसंगतता तक कम नहीं किया जा सकता है)। अर्थात, सामाजिक कल्पना, बहुत हद तक, लाइनों के बीच में, निहित भावनाओं और अर्थों का आह्वान करती है।

> आधुनिक कानून का अमूर्त चरित्र

आधुनिक कानून का अमूर्त चरित्र मुख्य कारण है कि कानून के समाजशास्त्र को काल्पनिक की अवधारणा को शामिल करने पर विचार करना चाहिए। आधुनिक कानून नागरिकता की संस्था में निहित है जो प्रत्येक व्यक्ति को समान और स्वतंत्र, एक स्वायत्त विषय और मौलिक अधिकारों के वाहक के रूप में परिभाषित करता है। यह अधिकारों का एक अत्यधिक अमूर्त विषय मानता हैः एक नागरिक को जो परिभाषित करता है वह यह है कि वह स्वतंत्र है और हर दूसरे नागरिक के समान अहरणीय अधिकार रखता है। इसलिए, वास्तविकता के पहलुओं और उस अमूर्त समानता से परे व्यक्तियों के ठोस जीवन को, निजी जीवन के आयाम के हिस्से के रूप में कानून द्वारा त्याग दिया जाता है, न कि अधिकारों की वस्तु के रूप में। इस प्रकार, आधुनिक कानून और आधुनिक कानूनी व्यवस्था का हिस्सा बनने के लिए, इसे इस अमूर्त रूप के आधार पर परिभाषित किया जाना चाहिए (ताकि विशिष्ट अधिकारों और तथाकथित अल्पसंख्यक अधिकारों को भी नागरिकों की मौलिक अभिव्यक्ति के रूप में विस्तारित करने की आवश्यकता हो) स्वतंत्रता और समानता)।

भले ही इस अमूर्त और ''सार्वभौमिक'' कानूनी ढांचे की मानक नींव किसी भी मनमानी और विशिष्ट प्रवर्तन का विरोध करती है (चूंकि आधुनिक कानून अपने न्यायविदों और वकीलों की इच्छा और व्याख्या की अभिव्यक्ति नहीं है), यह वही कानूनी ढांचा अपने ऑपरेटरों को बदलने के लिए मजबूर करता है ठोस मुद्दों के बारे में ठोस निर्णयों में अमूर्त कोड। तो, यहां निर्णायक पहलू यह नहीं है कि कानूनी व्यवस्था राजनीति या विशेष अभिनेताओं के हितों के अधीन है (हालांकि ऐसा होता है), लेकिन यह कि अमूर्त कानून से ठोस निर्णय के मार्ग में काल्पनिक खुद को निर्देशांक प्रदान करके लागू करता है कि अमूर्त कानून पेश नहीं कर सकता।

>>

> सामाजिक काल्पनिक में एंकरिंग कानून

दूसरी ओर, आधुनिक कानून के कानूनी प्रतिमान में (अमूर्त) नागरिक की धारणा का परिचय भी गैर–नागरिकता के स्थान के उत्पादन से चिह्नित है। विरोधाभासी रूप से, निरंकुश संप्रभु अधिकार से लोकप्रिय संप्रभुता की धारणा के लिए संक्रमण, जबकि निरंकुश संप्रभु की राजनीतिक सामग्री को ''नागरिकों'' में पुनर्वितरित करना भी राजनीतिक अधिकार से रहित सामाजिक निकाय का एक हिस्सा छोड़ देता है। यदि इस अंतर को सकारात्मक कानूनी व्यवस्था के भीतर स्पष्ट रूप से समेकित नहीं किया जाता है, तो फिर भी, यह रोजमर्रा के सामाजिक जीवन में मौजूद है। इसके अंतर्विरोध अक्सर कानून के संचालकों पर थोपे जाते हैं।

यह संयोग से नहीं है कि ब्राजील का कानून लोकप्रिय और प्रभावशाली वर्गों की (आईएल) वैधता को अत्यधिक चयनात्मक तरीके से, दिन के उजाले में, बिना किसी बाधा के संभालता है। काल्पनिक आदेश कानून के स्वाभाविक रूप से विरोधाभासी, परस्पर विरोधी और खंडित हिस्से को बदलने के लिए कार्य करता है (आधुनिक अमूर्त कानून और इसके मनमाने और हिंसक महा–अहंकारी उप–स्तर के बीच) जो कानून में, इस व्यवहार को बनाए रखता है और इसे इसकी वैधता देता है। क्या एक न्यायिक निर्णय को अधिकृत और वैध बनाता है कि, ''उनकी जाति के कारण,'' एक व्यक्ति एक आपराधिक समूह से जुड़ा हुआ है? क्या वैध है, भले ही कानूनी प्रवचन की पंक्तियों के बीच, ब्राजीलियाई अिमसें में अक्सर अवैध पुलिस कार्रवाई, काले और गरीब आबादी के खिलाफ? या आकस्मिक निर्णयवाद जो प्रतिदिन अखबारों के पन्ने छापता है? ब्राजील के कानून की जटिलताओं और विरोधाभासों को समझने के लिए एक अंतःविषय सैद्धांतिक–पद्धतिगत जुड़ाव आवश्यक है। इसके लिए न केवल कानून के अधिक पारंपरिक समाजशास्त्र बल्कि दर्शन, मनोविश्लेषण और इतिहास के पाठों के संयोजन की आवश्यकता होगी, जिसके बिना कानून के क्षेत्र में काल्पनिक की धारणा की केंद्रीयता को ठीक से नहीं देखा जा सकता है।

वाल्टर बेंजामिन इसे नोटिस करने वाले और एक व्याख्या विकसित करने वाले पहले लोगों में से एक थे जो कानून और काल्पनिक (विभिन्न अभिव्यक्तियों के तहत) के बीच अंतर्संबंधों की तलाश करते हैं। इस व्याख्या के अनुसार, कानून की संस्था संवैधानिक रूप से अपनी सामाजिक बाहरीता (अमूर्त कानून के इलाके) और कानून की संस्थापक मनमानी की तर्कहीन हिंसा के बीच विभाजित हो जाएगी। यह कानून एक साथ (और समकालिक रूप से) एक ''उचित'' सामग्री और एक मनमाना ''तर्कहीन'' निषेधाज्ञा है। जैसा कि कानून के संवैधानिक क्षण की कथा हमेशा एक पश्चवर्ती रूप से निर्मित होती है, यह विभाजन तत्व कानून की हठधर्मी व्याख्याओं द्वारा पूर्वव्यापी रूप से छिपा हुआ है, जिसे न्यायविद पियरे लेजेंड्रे ''हठधर्मी आदेश'' कहते हैं।

इस तरह, कानून के समाजशास्त्र के लिए जांच का एक द्वार खुलता है, जो आंतरिक सामाजिक कल्पना पर विचार करता है जो आधुनिकता के इस विभाजित कानूनी आदेश के आसपास एक विस्तार (एक विश्वदृष्टि) प्रदान करता है –जिसे हम काल्पनिक एंकरिंग कह सकते हैं। इस पथ के माध्यम से, राष्ट्रीय ऐतिहासिक संरचनाओं द्वारा चिह्नित व्यक्तिपरकता के रूपों का पता लगाया जा सकता है, जो (पुनः) कानूनी प्रशिक्षण की गतिशीलता और कानून के अभ्यास में शामिल सामाजिक संबंधों में उत्पन्न होते हैं, और जो कानून की व्यवस्था में एक आंतरिक व्यवस्था स्थापित करते हैं। ■

सभी पत्राचार फ्रांसिस्को बीड को <franciscojuliaomb@gmail.com> और गेब्रियल एस. सेरक्वीरा <gabrielscerqueira@gmail.com> पर प्रेषित करें।